राम आसरे
परिजन
आपका अपना गुरु भाई

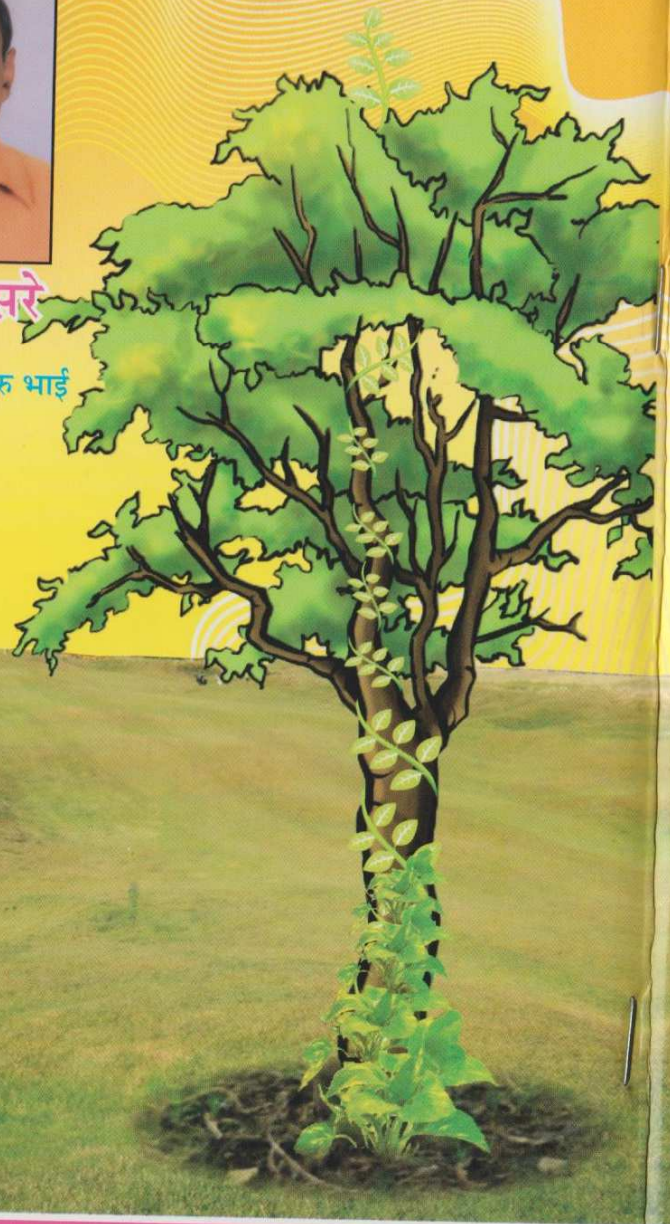

गायत्री परिवार **दूब** की तरह धरती पर बहुत दूर-दूर तक फैला है।
लेकिन **बेल** की तरह व्यक्तित्व एक भी व्यक्ति ऊँचा नहीं कर सका।।

# मिशन का चीर हरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना

## भाग-2

यह पुस्तक आप स्वयं पढ़ें, कम से कम दस अन्य कार्यकर्त्ताओं को पढ़ाएँ, ताकि सत्य की जानकारी जन-जन तक पहुँच सके।

# मिशन का चीर हरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना

## भाग-2

संरक्षक-सत्प्रेरक :

परम पूज्य गंरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

संपादक :

राम आसरे परिजन

यह पुस्तक आप स्वयं पढ़ें। कम से कम दस अन्य कार्यकर्त्ताओं को पढ़ाएँ, ताकि सत्य की जानकारी जन-जन तक पहुँच सके।

''श्रीराम आश्रम''

# मिशन का चीर हरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना

## भाग–2

प्रकाशक :
''श्रीराम आश्रम''
बर्रा–5, कानपुर
मो० : 9369871959

मुद्रक :
अक्षय प्रकाशन
128/1/43, यशोदानगर, कानपुर

संस्करण :
प्रथम, 25 दिसम्बर, 2013
प्रतियाँ : 5000

मूल्य : अमूल्य

## प्रस्तावना

आत्मीय भाईयों/बहिनों,

सादर नमन।

बड़े ही दु:ख के साथ मिशन के वरिष्ठ व कनिष्ठ परिजनों के अन्तर्मन की चीत्कार व वेदना रूपी उद्‌गारों से युक्त पत्रों का संकलन इस पुस्तिका में भारी मन से करना पड़ रहा है क्योंकि प्रणव पण्ड्या भी हमारे ही परिवार के मुखिया: होने के नाते परिजन ही हैं, चूंकि गुरुवर के तप से सिंचित, गायत्री परिजनों के पसीने से तथा वन्दनीया माताजी के अश्रुपूरित आशीर्वाद से ओत-प्रोत मिशन पर ही जब कलंकित करने वाले विशालकाय (घटाटोप) संकटों के बादल मंडराने लगे और वह भी अपने ही मिशन के मुखिया और उनके आगे-पीछे दुम हिलाते चाटुकारों की काली करतूतों के कारण, तो निश्चित ही गुरुवर से जुड़े मिशन के लिए समर्पित निष्ठावान परिजनों के दिलों की धड़कन तेज होना स्वाभाविक है और जब उनके कराहते पीड़ित उद्‌गारों से युक्त पत्रों को देखा, हम सबने महसूस किया कि वास्तव में जो कुछ हो रहा है उसके लिए हम सब जिम्मेदार हैं क्योंकि गलत एवं अन्यायपूर्ण दुष्कृत्यों का विरोध नहीं करके चुपचाप देखते रहने वाले भी उतने ही दोषी हैं जितने दुष्कृत्य करने वाले हैं।

गुरुवर उनको भी माफ नहीं करेंगे जो मिशन पर लगते हुये घातक दागों की सफाई में सहयोग न करके, दाग लगाने वालों का अप्रत्यक्ष सहयोग कर रहे हैं। चुप रहकर उनको और अधिक महादुष्कृत्य करने देने में उनका मूक रहना प्रेरणा स्त्रोत का कार्य कर रहा है। गुरुवर ने पहले ही कह दिया है कि- दुराचार बढ़ता है कब, सदाचार चुप रहता है तब।

अत: मिशन एवं गुरुवर के प्रति ऐसे निष्ठावान परिजनों के आक्रान्त विचारों को संकलित कर आप सबके सामने रखते हुये प्रणव पण्ड्या को भी सावधान कर उनकी वह असलियत बता देना आवश्यक है जो विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में बयां की जा रही है। अत: उचित समझकर ही यह कदम उठाना पड़ा है।

यदि इस दर्पण में भी अपना चिन्तन, चरित्र और चेहरा देखकर अपनी कार्यशैली, दिशाधारा नहीं बदली तो फिर क्या होगा? यह महाकाल ही जानें।

उसके दुष्परिणामों से महाकाल ही बचा सकते हैं। डॉ० पण्ड्या जिन चिन्मय पण्ड्या को मिशन के अगले उत्तराधिकारी बनाने की योजना के तहत विभिन्न चालें चल रहे हैं उन राजकुमार साहब के दुष्कृत्यों की जानकारी मिशन के ही कुछ भाई लोगों तक पहुँच चुकी है, जो उन्होंने विदेश प्रवास के दौरान सम्पन्न किये हैं। तो इस तरह कब तक

पारदर्शिता पर पर्दा डालकर सबको अन्धकार में रखते रहेंगे। कभी तो पाप का घड़ा फूटता ही है। इसलिए अच्छा यही रहेगा कि हम सब अपने मिशन के साथ ही प्रणव पण्ड्या को भी गर्त में जाकर अपमानित होने से बचाने के लिए अपना कर्त्तव्य समझकर अहम् भूमिका निभायें।

देश के विभिन्न भागों के वरिष्ठतम और गुरुवर के निष्ठावान परिजनों, जिन्होंने देश विदेश के विभिन्न राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शान्ति कुञ्ज के कार्यक्रमों, अश्वमेघ यज्ञों में तन-मन-धन से समर्पित होकर, जी-जान लगाकर कार्य किया, के पीड़ित अन्तःकरण से निकले उद्गारों को आपके सामने रखने का दुःसाहस कर रहे हैं। इसको अन्यथा न लें, इसके पीछे मूल भावना यही है कि मिशन की बागडोर सम्भाले हमारा नेतृत्व कहीं दान की अपार धन सम्पत्ति, सुख-सुविधाओं की चकाचौंध में यह नहीं भूल जावे कि इतने विराट मिशन की गरिमा, आदर्श व उद्देश्य क्या हैं?

प्रणव पण्ड्या सार्वजनिक गोष्ठियों, कार्यक्रमों, सम्मेलनों में मंच पर आकर मिशन के तड़पते हुये कार्यकर्त्ताओं का सामना करने से भी परहेज करने लगे हैं। उनको ऐसा नहीं करना चाहिए। आखिर गुरुदेव ने भी तो यही कहा है और किया भी है कि अपनों के बीच में बैठकर अपनों की सुनें और अपनी कहें, आत्मावलोकन भी करें। तभी तो आत्मपरिष्कार करना सम्भव होगा। तभी मिशन स्वच्छ छवि के साथ अपनी तीव्र गति पकड़ सकेगा। प्रणव तो मिशन के महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्वों और कार्यों को भूल कर एक कोने में बैठकर केवल दर्शन देने के काम में व्यस्त रहते हैं।

वहाँ भी केवल चाटुकारों के चहेते ही जा पाते हैं और वे भी केवल दर्शन करते ही धक्का मारकर आगे बढ़ा दिये जाते हैं। कोई अपनी या अपने क्षेत्र की पीड़ा बताना चाहे तो वहाँ खड़े चाटुकार न प्रणव को सुनने देते हैं और न ही कार्यकर्त्ताओं को बोलने देते हैं। यह कार्य तो अकेली दीदी भी कर सकती हैं। प्रणव को तो आम कार्यकर्त्ताओं के बीच रहकर मिशन की गन्दगी को समझने, उसकी सफाई करने का कार्य करना चाहिए। मिशन के सभी कनिष्ठ, वरिष्ठ कार्यकर्त्ता प्रणव की दृष्टि में समान होने चाहिए।

ऐसा नहीं होने के कारण ही ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो रही हैं कि जो बात प्रणव को सीधे कहनी चाहिए थी वह इस तरह से आम जन के बीच होते हुये पहुँचाई जा रही है।

इसको भी सकारात्मक लेकर यदि सुधारवादी प्रक्रिया चालू कर दी जावे तो निश्चित रूप से प्रणव की और मिशन की गरिमा में लगे दाग धुलते चले जायेंगे और हम तेज रफ्तार से गुरुवर का कार्य आगे बढ़ा सकेंगे।

आपके समक्ष कुछ कार्यकर्त्ताओं के हृदय की पीड़ा उनके द्वारा लिखित पत्रों के रूप में प्रस्तुत है।

-सम्पादक



# अपना परिचय

आज उम्र के 57 वर्ष का जीवनकाल कैसे गुजरा इस पर दृष्टिपात करने पर कभी-कभी सुखानुभूति व कभी दुःखद अनुभूति भी होती है। वस्तुतः जब मानव जीवन के उद्देश्यों की समझ आई तो अनुभव किया कि दशाधिक वर्षों का जीवन निरर्थक ही चला गया। 40 वर्ष की आयु भरण पोषण के उपक्रम में निरर्थक ही चली गयी।

अपने जीवन का शैशवकाल यदुवंश में पैदा होने के कारण परिश्रमिक वातावरण से ओतप्रोत ही रहा। शिक्षा की दिशा में भी आज के परिदृश्य को देखते हुए कोई विशेष महत्व नहीं था। सामान्य शिक्षा प्रणाली की शिक्षा के तहत उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त की। यौवनावस्था में आते ही अभिभावकों द्वारा पारिवारिक दायित्वों का बोध कराते हुए जीवन में एक नवीन परिवर्तन जीवनसाथी के रूप में अनुभव किया।

पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही कास्तकारी परम्परा का निर्वहन करते हुए 5 वर्ष का समय व्यतीत हुआ। परन्तु परिवार से मानसिक सामन्जस्य स्थापित न होने के कारण वह रास न आया और शहर की तरफ रुख करते हुए एक महाजन की सेवा में सेवारत हो गया। सम्भवतः प्रथम बार दिव्य सत्ताओं की प्रेरणास्वरूप उस महाजन द्वारा हरिद्वार में कार्य हेतु जाने का सुअवसर प्रदान हुआ। परन्तु तब तक पात्रता विकसित नहीं थी उस सत्ता के अधीनस्थ हो, उसके सहचर बनने की, जिसे आज अनुभव करते हैं तो यह चरितार्थ लगता है कि "फल समय आने पर ही पकता है और उसके पान करने वाले को पोषण प्रदान करता है।"

वास्तविक जीवन तो लगभग 13 वर्ष पूर्व से जीना प्रारम्भ किया। इसके पूर्व की संचय की प्रवृत्ति थी जो हमें स्थिर नहीं बैठने दे रही थी। पहले यही सोचा करता था क्या करूँ, कैसे धन कमाऊँ यही झंझावत में कब कितना समय गवाँ दिया इसका भान अब होता है। पश्चाताप होता है कि

कैसी मनोवृत्ति लिए मैं भाग रहा था। नश्वरता की ओर तीव्रता से भागता मैं शाश्वत् को पाना चाह रहा था।

गायत्री परिवार का अंग बनने से पूर्व मेरी शुगर 375 और बीपी 180 और पाइल्स आदि कई बीमारियाँ थी। याददाश्त ऐसी कि कुछ याद रखना चाहते परन्तु फिर भी भूल जाते थे। हमारे पारिवारिक चिकित्सक ने सलाह दी कि खीरा और चना ही खाएं उसी से सबकुछ नियंत्रित हो जायेगा। ब्लडप्रेशर की मात्र एक गोली वह भी कुछ ही समयावधि हेतु प्रावधानित की। इसी बीच गायत्री परिवार के गुरुभाई श्री श्याम मनोहर पाठक जी ने गायत्री मंत्र से दीक्षित करते हुए बताया कि गायत्री मंत्र जीवन में निश्चित स्थान, निश्चित समय व निश्चित अवधि तक जपें, लिखें एवं मनन करें। हमने उसका अनुपालन किया और आशातीत लाभ पाया। बीमारियाँ तो शरीर से ऐसे निकल गईं जैसे कभी थी हीं नहीं। नियमानुसार अनवरत 90 दिन का अनुष्ठान 24 घण्टे में निश्चित समय, निश्चित स्थान, अस्वाद भोजन एवं भावपूर्वक मंत्रलेखन स जो प्रज्ञा का प्रकाश जीवन में फैला, जो कष्ट या अस्वाद भोजन हमें आसह्य से लगते थे वह भी प्रसाद सा स्वादिष्ट अनुभूति प्रदान करने लगा। अपूर्णता से पूर्णता का बोध होने लगा।

इस अनुभूति और आनन्द ने वह बोध कराया जो कि यह तो आज के अध्यात्म में वास्तविकता एवं महती आवश्यकता है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जीवनशैली को अपने जीवन में उतारने, उनके द्वारा कहे को करने का बीड़ा उठाने का संकल्प ले चड़ पड़े वास्तविक मंजिल की तरफ। साधना की वास्तविकता, जो कि अन्नमय कोश की शुद्धता के बिना सम्भव नहीं, हमें समझ में आ गई और उसे अपने जीवन में उतार साधना के अनेकानेक चरणों को नियमत: चरणबद्ध तरीके से अपनाया। जिस कारण हमने अपने को आचार्य श्री के प्रखर प्रहरी व गायत्री के सफल साधक के रूप में शीशे की तरह पारदर्शी और जल की तरह निर्मलता बनाने का प्रयास किया जिसके फलस्वरूप ही 20 अगस्त, 2010 को मिशन क मुखिया एवं वरिष्ठों के जीवनक्रमों और दैनिकचर्यायों को पास से देखा तो



हृदय द्रवित हो करुण पुकार करने लगा कि इनसे यह जानना जरूरी है कि यह वरिष्ठ, जिन्हें आचार्य श्री ने मिशन की बागडोर दी ऐसा क्यों कर रहें हैं तो इन्हें बगलें झांकते हुए पाया। पत्राचार का उपक्रम शुरू किया तो जो मिशन एक पोस्टकार्ड पर अपनी प्रतिक्रिया सभी को देता था, हमें कोई भी जवाब न दे सका क्योंकि हमारे द्वारा वास्तविकता का आइना दिखाया गया था।

हमारा उद्देश्य आचार्य श्री के सपनों को साकार करना ही रहा है, वस्तुत: जिस जीवनशैली को अपनाकर परमपूज्य ने परिवार रूपी मिशन का गठन किया। वहाँ की स्थिति यह है कि वरिष्ठ 'मिशन का उपयोग अपने लिए कर रहे हैं न कि अपना उपयोग मिशन के लिए'। इस शैली को बदलने की पहल का शंखनाद करने की प्रेरणा मिली क्योंकि पीड़ा थी कि मिशन जिसे गायत्री के सिद्ध साधक ने अपनी तप:ऊर्जा से निर्मित पोषित किया, अपने पथ से भ्रमित हो रहा है। विगत तीन वर्षों से डॉ० प्रणव सहित सभी वरिष्ठों से अन्त: में उठ रहे सवालों को पूछा कोई जवाब न मिलने में अंतत: एक संकलन पुस्तक रूप में ''मिशन का चीरहरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना भाग-1'' का प्रकाशन भी 2 जुलाई, 2012 को किया जिसे अधिकांश परिजनों तक पहुँचाया भी गया परन्तु जवाब आज भी शून्यता में ही है। अनेकानेक फोन आए, परिजन आए, कि यह ठीक नहीं परन्तु कोई भी हमारे प्रश्नों के जवाब न दे सका, जो कि गायत्री की साधना से हमारे अन्त:करण में हमें पल-प्रतिपल परेशान कर रहें हैं कि क्या गुरुदेव का सपना पूरा होगा? या उनका यह कहा कि ''बेटा तुम मेरा काम करो या न करो मैं काम को ईंट पत्थरों से भी करवा लूँगा।'' श्रेय का भागी वही होगा जो अग्रिम श्रेणी में आकर मेरे अनुरूप, अनुकूल बताये कार्यों को मूर्त रूप प्रदान करेगा।

इसी क्रम में यह हमारा एक और प्रयास.....प्रयास.....प्रयास.....

-राम आसरे
गायत्री परिजन

# अकाट्य सचः अनुदान पात्र को ही मिलते हैं अपात्र को नहीं

दिनांक 19 अगस्त 2010 को जब हम गुरुदेव के अनुशासनानुसार अपने द्वारा निकाले गए अंशदान को देने शांतिकुंज पहुँचे तो प्रज्ञा परिजन द्वारा आज की दिनांक में डॉ० प्रणव से मिलना सम्भव न होना बताया गया। परन्तु प्राप्ति रसीद को देखते ही वरिष्ठ परिजन की प्रतिक्रिया में बदलाव से अचरज हुआ और उन्हीं परिजन द्वारा त्वरित ही मिलाया भी गया। जिससे मानस में असंख्य झंझावातों ने जन्म लेना शुरू कर दिया। तभी ही डॉ० प्रणव की भी कार्यशैली एवं दैनिकचर्या अध्ययन करने के उपरान्त उसका विश्लेषण करने पर जो अनुभूति हुई वह बहुत ही पीड़ादायी एक गायत्री साधक के रूप में रही। बौद्धिक क्षमता व इन्टेलीजेन्सी कन्टेन्ट, आई.क्यू. लेवल 8.4, शुगर 270, बी. पी.200, हिमोग्लोबिन 9 प्वाइंट और एक ऐसा रोग जिसके कारण शैल दीदी घुटती रहती हैं असह्य पीड़ा प्रदान करता है। वेदान्ता हास्पिटल का अनवरत उपचार एवं 24 घण्टे डिप्रेशन में रहने वाला हृदय रोगी गायत्री की प्रथम कक्षा का भी जानकार नहीं हो सकता है। गायत्री दिनचर्या से अनजान और विचारों से खाली कैसे पथप्रदर्शक हो सकता है वह तो सहचर भी सही प्रकार से नहीं है। संवेदनाओं से शून्य, प्रतिभा शून्य छोटे-छोटे बच्चों जैसी हरकत करने का उपक्रम हम सभी नित्य देखते, सुनते और पढ़ रहे हैं।

आदिशक्ति की आराधना करने वाला जो आयुः, प्राणम्, प्रजां, पशुं, कीर्तिम्, द्रविणम्, ब्रह्मवर्चसम इन सात वरदानों से अखण्ड दीप, अखण्ड यज्ञ एवं अखण्ड जप के सानिध्य में रहने वाला इन वरदानों से परिपूर्ण होना चाहिए, नितान्त खाली दिखाई दिया तो आश्चर्य ही हुआ। ऐसा ही अनुभव गायत्री परिवार के वरिष्ठ परिजनों द्वारा बताए जाने से पता लगा कि जिसे गुरु जी ने अपना दामाद बनाया तो कुछ सोच समझ कर ही बनाया और इन्हें बागडोर थमा दी तो हमने उसपर भी गहनता से चिन्तन प्रारम्भ किया। वर्तमान परिवेश में वरिष्ठों का विश्लेषण और एनालिशेस



किया तो पाया कि 98 प्रतिशत लोग बीमार हैं। परन्तु गायत्री मंत्र की आराधना करने में हमने पाया कि बीमारियाँ दूर भाग जाती हैं क्योंकि अन्नमय कोश की एक मात्र साधना से बहुत कुछ पाया जा सकता है। ऐसा नहीं, कि कहते हैं अपने को साधक, सिखाते हैं साधना, परन्तु स्वयं उससे खाली हैं। वर्तमान में वे रोते रहे, चिल्लाते रहे और ठोकरें खाते रहे और मर गये। गायत्री मंत्र में सामान्य आदमी असामान्य काम करे, साधारण आदमी असाधारण काम करे। एक आदमी पाँच आदमी का काम करे तब पता चलता है कि गायत्री की कृपा, गुरु की कृपा इसके ऊपर है। *परन्तु डा० प्रणव एवं इनका परिवार बिना हाथ में गोबर लगे, गायों का सारा दूध पी जाते हैं और बिना हाथ में मिट्टी लगे, सारी सब्जियाँ खा जाते हैं, इसमें किसी शिशु को भी उसका लाभ नहीं प्रदान करते। जिसका यह परिणाम भुगत रहे हैं कि सीढ़िओं से बिना सहारे/लिफ्ट के भरोसे ही चढ़ना/उतरना सम्भव है।*

सामान्य आदमी को पहलवान बनने के लिए पहले अखाड़े में वर्षों जोड़ करना पड़ता है, अध्यापक बनने के लिए बी.एड., पी.एच-डी., बी. टी.सी., एल.टी. आदि की अध्ययन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। डॉक्टर बनने के लिए एम.बी.बी.एस., एम.डी. या बी.एम.एस. करना पड़ता है।

इसी प्रकार गायत्री साधक बनने के लिए आलस्य, प्रमाद, वासना, तृष्णा, लोभ, मोह, अहंकार इन सात महादैत्यों से लड़ना पड़ता है, जीतना पड़ता है और प्रज्ञा योग का अभ्यास करना पड़ता है। गायत्री का देवता, आदिशक्ति का देवता, सूर्य का देवता, यह देवता कभी बहकावे में नहीं आता। वरिष्ठ परिजन सोचते हैं कि मैं कर रहा हूँ सर्वथा अपने को और सभी को धोखा दे रहे हैं। दैवीशक्तियाँ कभी बहकावे में नहीं आतीं इन्हें प्रमाण देना पड़ता है, अंधश्रद्धालुओं और स्वार्थियों को छोड़कर सभी जानते हैं सफलता हवाबाजों को कभी नहीं मिलती। सफलता कर्मठ, सदाचारी, सत्यनिष्ठ को ही मिलती है। गंधरहित पुष्प के पास भौंरे कभी नहीं आते, अपने चारों ओर भ्रमरों को मधुर स्वर के साथ गूंजते फिरते देखने का सौभाग्य उन्हीं पुरुषों को प्राप्त होता है जो अपने अंदर मनमोहनी सुगंध छिपाये बैठे हैं। जैसे कमल के फूल पर यदि भौरों के झुंड मंडराते रहते हैं तो यह भौंरों की कृपा नहीं कही जायेगी, वरन कमल की विशेषता कही जायेगी।

# ई-मेल द्वारा डा० प्रणव एवं उनके चाटुकारों से पत्रों का आदान-प्रदान

डॉ० प्रणव जी,

प्रणाम!

निवेदन यह करना चाहते हैं कि आपने साधना को कठिन समझकर साधनों भरा रास्ता, आज के परिवेश की आसान राह अपनाई इसलिए ही आपके सामने कठिनाइयाँ आ रही हैं और सतत ऐसे ही चलने के कारण आपका जीवन समस्याओं से भर गया है। आप गुरु के रास्ते पर एक कदम भी चलते तो आपके जीवन का सफर आसान हो जाता, जैसे साधना आपको अभी भी असहज ही लग रही है, परिजनों को साधना हेतु दिशा देना और स्वयं साधनों के पीछे भागना किसी का भी भला नहीं कर सकता है। विशेष पर्वों के अवसर पर लाईन लगवाकर दर्शन करवाना चरण स्पर्श करवाना साथ ही अखण्ड ज्योति पत्रिका में अपने अनुरूप फोटो छपवाना, कलाकार की तरह दिखाना सहज दिख रहा है और साधना कठिन।

वस्तुतः साधना है साधक के मन का साध्य में विसर्जन, परन्तु इस कठिनाई और सरलता को जो समझ लेता है वही गुरु के कार्य को समझ पाता है नहीं तो मन की अटकलों में अटकता रहता है, मन की भटकनों में भटकता रहता है। अपने मन को सुलझाने में वह इतना उलझ जाता है कि उसका अस्तित्व ही खो जाता है और गुरु कृपा से वंचित रह जाता है, क्योंकि यह स्पष्ट समझें गुरु का दामाद, गुरु की बेटी और गुरु का बेटा कोई नहीं होता है अध्यात्म की राह में, अध्यात्म नकद खेती है अपने-अपने कर्मों की।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस एवं स्वयं परमपूज्य गुरुदेव ने भी स्पष्ट रूप से इसे कहा एवं लिखा है कि मेरे शरीर के पास जो रहता है वह यह न सोचे कि वह मेरे सबसे निकट है। स्वामी जी ने अपने भतीजे के प्रति दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि उसने मेरे शरीर की बहुत सेवा की लेकिन विचार को नरेन्द्र ने ही ग्रहण किया जिससे नरेन्द्र विश्व में स्वामी विवेकानन्द के



नाम से विख्यात हुए और वह भतीजा फेरी लगाकर कपड़े बेचता ही अपना जीवन यापन करता रहा।

गुरुदेव ने भी यही कहा मेरे सिर के बाल काटने वाला नाऊ यह सोचता है कि मैं गुरुदेव के सबसे पास हूँ लेकिन वह केवल मेरे शरीर के पास है विचारों से नहीं। स्वयं ही उन्होंने कहा कि लोगों से आप यह मत कहना कि गुरु जी बड़े सिद्धपुरुष हैं, बड़े महात्मा हैं और सबको वरदान देते हैं वरन् यह कहना कि गुरुजी एक ऐसे व्यक्ति का नाम है, जिनके पेट से एक ऐसी आग निकलती है, जिनकी आँखों से शोले निकलते हैं ऐसे गुरुजी का परिचय कराना। विचारों को पढ़िये और हमारी आग की चिनगारी को, जो प्रज्ञा-अभियान के अन्तर्गत युग-साहित्य के रूप में है लोगों में फैला दीजिए। परन्तु यहाँ तो आप और वरिष्ठ तो अपने व अपने शरीर को फैला रहे हैं, जिससे उन्होंने हमेशा बचने को कहा। उन्होंने लिखा यदि दुनिया आपके कामों की प्रशंसा करती है इसमें बुरा नहीं परन्तु यदि आप प्रशंसा पाने के लिए कार्य को करते हैं तो बुराई है।

सफलता हवाबाजों को कभी नहीं मिलती है सफलता हमेशा ही कर्मठ, सदाचारी, सत्यनिष्ठ को ही मिली है और मिलती रहेगी। क्योंकि गंधरहित पुष्प के पास भौंरे कभी नहीं आते, अपने चारों ओर भ्रमरों के मधुर स्वर सुनने का सौभाग्य केवल उन्हीं को प्राप्त होता है जो अपने अन्दर मनमोहनी सुगन्ध छिपाये बैठे रहते हैं तो यह भौंरों की कृपा नहीं कही जायेगी वरन पुष्प खासकर कमल की विशेषता कही जाएगी।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

सो जाता है हर कोई अपने कल के लिये,
पर यह कोई नहीं सोचता कि आज दिल दुखाया जिसका,
वह सोया होगा कि नहीं!

सम्पादक महोदय,
अखण्ड ज्योति संस्थान

1 जनवरी 2012

# युग परिवर्तन का आधार सम्पूर्ण क्रान्ति

आज की आवश्यकता संपूर्ण क्रांति-

आज के दौर में क्रांति संपूर्ण हो तभी सार्थक है और सामयिक भी। संपूर्ण क्रान्ति सभी पुराने ढाँचों को ढहाकर नई नीवों पर नए निर्माण खड़े करती है। खण्डहर केवल इमारतों के नहीं जर्जर होते, व्यवस्थाओं के ढाँचे भी पुराने पड़ते हैं, इनको भी जरा और जर्जरता आ घेरती है। मान्यताएँ, रीतियाँ, परंपराएँ, सोच, दृष्टिकोण, जिंदगी जीने के ढंग सभी समय के साथ परिवर्तन की माँग करते हैं। यदि इन्हें समय के अनुरूप न बदला गया तो इनका चरमराता, चकनाचूर होता ढाँचा इनसान के निजी व सामाजिक वजूद के लिए खतरा बन जाता है। इसकी किरचें इनसानों के अपने व सामाजिक जीवन को विषैला करने लगती हैं। यह जहर का विषैलापन यदि बिना किसी रोकटोक के बढ़ जायेगा तो सबकुछ समाप्त होने के अलावा कोई दूसरा विकल्प न रहेगा।

वर्तमान में यह घटित हो रहा है घर के आँगन से लेकर देश के व्यापक परिसर व दृश्य जगत में कुछ ऐसा ही अंधेरा विषैलापन तेजी से फैलता जा रहा है। इस विषय पर बैठक होती है, गोष्ठी होती है, चिंता होती है, पर टुकड़ों- टुकड़ों में। कोई भी संपूर्ण परिदृश्य को देख ही नहीं रहा न देखना चाहता है। चाहे केन्द्रीय संगठन हो या उसी का एक दूसरा भाग क्षेत्रीय संगठन, केन्द्र की हो या प्रांतों की सरकार, समय-समय पर सभी अपनी उपलब्धियाँ गिना गौरव का अनुभव करते हैं। इनमें कुछ सच्चाई बेशक है इससे इंकार नहीं किया जा सकता परन्तु बुनियादी ढाँचे में दीमक लग चुकी है। आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक ढाँचे कहीं पर सड़-गल कर खत्म हो चुके हैं कहीं हो रहे हैं।

भ्रष्टाचार, मंहगाई, जातीय स्तर पर, क्षेत्रीय स्तर पर, धर्मो में व संस्कृतियों में द्वेष बढ़ा हुआ है और बढ़ता जा रहा है। कोई कितना ही आंखें, कान बंद करे पर इसकी झलक दृश्यमान हो रही हैं, आहटें सभी



को सुनाई पड़ रही हैं। क्यों हो रहा है ऐसा? क्या कारण है इसके पीछे? इनके कारण स्थूल में तलाशे जाते हैं जैसे पेड़ के पत्ते गिने जाते हैं, डालियां गिनी जाती हैं लम्बाई नापी जाती है। परन्तु जड़ो पर ध्यान नहीं दिया जाता, जिसमें कि दीमक लग चुकी है जो कि वर्तमान व्यस्था से अपराजेय है। राजनीतिक स्तर पर समाधान के लिए शोर बहुत है, विदेशों से कालाधन लाने की हुंकार, धार्मिक संगठनों में धन का अकूत भंडार जिस पर समय समय पर पीठासीन होने की लड़ाइयां, अपने व अपनो को सत्तासीन करने की लोलुपता, लोकपाल बिल के लागू होने के बारे में हों, इसमें किसी से हमारा विरोध नहीं है। सबके इरादे अच्छे हो सकते हैं, उनकी भक्ति, देशप्रेम साफ छवि का हो सकता है, पर क्या इतने से बात बन जाएगी।

हम तो इन सभी आन्दोलनों में उन महापुरुष का स्मरण करा रहे हैं, जिसने इमरजेन्सी के दौर में संपूर्ण क्रांति का नारा दिया था। इमरजेन्सी आई और चली गई। तब से लेकर आज तक केन्द्र और राज्य में अनेकों सरकारें बनी और बदलीं, पर जय प्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति का यथार्थ नहीं बदला। हाँ, ये बात अलग है उनके साथ आंदोलन में उतरने वाले लोग स्वयं को सत्ता के प्रति समर्पित कर चुके है, पर इससे क्या संपूर्ण क्रांति की सच्चाई भारत की जनता का सच है, समय का सच है। उस समय संपूर्ण क्रांति की बात जे.पी.बाबू के दिल से निकली, परंतु राजनीतिक दलों की दलदल में खो सी गई। कीर्ति वही स्थाई होती है जो सत्कार्यों द्वारा प्राप्त की जाती है। ओछे विचार और ओछे काम करने वाले अंत में ओछे ही रह जाते हैं, जो कि दृष्टव्य हो रहा है।

### *आखिर है क्या संपूर्ण क्रांति ?*

चाहे दिल से निकली उस बात को दलों की दलदल ने भले ही अस्वीकार कर दिया हो, पर भारत की जनता के दिलों में वह आज भी मौजूद है और उतनी ही सच आज भी है। जिसका मार्ग सच्चाई का होता है उसे कोई हरा नहीं सकता है। संपूर्ण क्रांति वास्तव में संपूर्ण अमूलचूल बदलाव/परिवर्तन की परिकल्पना है। जे.पी.बाबू ने कुछ अलग कहा हो ऐसा

नहीं, यदि दूसरों पर शासन करना चाहते हो तो स्वयं अनुशासन में रहना होगा। दरअसल आजादी की लड़ाई के समस्त संकटो का हमारे मनीषियों ने जो विश्लेषण किया एवं आजादी के बाद नवनिर्माण की कल्पना परमपूज्य पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने की उसे समाज के वैज्ञानिक पहलुओं के पुरोधा जे.पी.बाबू ने अभिव्यक्त किया। उन्होंने कहा संपूर्ण क्रांति यह समाज-जीवन के प्रत्येक अंग का स्पर्श करता है। क्रांतिकारी परिवर्तन होने वाले अपव्यय विवाह आदि में से लेकर धर्म व्यवस्था तंत्र, शासन तंत्र के संचालन तक प्रत्येक चीज में परिवर्तन है, यह है संपूर्ण क्रांति।

तत्कालीन आपातकाल विरोधी आंदोलन और परिणामस्वरूप गठित राजनीतिक पार्टी से इस महाविचार को जोड़े जाने के कारण बात अधूरी रह गई। जैसे आजादी प्राप्त होने पर भारत की राजनीतिक पार्टी अपने मूल उद्देश्य से भटक गई। जो इन दोनों क्रांतियों से सिद्ध होती है। क्रांति कभी भी सरकारी शक्ति से नहीं जनशक्ति से होती है। शासन के द्वारा समाज में क्रांति और वह भी संपूर्ण क्रांति कभी भी संभव नहीं।

यह जरूर है क्रांति शासन के अनुकूल हो तो उसको बल मिलता है और जनता के लिए काम आसान हो जाता है, परंतु समाज परिवर्तन का मुख्य साधन राजसत्ता नहीं हो सकती, ये बात गांधी जी भी मानते थे और परमपूज्य गुरुदेव का भी यही विचार था। उन्होंने कई बार अभिव्यक्त किया- यदि कोई यह समझने लगे कि समग्र क्रांति और इसी अनुरूप जो अन्य दूसरे कार्य हैं सरकार कर देगी तो यह बिलकुल भ्रम है। क्रांति की लहर ऊपर से नहीं बल्कि नीचे से होगी। युग परिवर्तन अर्थात सारे समाज में परिवर्तन हो, समाज के हर अंग में हो, सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं के रंग-रूप, चाल-चलन में हो, उसकी संगठनात्मक कार्यपद्धति में हो। इसके लिए जरूरत है निस्वार्थी लोकपरायण लोगों की जो जनता के बीच जाकर कार्य करें मात्र भाषण, घोषणा एवं योजनाएं ही न देते रहें, जनमानस को जागृत करें।

### *दीप से दीप को प्रज्जवलित करना पड़ेगा !*

युग निर्माण-समग्र क्रांति की इसी भावना, इसी कल्पना इसी विचार को लेकर परमपूज्य गुरुदेव ने विचार क्रांति अभियान का ढाँचा बनाया।



वह यह सच बार बार कहते थे कि हमारा आंदोलन पूजा-पत्री करने वालों का समुदाय नहीं है। हमारा लक्ष्य तो सम्पूर्ण परिवर्तन है। हाँ, यह बात उन्होंने जरूर कही कि इस परिवर्तन की शुरुआत व्यक्ति को अपने अंदर से करनी होगी; क्योंकि जले हुए दीपक ही दूसरा दीपक प्रज्जवलित कर सकते हैं। बुझे दीपक तो केवल अंधेरा ही फैलाते हैं। व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण यही वे आधार है, जिनसे युग परिवर्तन संभव है। नैतिक क्रांति, बौद्धिक क्रांति, सामाजिक क्रांति यही वे योजनाएं हैं, जिनके अनुपालन से ही संपूर्ण क्रांति संभव है। परमपूज्य गुरुदेव जे. पी.बाबू का बहुत आदर करते थे। जब उनका आंदोलन शुरू हुआ तब उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा था-'बात बनी है, एक अच्छी लहर उठी है।' नवनिर्मित सरकार के गठन और उसके परिणाम को देखते हुए उन्होंने कहा था, बात अधूरी रह गई, इसे हमें ही पूरा करना होगा। सबसे पहले बदलाव जीवनशैली से शुरू करना होगा। पूज्य गुरुदेव ने हमेशा ही स्पष्ट रूप में कहा आजादी के बाद सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों के लिए व्यापक जनजागरण एवं संघर्ष जरूरी है। उनके अनुसार परिस्थिति को बदलने के लिए गली-गली, गाँव-गाँव में युग के नवनिर्माण की अलख जगानी होगी।

इसके लिए व्यापक लोकशिक्षण करना होगा। इस लोक शिक्षण से ही लोग जानेंगे, सीखेंगे, अपनी जिंदगी का सच, आजादी व आजाद भारत का सच। इस लोकशिक्षण से ही संपूर्ण क्रांति संभव हो सकेगी और तभी पुराने ढाँचों को ढहाकर नई नीवों पर नव निर्माण संभव हो सकेगा और तभी बदल पायेंगी मान्यताएं, परंपराएं और जर्जर हो चुकी व्यवस्थाएं। ऐसे परिवर्तन की व्यापकता ही उस महापरिवर्तन को संभव करेगी, जिसे परमपूज्य ने युग परिवर्तन कहा है। इसके लिए आवश्यकता है नई लहर के ऊर्जावान, प्रतिभासंपन्न, त्यागी व निस्कलंक साधकों की। इसके लिए साठ से ऊपर के जर्जर हो चुकी देह के स्वामी मात्र प्रलाप ही करेंगे वर्तमान परिदृश्य में कोई उदाहरण न प्रस्तुत कर सकेंगे। ऊर्जा तो उनकी आयु सुविधा व धनलोलुपता ले गयी। अतः ऐसे ट्रस्टी, अधिकारी, साधक या कार्यकर्ता स्वयं हट जायें और स्फूर्तिवान तपस्वयों

को आगे लाया जाए। जिससे परमपूज्य के युग निर्माण की घोषणा संभव हो सके। यदि ये पुरोधा ही जमे रहे तो होगा इनके बलबूते कुछ भी नहीं परन्तु ये अपने साथ सभी साधकों की छवि, गरिमा, प्रतिष्ठा को चोट पहुँचा रहे हैं और पहुंचाते रहेंगे। समय का प्रवाह, ऊर्जा संपन्न प्रतिभाएं इनको भविष्य में ऐसे गर्त में ले जाएंगी कि वह वर्तमान इनको याद करने, इनके साथ उठने/बैठने में भी शर्मसार महसूस करेगा। अज्ञानियों से अपनी तुलना न करें वरन युगऋषि परमपूज्य गुरुदेव के आदर्शों का अनुगमन करें। क्योंकि कीर्ति वही स्थाई है जो सत्कार्यों द्वारा प्राप्त की जाती है। जो सच है अर्थात पूरा सच न कि थोड़ा सच या व्यवहारिकता में इतना ही सच; नहीं बल्कि सच का मतलब सच और थोड़े सच का अर्थ झूठ ही होता है। सच को अपनाने वाला परेशान हो सकता है परन्तु कभी पराजित नहीं हो सकता न ही वह डरपोक या कायर होता है। सीना ताने सच्चाई का सामना करने का साहस रखता है।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

देश के महान तपस्वी पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा जी के दिव्य युग निर्माण मिशन के लीक से हटने को लेकर डॉ० प्रणव पण्ड्या के नेतृत्व पर लगातार सवाल उठते रहे हैं। आचार्य जी के असामयिक निधन के बाद उनके समर्पित उत्तराधिकारियों एवं उनके पुत्र श्री ओम प्रकाश शर्मा की घोर उपेक्षा करके हथियाए गए उत्तराधिकार की गहराई से जाँच करायी जानी चाहिए। - राम आसरे



सम्पादक महोदय,
अखण्ड ज्योति संस्थान 26 जनवरी 2012

## अपनी समीक्षा और नियंत्रण व्यवहार में करें

अपनी बुरी आदतें तब पड़ती हैं, जब आवेश ही प्रधान हो जाता है और अपनी समीक्षा और अपने आपको नियंत्रण में रखने की बात भुला दी जाती है। सामान्य बुद्धि के लोग भी अपने कार्य एवं व्यवसायों में कार्य करने की प्रक्रिया और उस पर नियंत्रण की आवश्यकता समझते हैं, पर न जाने क्यों लोग अपनी आदतों और हरकतों के बारे में असावधानी बरतते हैं और आवेश में अंग-संचालन का जो उत्साह आता है, उसे मर्यादित रखने की बात भुला देते हैं, फलतः उन्हें उपहासास्पद भी बनना पड़ता है। अपनी शक्ति नष्ट होती है और दूसरे उसे असामाजिकता मानकर नाक-भौं सिकोड़ते हैं। इस असम्मान के कारण उन्हें अव्यवस्थित, असावधान एवं अप्रामाणिक तक मान लिया जाता है। दूसरे लोग उनके हाथ में कोई महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व सौंपते या सहयोग देते हुए झिझकते हैं और सोचते हैं कि जो अपनी आदतों का निरीक्षण-नियंत्रण नहीं कर सकता, अपनी समीक्षा नहीं कर सकता वह किसी बड़े कार्य को पूरा करनें में या दिऐ हुए सहयोग का सदुपयोग करने में कैसे समर्थ हो सकेगा? वैसे भी गायत्री का देवता, आदिशक्ति का देवता, सूर्य का देवता यह देवता कभी भी बहकावे में नहीं आते। न ही मुफ्त में किसी की मदद करते हैं कर्म के आधार पर ही कर्मफल का सिद्धांत निर्धारित है। जो आत्मनिर्भर हैं उन्हीं को दूसरों की भी सहायता मिलती है। जो उत्साही और कर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ हैं, उसके पास दरिद्रता न फटकेगी। दरिद्रता इच्छाओं की कोख से पैदा होती है। जिसकी इच्छाएं जितनी अधिक हैं, उसे उतना ही दरिद्र होना पड़ेगा, उसे उतना ही याचना और दासता के चक्रव्यूह में फँसना पड़ेगा। इसी के साथ उसका दुःख भी उतना ही बढ़ेगा। इसलिए जिसे दरिद्रता निवारण के लिए कदम आगे बढ़ाने हैं, उसे इच्छाओं की ओर से अपने पाँव उतने ही पीछे हटाने होंगे; क्योंकि जो जितना अपनी इच्छाओं को छोड़ पाता है, वह उतना ही स्वतंत्र, सुखी और

समृद्ध होता है। जिसकी चाहत कुछ भी नहीं है, उसकी निश्चिंतता एवं स्वतंत्रता अनंत हो जाती है।

अतएव हे प्रकाशपुत्र इच्छाएं हों तो दरिद्रता व दुःख बने ही रहेंगे। इसलिए जो इन इच्छाओं के सच को जान लेता है, वह दुःख से नहीं आपनी चाहतों से मुक्ति खोजता है, क्योंकि जो अपनी इच्छाओं व चाहतों से छुटकारा पा लेता है, उसके जीवन से दरिद्रता, दुःख, याचना व दासता स्वतः ही हट एवं मिट जाते हैं।

दुःख का सुअवसर- दुःख की कल्पना मात्र से कँपकँपी होने लगती है। इसके एहसास से मन विकल, विह्वल, बेचैन हो जाता है। ऐसे में दुःख से होने वाले दरद की कौन कहे! यही वजह है कि दुख से सभी भागना चाहते हैं और अपने जीवन से दुःख को भगाना चाहते हैं। दुःख से भागने और दुःख को भगाने की बात आम है, जो सामान्यजनों और सर्वसाधारण के लिए है, लेकिन इसकी एक खास बात भी है, जो सत्यान्वेषियों के लिए, साधकों के लिए और गुरुभक्तों के लिए है। यह अनुभूति विरले लोग ही पाते हैं। ऐसे लोग दुःख से भागते नहीं, बल्कि दुःख जाग्रत करते है। दुःख उनके लिए रोने, कलपने का साधन नहीं, बल्कि गुरु द्वारा प्रेरित और उन्हीं के द्वारा प्रदत्त जागरण का अवसर बनता है। दुःख के क्षणों में उनकी अन्तश्चेतना में संकल्प, साहस, संवेदना, पुरुषार्थ की प्रखरता और प्रज्ञा की पवित्रता जागती है।

किसी भी क्षेत्र में प्रगति का मूल आधार व्यवस्था बुद्धि होती है। जीवन जीना भी एक बड़ा कार्यक्षेत्र है, इसमें व्यवस्था बुद्धि का उपयोग इस दिशा में भी सतर्कतापूर्वक किया जाना चाहिए कि अपनी आदतें बिगड़ने न पाएँ। अनर्थ उत्पन्न करने वाली निरर्थक बुरी आदतें असावधानी के कारण हमारे स्वभाव का अंग बन जाती हैं और परिपक्व होने पर जड़े इतनी गहरी जमा लेती हैं कि उन्हें हटाना बहुत ही कठिन एवं प्रयत्नसाध्य होता है। जहाँ अदम्य साहस और दूरदर्शिता है, वहाँ सबकुछ है। गिराने वाले नहीं, उठाने वाले विचार और कार्य अपनाने चाहिए। अकर्मणता और निराशा एक प्रकार की नास्तिकता है। क्योंकि पुरुषार्थ विहीन व्यक्तियों की नाव बीच में ही डूबती है।



ईश्वर के न्याय से हमेशा डरना चाहिए क्योंकि वह कभी किसी के पाप, अनाचार को माफ नहीं करता है। जीवन का अर्थ है समय, उसका नियोजन। समय की सार्थकता को समझना चाहिए युग परिवर्तन समय का इंतजार या किसी व्यक्ति विशेष का इंतजार नहीं करेगा। आत्मसमीक्षा करते हुए आज के युगधर्म, युग परिवर्तन के सहचर व सहभागी बनें।

हमें उतनी ही सफलतायें या उपलब्धियाँ हस्तगत होती हैं, जितनी कि हम चाहते हैं और प्रयास करते हैं। चाहने को तो लोग न जाने क्या-क्या चाहते, आकांक्षा और इच्छायें रखते हैं। पर वैसा चाहना और बात है तथा उसका फलित होना और बात है। हम चाहते तो हैं कि स्वयं भी दयानन्द, गाँधी, विनोबा, विवेकानन्द जैसे महापुरुष बनें, पर हमारे मन में महापुरुष बनने की अदम्य इच्छा नहीं होती। हमें विश्वास ही नहीं होता कि हम भी कभी महापुरुष बन सकते हैं।

पानी में डूबते समय जैसे तीव्र आकांक्षा होती है कि हम बच जायें और तुरन्त हाथ-पाँव चलने लगते हैं। अपने शरीर का दबाव तथा पानी की उछाल शक्ति का हड़बड़ी में भी सही सन्तुलन बिठाने लगते हैं तथा उस संकट से बच भी जाते हैं। कर्मठ बनाना चाहते हुए भी क्या कभी यह समझ उभरी है? अपने को जकड़े आलस्य-प्रमाद से घुटता हुआ हमने महसूस किया है क्या? जैसी घुटन पानी में डूबते समय होती है और हम छटपटाने लगते हैं, इन दो महादैत्यों के शिकंजे से छूटने की तड़पन हममें जागी है क्या?

इस तीव्र आकांक्षा क अभाव का एकमात्र कारण है-अपने आप के प्रति अविश्वास, स्वयं का अवमूल्यन, अपना मूल्य घटाकर देखने की कमजोरी। यदि अपनी क्षमताओं को पहचानकर उनका विकास किया जा सके तथा आत्म-मूल्यांकन की संजीवनी द्वारा उन्हें जीवन्त बनाया जा सके तो कोई संदेह नहीं कि हम में से हर कोई उस महानता को अर्जित करने की पात्रता रखता है, जिसकी गौरवगाथा इतिहास के पन्नों में पढ़ने को मिलती है।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

सम्पादक महोदय,
अखण्ड ज्योति संस्थान

30 जनवरी 2012

# परिचर्चा

एक विद्वानों की संगोष्ठी में परिचर्चा हो रही थी। प्रत्येक विचार पर वाद-विवाद हो रहा था। विद्वानों की इस सभा में एक तपस्वी और प्रतिभावान परिजन भी गये थे। वे इस सभा में उपस्थित अवश्य थे, पर भागीदार नहीं थे। यहाँ सभी की सब बातें सुनते हुए उन्हें लगा कि विवाद विचारों पर नहीं 'मैं' पर है। कोई कुछ सिद्ध नहीं करना चाहता है। सब केवल अपने -अपने अहं को पोषित करने अर्थात 'मैं' को प्रमाणित करना चाहते हैं। अपना अहंकार विवेक का हरण कर लेता है। इसके चलते सही सोच-समझ और सम्यक जीवनदृष्टि समाप्त हो जाती है। परन्तु इसे विडम्बना ही कहेंगे कि समाज की पूरी व्यवस्था, प्रशिक्षण व प्रशिक्षक संस्थान आक्रामक एवं अहंकारी व्यक्तित्व गढ़ने में लगे हैं।

अहंकार के रोग की खास बात है कि यदि व्यक्ति सफल होता जाता है तो उसका अहंकार भी उसी अनुपात में बढ़ता जाता है और वह विशाल चट्टान की भाँति जीवन की सच्चाई के पथ या आध्यात्मिक पथ को रोक लेता है। सद्विवेक और सद्ज्ञान ही इस अहंकार के रोग की औषधि व उपचार है। अहंकार से उतना ही सावधान रहना चाहिए जितना कि एक पागल कुत्ते से।

वैसे भी जड़ें हमेशा ही अप्रत्यक्ष होती है, दिखाई नहीं देतीं। जो दीखता है, वह मूल नहीं है। फूल-पत्तों की तरह जो दीख रहा है, वह गौण है। उस दीखने वाले पर रुक जाएँ तो समाधान भी वहीं है। विवाद कहीं नहीं पहुँचते। जहाँ विवाद है, वहाँ कोई एक दूसरे से नहीं बोलता। सभी केवल अपने आप से ही बातें करते रहते हैं। दिखाई भर देता है कि बातें हो रही हैं, विचार-विमर्श हो रहा है।



जो प्रतिभावान यह विद्वानों का वाद-विवाद देख रहे थे, इसके पहले उन्होंने एक पागलखाने में पागलों का वाद-विवाद देखा था। वहाँ दो पागल विचार-विमर्श में तल्लीन थे। हाँ! एक अचरज जरूर था कि जब एक पागल बोलता था तब दूसरा चुप रहता, पर उन दोनों की बातों में कोई संगति नहीं थी। उन्होंने उनसे पूछा कि जब तुम्हें अपनी ही कहनी है तब फिर दूसरे के बोलने के समय तुम चुप क्यों हो जाते हो। उत्तर में दोनों पागल जोरों से हँसे और बोले- 'परिचर्चा के सामान्य नियम हमें भी मालूम हैं। एक के बोलते समय दूसरे को चुप रहना चाहिए।'

वह तपः के स्वामी, साधक एवं प्रतिभावान परिजन इन दोनों परिचर्चाओं के साक्षी थे। प्रतिभावान का अर्थ है जीवन के प्रश्नों का उत्तर देने की क्षमता। जीवन सर्वथा मौलिक है। इसके हर मोड़ पर आने वाली चुनौतियाँ, उभरने वाले प्रश्न, पूरी तरह से अपनी नवीनता का परिचय देते हैं। जो इन प्रश्नों का जितना अधिक सटीक, सकारात्मक, सक्षम व सृजनात्मक उत्तर दे पाता है वही सच्चा प्रतिभावान है।

परिस्थिति की क्या चुनौती है? प्रतिभावान व्यक्ति परिस्थिति व प्रश्न के अनुरूप व्यवहार करता है, जबकि मूढ़ व परंपरावादी व्यक्ति घिसे-पिटे उत्तरों को दोहराते रहते हैं। चाहे वे पुराणों, ग्रन्थों में लिखी या संतों पैगम्बरों, अवतारों द्वारा कही बातें हों। स्व-विवेक का त्याग कर इन्हें अपना लेना प्रकारांतर में मूढ़ता ही है।

विवेकहीन व्यक्ति धर्मग्रन्थों का पुरातन बोझ ढोते रहते हैं। वे अपने भगवान, अपने गुरु पर अपना सारा बोझ डालकर निश्चिंत हो जाना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें अपने ऊपर भरोसा करने से भय लगता है। जबकि अन्तः दृष्टिसंपन्न प्रतिभावान व्यक्ति स्वयं पर भरोसा करता है। वह भगवान, गुरु तथा ग्रन्थों पर भी श्रद्धा आस्था रखते हुए इनकी आज की वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप नई व्याख्या करता है। भगवान बुद्ध का भी कथन है कि आज जो मैं कह रहा हूँ वह समय अनुरूप है, सौ वर्षों बाद परिस्थितियाँ परिवर्तित होंगी तब स्व-विवेक के अनुरूप ही मेरे

अनुयायियों उसमें परिवर्तन कर लेना और उसी अनुरूप सभी उसका अनुसरण करना।

दोनों ही स्थानों पर केवल विवाद था; क्योंकि संवाद तो तभी संभव है जब 'अहंकार' से पीछा छूटे और यह 'अहंकार' केवल प्रेम से छूट पाता है। वर्तमान परिवेश में शरीर भाव में मनुष्य इतना तल्लीन हो गया है कि अपने आपको वह शरीर मानने लगा है। जीवन की वास्तविक सफलता आत्मभाव में जाग्रत रहने में है। जहाँ प्रेम है, संवाद केवल वहीं हो पाता है। वहीं पर विचारों को, भावों को, मस्तिष्क, हृदय आत्मसात् कर पाते हैं। अन्यत्र तो केवल विवाद और विक्षिप्तता का शोरगुल है।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

कानपुर निवासी परिजन श्री राम आसरे द्वारा "मिशन का चीरहरण एवं महाकाल की अन्दर्वेदना" पुस्तक के माध्यम से मिशन के नेतृत्व का ध्यान खींचने और परिजनों को आगाह करने के बाद उन पर विभिन्न तरीकों से हमले हुए। लखनऊ गायत्री परिवार के श्री अनिल श्रीवास्तव एवं श्री राम केवल यादव द्वारा कानपुर जाकर हमला करने के विरूद्ध थाना बर्रा में आपराधिक मुकदमा दर्ज। कार्यकर्ता श्री अरविन्द निगम की अनेक गतिविधियों में अग्रणी आन्तरिक भूमिका। - राम आसरे



सम्पादक महोदय,
अखण्ड ज्योति संस्थान 05 फरवरी 2012

## साधना : परिमार्जित जीवनदृष्टि

भगवान की प्रसन्नता और कृपा का सीधा संबंध मनुष्य के भाव संस्थान से है। जहाँ उत्कृष्टता होगी भगवान की दिव्य चेतना का अवतरण वहीं ही होगा। साधना उपक्रम का एकमात्र उद्देश्य अंतः का परिमार्जन, परिष्कार ही है। आत्मा की पवित्र और उदार स्थिति का नाम ही परमात्मा है। लोभ, मोह के बंधनों को काटकर आदर्श और कर्तव्य को अपनाने का नाम मुक्ति है। स्वर्ग न तो स्थान है और न परिस्थिति। वह विशुद्ध रूप से परिष्कृत दृष्टिकोण ही है, जिसे अपनाने वाला देवता की श्रेणी में आ जाता है और अति मानवी आनंद का रसास्वादन करता है। प्रशंसा गान अथवा नाम-जप से ईश्वरीय अनुग्रह मिलने की कल्पना बच्चों को बहलाने की प्रक्रिया ही है। उसका ना कोई आधार है और न कारण। अमुक कर्मकाण्ड को देखकर अमुक उच्चारण को सुनकर ईश्वर प्रसन्न हो सकता है। ऐसा सोचना सत्ता की महत्ता का उपहास करने जैसा ही है। उपासना का तथ्य यदि न समझा जाए तो उस दिशा में किए गए प्रयत्न काल-क्षेप मात्र बनकर रह जाएँगे। हमें लाखों बार जानना और समझना चाहिए कि अध्यात्म का अर्थ है परिमार्जित जीवनदृष्टि अर्थात परिष्कृत दृष्टिकोंण का अवलंबन।

आध्यात्मिक जीवन अस्वस्थ होने में नहीं है स्वस्थ में है। यह रोग में नहीं अरोग्य में है; पीड़ा में नहीं, प्रसन्नता में है, दमन में नहीं, रूपांतरण में है, लेकिन इस मुखर सच को समझने वाले लोग कम हैं। संख्या उनकी ज्यादा है, जो दमन को, स्वयं के प्रति अनाचार को अध्यात्म समझते हैं। ऐसे लोग स्व्यं को भले कितना ही समझदार समझें, लेकिन हैं सिरे से नासमझ। आध्यात्मिक जीवन स्वास्थ्य का विरोध नहीं है। वह तो परिपूर्ण स्वास्थ्य है। वह तो एक लययुक्त, संगीतयुक्त सौंदर्य की स्थिति का पर्यायवाची है। शरीर तो बस उपकरण है; अपना अनुगामी है। हम जैसे बनते हैं वह वैसा बन जाता है। आध्यात्मिक जीवन का अर्थ शारीरिक दमन नहीं, बल्कि विचार, संस्कार और भावनाओं का परिमार्जन व रूपांतरण है।

अध्यात्म एक नकद खेती है लेकिन इसे प्रारम्भिक चरण में ठीक से समझा नहीं तो वही होगा कि चूका किसान, डाल से चूका बंदर, और पेड़ से टूटा पत्ता, और साधना से विमुख हुआ साधक जरूर एक दिन बैठकर रोयेगा। अवसर चूका किसान-किसान अगर समय पर बीज नहीं बो पाया तो छः महीने तक पछताना होगा और डाल से चूका बंदर- बंदर अगर छलांग लगाते-लगाते अंदाज गलत हो जाए तो नीचे गिरकर बहुत चोट खाता है और पेड़ से टूटा पत्ता- पत्ता अगर पेड़ से टूटकर गिर जाए बिखर जाय तो अपने स्थान पर नहीं पहुंच सकता। गायत्री साधना से विमुख हुआ साधक चाहे तीन जन्म भी ले ले सच्चा साधक नहीं हो सकता है। जैसा कि नीतिकारों ने लिखा है कि जो चीज अपने स्थान से इधर उधर हो जाय तो शोभा नहीं देती।

बड़े काम हलके साधनों के सहारे सम्पन्न नहीं हो पाते। उनके लिए अधिक समर्थ साधन जुटाने पड़ते हैं। बन्दूकों के दाँत खट्टे करने के लिए तोप के गोलों का प्रहार ही विकल्प रहता है। मजदूरों द्वारा न उठ पाने वाला भार मजबूत क्रेनें ही उठाती हैं। बड़ी समस्याओं को बड़प्पन की अनेक विशेषताओं से सम्पन्न मस्तिष्क ही सुलझा पाते हैं। दृढ़ निश्चयी अपनी निज की मानसिकता में घुसी हुई कायरता, क्षुद्रता और लाभ-लिप्सा से निपट लेते हैं। हर बुरा आदमी भी सुधार प्रक्रिया को अपनाकर प्रामाणिक ही नहीं श्रद्धास्पद भी बन सकता है। आम्रपाली, अंगुलिमाल, अशोक जैसे अनेकानेक उदाहरण इस सम्भावना को समर्थन देने के लिए विद्यमान हैं।

जो दूसरों से कहना और करना है, उसे कार्यान्वित करने के लिए शुभारम्भ अपने आपसे ही कराना चाहिए, जो निश्चय किया है, उसे प्राणप्रण से निभाना चाहिए। श्रेय पाने हेतु अग्रणी सिद्ध करने वाले लोग जनसाधारण की दृष्टि में छोटे समझे जाते हैं। बड़प्पन जताने के लिए व्याकुल लोग, कुछ हाथ में रहा हो, तो उसे भी गँवा बैठते हैं। ऐसे विग्रहों का परिणाम उस संगठन को बदनाम करता है, जिस पर चलकर वे ऊँचे बनना चाहते हैं। वे स्वयं बदनाम होते हैं और संगठन को ले डूबते हैं, जिसके कि



वे नेता कहलाना चाहते हैं। गांधी जी की सादगी, सज्जनता और विनम्रता प्रसिद्ध थी। इसीलिए वे राजनीति में में कोई नियुक्त नेता पदाधिकारी न होते हुए भी समुदाय के लिए प्राण आज भी बने हुए हैं।

मित्रता, प्रतिष्ठा, प्रशंसा से लदा हुआ जिन्हें आप देखते हैं, जिनके बहुत से मित्र, भक्त, प्रशंसक पाते हैं, उनकी मानसिक दशा का निरीक्षण कीजिए। आप पायेंगे कि उनमें बहुत से ऐसे गुण हैं, जिनके कारण लोगों का मन उनकी ओर आकर्षित होता है, उनमें बहुत सी ऐसी विशेषतायें हैं, जिनसे लोग लाभ उठाते हैं, उन्हें मुफ्त के माल की तरह प्रतिष्ठा एवं प्रशंसा नहीं मिलती, वरन् उसके अनुरूप अपने आपको बनाने के पश्चात् उसके अधिकारी हुए हैं। गंध रहित पुष्प के पास भौंरे नहीं आते। अपने चारों ओर भ्रमरों को मधुर स्वर के साथ गूँजते फिरते देखने का सौभाग्य उन्हीं पुरुषों को प्राप्त होता है जो अपने अन्दर मनमोहनी सुगन्ध छिपाये बैठे हैं। कमल के फूल पर यदि भौरों के झुण्ड मंड़राते रहते हैं तो यह भौंरों की कृपा नहीं, कमल की विशेषता है। बिना विशेषता वाला कनेर पुष्प बेचारा अकेला एक कोने में ही पड़ा रहता है।

हम मानते हैं कि कभी-कभी किसी को अनायास ही बहुत सी सुविधा-सम्पदा प्राप्त हो जाती है, जिन्हें भाग्य की देन कहा जाता है। यह अपवाद है। अनायास मिलने के भी दो कारण होते हैं या तो पूर्व जन्म का संचित कर्मफल शेष होगा जो अब प्राप्त हुआ है या अब कर्ज लिया जा रहा है जो आगे चुकाना पड़ेगा। मुफ्त का माल तो एक रत्ती भर भी यहाँ नहीं मिल सकता। जो जिसका पात्र है, वह उस वस्तु को प्राप्त करता है। आप अपने ऊपर विश्वास कीजिए, अपने ऊपर निर्भर रहिये।

सारे प्रसंगों का उत्पादन और परिवर्तन करने वाला केन्द्र बिन्दु अपने अन्दर है, इसलिए दूसरों का आसरा ताकने की अपेक्षा अपने आपका आन्तरिक निरीक्षण, संशोधन और सम्पादन आरम्भ कर दीजिए।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

सम्पादक महोदय,
अखण्ड ज्योति संस्थान

09 फरवरी 2012

# परमात्मा का अनुदान, सभी हेतु एक समान

भगवान का द्वार सभी के लिये खुला है जो चाहे प्रवेश कर सकता है और जो इच्छा करे वह उसे उनके द्वारा क्षमता अनुरूप प्राप्त भी होता है। जैसे सूरज प्रातः उदय होता है और अपनी राह चला जाता है। हम चाहें तो धूप में पहुँचकर उसकी ऊष्मा से लाभान्वित हो सकते हैं। बंद कमरे में, बंद गाड़ी में, छाते की छाँव में उसका लाभ नहीं मिलेगा। सूर्य से कृपा की चाहना व्यर्थ है, वह तो अविरल प्रवाह अनवरत रूप से बरसा ही रहा है, बंद तो हमने अपने वाह्य और अंतः के दरवाजे कर रखे हैं। इन्हीं को खोलना है अपनी ही आँखों को खोलना है। हम यदि यह सोंचें कि आँखें ठीक है, केवल दुनिया ही अँधेरी हो गई, तो फिर वस्तुस्थिति को समझना कठिन है। भगवान नाराज हैं और हम अपनी स्थिति पर संतुष्ट हैं तो कोई समाधान न निकल सकेगा।

परमात्मा हमारे लिए अपरिचित है। हम केवल अपने परिचित अज्ञान और मनोविकारों को ही जानते हैं। परिचितों का स्वागत किया जाता है और अपरिचितों को आश्रय देने में संकोच करना अथवा अपने को उसमें घुला देना ये दोनों ही स्थितियाँ हमारे लिए अत्यंत कठिन होती हैं, फिर उससे मिलन कैसे सम्भव हो सके?

भगवान को हम जिस पैमाने से नापते हैं, वह बहुत ही छोटा है। अपने पैमाने से महामानवों तक को लोग न नाप सके, उनके जीवित रहते उनका उपहास और असहयोग करते रहे। फिर इतने विराट स्वरूप परमात्मा को अपना छोटापन रहते किस प्रकार जानें? उसे कैसे पाएँ? और कैसे अपनाएँ?

परमात्मा का स्वरूप है- 'महानता'। इस विशाल ब्रह्मांड को उनकी एक छवि के रूप में देखा जा सकता है और इस सुविस्तृत विस्तार के



अंतर्गत हो रही ज्ञात और अविरल हलचलों को उस महासागर की तरंगें समझा जा सकता है। इसको प्राप्त करने के लिए हमें अपनी संकुचित विचारणा छोड़नी पड़ेगी और उतनी महानता अपनानी पड़ेगी, जिसके सहारे उस महान परमेश्वर को देखा जा सके। गड्ढे में बैठकर छोटी सी परिधि ही दिखाई देगी। समतल भूमि पर बैठकर कुछ मील तक के दृश्य ही दृष्टव्य होते हैं, किंतु यदि सुविस्तृत अंतरिक्ष को देखना है तो अधिकाधिक ऊँचाई पर पहुँचने और वहाँ से देखने पर ही संभव है इसके अलावा किसी प्रकार संभव नहीं है।

जो जितना संकीर्ण है, ईश्वर से उतनी ही दूर है। उदात्त दृष्टिकोण और उदार रीति-नीति अपनाकर ही उसके समीप पहुँचाने वाली मंजिल पर अग्रसर हो सकते हैं। छोटे पात्र में बड़े पदार्थ नहीं रखे जा सकते हैं। जितना समान हो उसे रखने के लिए पात्र भी उतना ही बड़ा होना चाहिए। ईश्वर महान है। महानता के रूप में ही उसकी स्थापना हमारे अंतस में हो सकती है। महामानवों को ही दूसरे शब्दों में साधक, उपासक कह सकते हैं। संकीर्ण स्वर्थपरता की धुंध जितनी मात्रा में निरस्त करते हैं, उतने ही स्वच्छ, सलिल परमात्मा के दर्शन हमें होते हैं।

परमात्मा निराकार है कोई व्यक्ति नहीं है। हम अंतरिक्ष में उड़ें उसका अंचल खुला पड़ा है। वह हमें खींचकर अंतरिक्ष में नहीं उठाएगा, उड़ाएगा। अपना प्रयत्न स्वयं को करना पड़ेगा साधनों को जुटाना पड़ेगा, साधना को प्रथमतः अन्नमय कोश से परिमार्जित करना होगा। परमात्मा का सानिध्य वासना की आग को बुझाता है व तृष्णा की जलन को शान्त करता है। इस हेतु श्रद्धा, प्रज्ञा एवं निष्ठा को बढ़ाकर ज्ञानयोग, कर्मयोग एवं भक्तियोग की साधना करनी होगी।

समुद्र न तो नदियों को बुलाता है और न रोकता है। कोई नदी चाहे तो रेती में ही रुक जाय या तालाब बन जाए। कोई नदी चाहे तो बहती चले और समुद्र में मिल जाए। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए उसे समझना आवश्यक है। प्रार्थना करने, गिड़गिड़ाने और मनौती मांगने की उलझी पगडंडी चलकर उस तक नहीं पहुँचा जा सकता। तप किए बिना किसी को उन्नति का मार्ग नहीं मिल सकता है। तेजस्वी मनुष्य कभी

किसी का मुँह नहीं ताकते वरन विश्वरथ से विश्वामित्र बनने के रास्ते को अपनाकर अपना स्वयं का मार्ग नवीन मार्ग बनाते हैं। मानव को गिराने वाले नहीं उठाने वाले विचारों और कार्यों को अपनाना चाहिए। उदात्त चिंतन और परिष्कृत व्यक्तित्व के राजमार्ग पर चलकर ही उस परमप्रभु तक पहुँचा जा सकता है, जिसे पाना हर मनुज का जीवन लक्ष्य होना चाहिए।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

पुस्तक में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के एक युवा महिला प्रवक्ता से अनैतिक सम्बन्धों तथा उनके प्रो-वाइस चांसलर पुत्र डॉ० चिन्मय पण्ड्या के छात्र जीवन के ऐसे ही एक विषय को उठाने को लेकर श्री राम आसरे पर प्राणघातक हमला की सम्भावना। विश्वविद्यालय की अनेक विसंगतियों को उजागर करने वाली राजस्थान की एक पूर्व छात्रा का लगातार उत्पीड़न। डॉ० पण्ड्या की अनुज बहू श्रीमती सन्ध्या पण्ड्या के उत्पीड़न एवं उनकी रहस्यमयी गुमशुदगी का विषय उठाने पर उनका श्री यादव पर गहरा आक्रोश।

- राम आसरे



कुलाधिपति महोदय,
देव संस्कृति विश्व विद्यालय
हरिद्वार

27 फरवरी 2012

## पवित्र अंत:करण ही शक्ति के पात्र

आज सभी जगह सिद्धांत की बात होती है आध्यात्मिक, धार्मिक मंचों व उद्‌बोधन में सिद्धांतवादी परामर्श ही दिए जाते हैं पर ये उपदेशक यह भी कहते हैं कि लोग एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देते हैं। प्रभाव नहीं पड़ता दिख रहा है सच्चाई, नेक नियति के रास्ते पर कोई चलने को तैयार नहीं है। बात पूरी तरह सही दृष्टव्य हो रही है। यदि यह भ्रामक होती तो जितने धर्मोपदेशक आज हैं, उससे पहले वाले दिनों में कम नहीं थे, उन्होंने जमाने को बदल दिया होता। उपदेशक बढ़े, पूजा-अर्चना बढ़ी, धार्मिक स्थल बढ़े, अर्थ की प्रधानता बढ़ी, धर्म और अध्यात्म के नाम पर श्रद्धा बढ़ी शायद धर्मांधता बढ़ी, आबादी बढ़ी, परन्तु गिरावट है तो मात्र मनुजता में, विचारणा में अधिक सघन हुई जिससे समस्या विकराल रूप धारण कर रही है।

पूर्व का अवलोकन करें तो देश में सात ऋषि थे। उनके कुछ शिष्य भक्त भी होंगे पर वह सब नगण्य ही थे। उनके निजी व्यक्तित्व इतने प्रभावशाली थे कि कहते हैं कि सात द्वीपों में, समूचे संसार में धर्मधारणा की ऐसी हवा चलाई जिससे कोई प्रभावित हुए बिना न रहा। सबकुछ सीमित था स्थानीय स्तर से राष्ट्र स्तर की समस्याओं के समाधान के लिए देश के कोने-कोने में पहुँचते थे और जनमानस को अनगढ़पन से छुड़ाकर कर्मठता एवं सद्‌भावना से अनुप्राणित करते थे। जब प्राचीन काल में यह सबकुछ था जादुई चमत्कार से, तो आज उसके विपरीत परिस्थितियाँ क्यों हो रही हैं? इसके पीछे बहुत ही गूढ़ कारण छिपा होना चाहिए अन्यथा जो बादल पहले पानी बरसाते थे, वे अब क्यों धूल बरसाएँ और हर कोई किसी को शिकायत का मौका दे?

यहाँ जानने योग्य बात यह है कि वरिष्ठ ही सामान्य परिजनों को प्रभावित करते हैं। अकर्मण्य एवं गिरे हुए चरित्र के लोगों में क्षमता नहीं

होती कि हर किसी को अपने कथन को प्रमाणित कर सकें, जो उत्कृष्टता के पक्षधर परामर्शों को अपनाने के लिए किसी को सहमत कर सकें। वक्ता ऊँचे स्थान पर बैठता है और श्रोता नीचे जो कही गई बात को आसानी से सुन सकता है। यदि वक्ता नीचे हो और श्रोता ऊपर तो बात पहुँचना कठिन होता है। प्रसंग जब आदर्शों को अपनाने का होता है तो वक्ता को उस कसौटी पर हर दृष्टि से कसे जाने के उपरांत सही सिद्ध होना चाहिए अन्यथा कथन प्रतिपादन हवा में उड़कर रह जाएगा।

लोगों का अनुमान है कि आदर्श अपनाने की नहीं कहने-सुनने की बात है। उसे व्यवहार में नहीं उतारा जा सकता। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है यदि यह संभव रहा होता, तो प्रतिपादन पर इतना जोर लगाने वाले पंडित उसे अपने निजी जीवन में अवश्य क्रिया रूप में परिणित कर कार्यान्वित कर सके होते। लोग उपदेश सुनने से कहीं अधिक दिलचस्पी इस बात में लेते हैं कि जो कहा जा रहा है, उसे उपदेशक ने अपने निजी जीवन में किस हद तक अपनाया? इसलिए उसका चरित्र कांच के गिलास की तरह बिल्कुल पारदर्शी होना चाहिए, जिसे कोई भी किसी भी समय देखकर प्रमाणिकता के अपने जीवन में उतार उसका अवलम्बन कर सके। गुरुदेव ने स्पष्ट कहा है- 'प्रमाण दीजिए प्रवचन नहीं', माली बनिए मालिक नहीं।

बुरे लोग यदि दबंग होते हैं तो साधारण स्तर के लोगों को अपने दुर्व्यसनें में सहयोगी बनाने के लिए घसीट लेते हैं। नशेबाजों की मंडलियाँ बन जाती हैं। चोरों के गिरोह बन जाते हैं। उद्दंडता और अनाचारियों के साथी सहयोगी प्रायः बनते रहते हैं। इसका कारण मात्र यही नहीं है कि दुष्प्रवृत्तियों की ओर कुसंस्कारी सहज आकर्षित होता है वरन उससे भी बड़ा कारण यह है कि इस प्रकार के संचालकों की कथनी और करनी में एकरूपता होती है। भले ही बुरे स्तर की ही बात क्यों न हो? बिजली दोनों तारों के मिलने पर ही कार्य करती है। वाणी में प्रभाव तभी उत्पन्न होता है, जब कहने वाला वैसा ही आचरण कर रहा हो।

उपदेशकों को स्व अनुशासन अपनाना होगा यही एक पूर्ण सच है। प्रचारक जिस स्तर पर लोगों को ले जाना चाहता है, जैसा



परिवर्तन चाहता है, उसका नमूना अपने को बना कर दिखाना होगा नहीं तो लोग यही मानते रहेंगे कि यह कथन मानने योग्य नहीं है। क्योंकि उसे उपदेशक ने अपने जीवन में ही चरितार्थ करके लाभ न उठाया। जब इतने जोर-जोर से अन्यान्यों में बदलाव लाने की बात करता हो और उसका महात्म्य फलितार्थ भी उच्चकोटि का बताता है, तो उसे अपने आचरण में क्यों नहीं लाता? इसके जवाब में दो ही बातें आती हैं या तो यह कथन व्यवहारिक नहीं हैं या इससे परिवर्तन, सुधार संभव नहीं है। आम लोग जो रीति-नीति अपनाए हुए हैं, वही ठीक है। परन्तु यदि मार्गदर्शन देने वाला, उपदशक उसे स्वयं अपनाने से कतराता है तो समझा यही जाता है कि यह कोई ठग है। वाकपटुता में फाँसकर अपना सम्मान कराना चाहता है, स्वयं घटियापन अपनाकर लाभ उठाना चाहता है। वर्तमान में यही समस्या है जिसके कारण उपदेशकों से जनसाधारण की निष्ठा समाप्त होती जा रही है। वाणी के सम्मोहन से या यों कहें कि जैसे मदारी और दर्शक दोनों अपने-अपने तरीके से खेल को देख और प्रसन्न हो लेते हैं। दर्शक तमाशा देखने के बाद कुछ धन दे जाता है और मदारी उस धन से विलासिता भरा, दुगुणयुक्त जीवन जी रहा है।

सिद्धांतवादिता अपनाने पर तो उसकी सच्चाई और बुराई को हर पैमाने से नापा जाता है। यह गृहस्थियों, तपस्वियों, संतों, ब्राह्मणों और महामानवों, लोकसेवियों का कार्य है। इसपर चलने वाले तक को निष्ठावान बनना पड़ता है। निज का स्तर तो और भी ऊँचा होना चाहिए। जो बोले वह उपदेश गले कैसे उतरे? उस कथन पर कोई ध्यान कैसे दे? उसमें बहुत परेशानियां हैं उसे हम क्यों उठाएँ? पूज्यवर ने सांचा बनने की बात कही है यदि साँचा ही टेढ़ा होगा तो ढलने वाली वस्तु सही कैसे बनेगी? विचार क्रांति वकीलों जैसी दलीलें दने से संभव नहीं हो सकती है। इससे तो भ्रांतियां ही फैलेंगी, कुप्रचलन ही बढ़ेगा। देखा गया है कि *गायत्री परिवार के परिजन भाई बेटी का विवाह होने पर सभी लोग दहेज विरोधी बनते हैं, पर जब बेटे के विवाह की बारी आती है, तो प्रकट या गुप्त रूप से लाभ उठाने से*

*नहीं चूकते।* यही कारण है कि 'खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं' यह उद्घोष तो बहुत करते हैं परन्तु पालन करने से कतराते हैं या बहानेबाजी करते हैं। *सभी परिजन शादियाँ शांतिकुंज से करते हैं, परन्तु राम सहाय शुक्ला की बेटी की शादी कानपुर में 20 लाख रुपया खर्चा करके, कई साल पहले तम्बाकू व्यापारी से की, जो पैसा शांतिकुंज ने खर्चा किया।*

धर्मोपदेश देने वाले अपने बोले का पालन करें तो अनुकरणकर्त्ताओं की कमी नहीं रहे। अनेक ऐसे संत हुए जिनके सशक्त प्रचार ने लोगों का आंदोलित नहीं किया, उन्होंने संकट उठाया और परिणत के रूप में घाटा ही रहा है। नानक, कबीर जैसे संतों की प्रामाणिकता और प्रखरता आज भी भावनाशीलों को आज भी आंदोलित करती है। मैले कपड़े को धोने के लिए अच्छा साबुन और साफ पानी चाहिए। कीचड़ से कीचड़ को साफ नहीं किया जा सकता। पानी की भाप बनाने के लिए उसे उबलने जितनी गर्मी का तापमान चाहिए। सही साधनों से ही सही प्रयोजन सधते हैं। युग निर्माण जैसे उद्देश्य की प्राप्ति हेतु ऐसे व्यक्तित्व चाहिए जो वाणी, लेखनी की प्रक्रिया अपनाकर इतिश्री न मान लें वरन् ऐसे प्रतिभाशाली चाहिए जो तप और समर्पण के उदाहरण प्रस्तुत कर अपनी जीवनशैली से जनमानस में प्रमाण प्रस्तुत करें।

लोकमानस को भ्रान्तियों से उबारा और परिष्कार कर विवेकशीलता अपनाने के लिए तर्क, तथ्य, अनुभव और प्रमाणों के आधार पर ही मोड़ा जा सकता है। यह एक क्रियात्मक परिवर्तन है। यही ज्ञान यज्ञ है। इसे ही दुष्प्रवत्तियों का उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन भी कह सकते हैं। किसी भी प्रवाह को रोकने और उलटे को उलटने के लिए साहस भरा पुरुषार्थ चाहिए, यही है प्रतिभा का परिष्कार। द्वेष साधक के लिए नरक का द्वार है। जो विवेकवान है, जिनकी सोच समग्र एवं दृष्टिकोण परिष्कृत है, वे जीवन की इस सच्चाई को समझते हैं और अपनी जीवनयात्रा में प्रत्येक स्थिति का सदुपयोग कर लेते हैं। उदाहरण के लिए अमृत की मधुरता तो उपयोगी है, परन्तु यदि विष को औषधि में परिवर्तित कर लिया जाए तो वह भी अमृत की ही भाँति



जीवनदाता हो जाता है। द्वेष साधक के लिए नरक के द्वार खोलता है जो उससे मुक्त हो सका, उसके लिए कैवल्य का पथ प्रकाशित है। वर्तमान की राष्ट्रीय और सामाजिक स्थिति किसी से भी छिपी नहीं है। देश के पास प्रतिभा और साधनों की धरोहर कम नहीं है। फिर भी समस्याओं का मुँह सुरसा की तरह बढ़ता ही जा रहा है। समस्या का निराकरण भी पूर्व में जाकर ही पूर्व की तरह ही निकालना पड़ेगा। 'अति लघु रूप धरा हनुमाना' विवेक, शक्ति, ज्ञान, श्रद्धा, तप एवं समर्पण का समन्वय जब तक स्थापित नहीं होगा स्थाई समाधान न अभी तक निकला है न निकट भविष्य में निकलता दिख रहा है।

युग निर्माण हेतु जीवट के धनी प्राणवान, प्रतिभावान का ही आमंत्रण समय-समय पर हुआ है। समयदान-दानों में सर्वोत्कृष्ट समयदान इसलिए माना गया है कि उसमें ईश्वर प्रदत्त समय, शरीरगत पुरुषार्थ का प्रत्यक्ष रूप श्रम और अंतःकरण की भावसंवेदना का गहरा पुट रहने पर ही यह प्रक्रिया सशक्त रूप में बन पड़ती है। प्रभावी समयदान वही है जिसमें समय, श्रम और दृढ़ संकल्प का त्रिविध समन्वय परिपूर्ण रूप में हुआ हो। यही युग परिर्वन की महान प्रक्रिया संपन्न कर सकने में समर्थ हो सकता है।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

आपका भगवान इतना छोटा और विवश है, कि उसे रहने के लिये मंदिर की जरूरत पड़ी? कहीं ऐसा तो नहीं इन्सानों ने अपने मतलब के लिये उसे कैद करने के लिये मंदिर बनाया हो? यदि यह सच है तो फिर ये भगवान आपका बहुत ही विवश और मजबूर है जो इन्सानों की साजिश का शिकार हो गया।

सम्पादक महोदय,
अखण्ड ज्योति संस्थान

05 मार्च 2012

# एक अपूर्व बल: मनोबल

हमें जो भी सफलताएं प्राप्त होती हैं वह साधनों के द्वारा ही होती हैं। बल अर्थात साधन। बलों में धनबल, बाहुबल, शस्त्रबल, बुद्धिबल प्रमुख है परन्तु सबसे बड़ा बल है मनोबल। यदि आदर्शों के निमित्त प्रयोग किया जाता है तो उसे संकल्पबल भी कहते हैं। जहाँ संकल्पशक्ति बलवान होगी उसका स्तर भी उतना ही ऊँचा होगा। किसी को यह जन्म के साथ ही प्राप्त होती, परन्तु यदि नहीं है सतत प्रयास उसे प्राप्त किया जा सकता है। छोटे-छोटे कामों को पूर्णता तक पहुँचाने के अभ्यास से या एक के बाद दूसरा महत्वपूर्ण कार्य हाथ में लेना उसकी कठिनाइयों से निपटना यही मार्ग है अपने मनोबल को प्राप्त करने का। जिसे यह प्राप्त हो जाता है उसे महामानव बनने का पथ दृष्टव्य होने लगता है।

लोगों के पास अनेकानेक साधन होने के बाद भी साधारण से कार्य सम्पादित नहीं कर पाते हैं। मन घबराने लगता है कि जो काम शुरू किया है सही है या नहीं, हो पाएगा कि नहीं। कमजोर इच्छा शक्ति एक काम को करना फिर उसे छोड़ दूसरे को हाथ में लेना दूसरे के छूटने में तीसरे को अपनाना। इससे शक्ति का अपव्यय ही होता है, लक्ष्य विहीन व्यक्ति करता तो बहुत कुछ है पर पाता कुछ भी नहीं। जो भी करना है विवेकपूर्वक निर्णय ले उसे दृढ़तापूर्वक करना चाहिए। हमारी कर्मेन्द्रियां मन से ही संचालित होती हैं। मनोयोग लगा देने से योजना पूर्ण होती है अन्यथा बच्चों की तरह कल्पनाएँ मन में उठती रहती हैं जैसे पानी में बुलबुले।

कार्य को पूर्णता की ओर ले जाने हेतु आवश्यक है योजना सर्वांगपूर्ण बने। साधनों हेतु जो वर्तमान में संभव हो उसे ही किया जाय। यह सब तभी होता है जब संपूर्ण मनोयोग से योजना क्रियान्वित की जाय। अपूर्ण चिंतन से न रूपरेखा समझ में आती है और न उसका क्रम बनाने का तारतम्य सही तरीके से बनता है। मानसिक रुझान जिधर होगा



दिशा वही चुननी चाहिए क्योंकि तभी कार्य ठीक तरीके से बन पायेगा। अन्यथा पर्याप्त साधन होते हुए भी उपयोग पूर्ण नहीं हो पाता। अनिक्षा से किए कार्य सदा अपूर्ण रहते हैं।

*मनोबल का एक पर्याय हिम्मत भी है* जिसमें मानसिक रुझान शामिल है। किसी कार्य को उत्साह के साथ मनोयोग से किया जाय तो प्रतिफल दूसरा होगा और यदि उसे भार समझकर किया जाय तो उसकी उपलब्धि अलग ही होगी। जैसे रुचिपूर्वक बनाया बया का घोसला और अरुचिपूर्वक बने कबूतर के घोसले में फर्क होता है। नौकरों द्वारा किए गए कार्य और स्वयं के द्वारा किए कार्य में फर्क होता है। मजदूरों द्वारा कराई खेती में वह लाभ नहीं होता जो स्वयं मालिक और मजदूर मिलकर खेतों में बराबर से कार्य मिल-जुलकर करते हैं तो खेत सोने सी लहराती फसल देते हैं।

संसार में कोलंबस, नेपोलियन आदि के नाम पराक्रम में ऐसे हैं कि जिन्हें पढ़कर स्फुरन होता है। मानसिक व शारीरिक रूप से वे सामान्य मनुष्यों जैसे थे पर वे अपने बढ़े-चढ़े मनोबल के सहारे बड़ी योजनाएँ बनाने और उसे सफल बनाने में जो पराक्रम दिखाया उसके पीछे मनोबल का चमत्कार ही है। मनोबल व आत्मबल से सम्पन्न व्यक्ति ही बड़े से बड़े तख्तों को हिलाने व पलटने में सक्षम होता है, इसका इतिहास भी साक्षी है।

अनेकानेक आंदोलन संसार में चले और व्यापक बने, इनके मूल में एक-दो व्यक्तियों का ही पराक्रम था जो आँधी के साथ असंख्यों को आसमान तक उड़ा ले गये वे न योद्धा थे न धनाढ्य। गांधी जी की चलाई आँधी में लाखों लोग पत्ते और तिनके जैसी हस्ती वाले शीर्ष स्तर की भूमिकाएँ निभाने लगे। बड़े आन्दोलन जो भी हैं इनके मूल में एक-दो ही तपस्वी, मनस्वी होते हैं। जिससे एक ऊर्जा का निर्माण होता है और वह आमजनमानस को प्रभावित करती है और वही विजेता पक्ष भी होता है। संकल्प करना और उस पर टिके रहना उसका निर्वाह करना हर किसी के बस का नहीं है यह तो केवल अपूर्व बल के स्वामी से हो संभव है। मनोबल संपन्न प्रतिभा प्राणप्रण से अपने संकल्पों

पर दृढ़ रहते हैं, विपरीत परिस्थितियों में घबराते नहीं न ही अपने उत्साह को कम करते हैं। वे सामान्यतः आवेशित नहीं होते, अपनी सोंच को उत्कृष्ट रखते हैं, क्षुद्रता उनके पास नहीं फटकती है। सिद्धांतों का परिपोषण करते हुए बहुजन हिताय में अपना जीवन व्यतीत करते हैं, वे ही हैं अपूर्व बल के स्वामी। उनके पास अदम्य साहस और दूरदर्शिता है। अपने श्रम, समय, चिन्तन, धन एवं प्रतिभा के रूप में उलब्ध क्षमताओं का सदुपयोग करते हैं।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

दिनांक 08 नवम्बर, 2011 को आचार्य जन्मशती समारोह में हरिद्वार में भगदड़ में हुई मौतों की संख्या पर लगातार सवाल उठते रहे हैं। कभी 16 तो कभी 20 लाशें तथा कभी 60 से लेकर 65 मृतकों की चर्चा। मृतकों की संख्या न्यूज पेपर हो या तत्कालीन मुख्यमंत्री या डॉ० पण्ड्या के बयान जो लगातार घटते-बढ़ते रहे। इस पर गहरी जाँच होनी ही चाहिए तथा सत्य का पता देश व दुनिया को लगना ही चाहिए। राज्य सरकार द्वारा कराई गई जांच का क्या परिणाम रहा? यह भी जानकारी में आना चाहिए।

- राम आसरे



सम्पादक महोदय,
अखण्ड ज्योति संस्थान

12 मार्च 2012

## परम आवश्यक मानसिक स्वास्थ्य

वर्तमान परिदृश्य में मनुज निराशावादी होता जा रहा है। गंभीरता और एकाग्रता से दूर हो अल्पभावुकता व छोटी-छोटी बात पर उत्तेजना और उदरपूर्ति की चिंता ने ग्रहण कर लिया है। मानव जीवन वरदान नहीं वरन अभिशाप होता जान पड़ता है। इसका मुख्य कारण मानसिक रूप से स्वस्थ्य न होना ही है।

मानव शरीर पंचतत्वों द्वारा निर्मित जिसमें मन का स्थान प्रधान है। शरीर को गौण, क्योंकि मन चेतन है शरीर जड़। मानसिक स्वास्थ्य पर ही अधिक सीमा तक शारीरिक स्वास्थ्य निर्भर है। पाश्चात्य संस्कृति के लोगों का मानना है आरोग्य का दृढ़ साधन मानव मन ही है, मन की शुद्धि से ही आरोग्य प्राप्त होता है। इसी सिद्धांत के आधार पर नवीन चिकित्सा प्रणाली जिसे हम मनोवैज्ञानिक चिकित्सा कहते हैं। इस चिकित्सा से असंख्यों लोग लाभ प्राप्त कर रहे हैं, सही ही प्रतीत होता है क्योंकि मन विचारों की उत्पत्ति का स्थान है, सही व गलत का प्रभाव मानव शरीर के प्रत्येक अवयव पर पड़ता है। मन संतुलित है तो सभी कार्य सही होंगे, शरीर को किसी भी क्रिया में रोग नहीं आता, शरीर पूर्ण स्वस्थ रहता है, फिर हर किसी असफलता से व्यथित होकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ नहीं हो सकते।

भगवान बुद्ध अनुसार-''इस समय हम जो कुछ भी हैं, उसके चैतन्यकर्ता हमारे विचार हैं। यदि मनुष्य के मन में पवित्र विचार हैं तो सुख परछाई की तरह उसके पीछे चलता है।'' एक विद्वान का कथन है- विचार एक फूल है और सुख-दुःख उसके फल हैं। मानव जैसी खेती करेगा प्रतिउत्तर में वैसे ही मीठे-खट्टे-कडुए फल प्राप्त होते हैं। मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने का साधन पौष्टिक आहार, औषधि नहीं वरन पवित्र एवं उच्च विचार हैं। इसके उपचारक को अभ्यास करना व कराना बेहतर यही होता है।

नकारात्मकता को रोगी के अंदर से हटाना होगा कि मैं यह नहीं कर सकता, अब मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ, मैं पूर्ण निरोगी हूँ, मेरे सारे अंग और अवयव सभी सही हैं, मैं मन का गुलाम नहीं वरन मन मेरा गुलाम है। इसके सतत अभ्यास से आश्चर्यजनक सफलता प्रतीत होगी। बात केवल कल्पित ही नहीं है प्रत्युत हमें इसके अनेकानेक उदाहरण देखने को मिल जाते हैं। विश्व में प्रायः सभी महापुरुषों ने मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करके ही अपने जीवन का निर्माण किया है।

मनुष्य प्रकृति में अनेक विशेषताएँ भरी पड़ी हैं देवत्व और पशुता, दोनों ही इसके अंदर समाहित और सन्निहित होते हैं। मनुष्य का विकास पशुता से देवता की ओर होता है, इसलिए मन पशुता वाले व्यवहार में अधिक सहजता अनुभव करता है और बारंबार इसी के इर्द-गिर्द मंडराने में अधिक रुचि दरसाता है। निकृष्टता से उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने में बहुत कठिनाई महसूस करता है। परंतु यह असंभव नहीं होता, निरंतर प्रयास और अभ्यास के द्वारा विकृत चिंतन से मन हट कर उत्कृष्ट चिंतन की ओर, रोग से निरोग की ओर अग्रसर होता है। इसको रूपांतरित करना सहज और सरल नहीं है बड़ा ही कठिन कार्य है यह एकाएक नहीं होता, बड़े ही धैर्य और सावधानीपूर्वक इसे किया जा सकता है। इसे सफलतापूर्वक करने हेतु साधक को साधना करनी होगी, विशेषज्ञता को प्राप्त करना होगा, व्यवहारिकता में उतारना होगा, मात्र किताबी जानकारी से भी यह संभव नहीं है। अभ्यास और सतत अभ्यास ही इसका सही, सीधा रास्ता है। क्योंकि ऐसा अभ्यास न होने से सम्भव है दोनों का ही नुकसान हो। जैसे सपेरे सांपों को पकड़ते हैं तो उनको उसका अभ्यास है और विपरीत परिस्थिति में उसका इलाज भी वे जानते हैं, तभी वे पूर्णतयः सफल हो पाते हैं। यह ज्ञान उन्हें किन्हीं पुस्तकों या स्कूलों से नहीं वरन अभ्यास व उनके हितैषी परिजनों द्वारा ही प्राप्त होता है।

मानव मन के विकारों पर विजय प्राप्त करना बहुत ही दुष्कर काय है, परंतु सफलता पर विजेता को सर्वत्र ही सुख का सागर लहराता हुआ



दृष्टिगोचर होगा। मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए सबसे सफल एवं सुगम उपाय है व्यक्ति के दैनिक दिनचर्या छोटे-छोटे कार्य जैसे भोजन करना, कपड़े पहनना, वस्तुओं को यथास्थान रखना आदि की भी सावधानी रखनी होगी। वर्तमान परिवेश में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारिवारिक सभी प्रकार की गहन समस्याएँ उपस्थित हैं, जिन्हें उत्तम और स्वस्थ विचार ही सुलझा सकते हैं।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

शान्तिकुन्ज संचालन तन्त्र द्वारा तथ्यों को छिपाने और सच्चाई पर पर्दा डालने की नीति सर्वविदित है। साधकों-कार्यकर्ताओं द्वारा एक-एक पैसा एकत्र कर केन्द्र में पहुँची धनराशियों के अपव्यय और उसकी कमियाँ छिपाने में बेदर्दी के साथ किए गए खर्च के सभी मामलों की आयकर विभाग एवं सी.बी.आई. द्वारा लोकहित में बिना कोई देर किए व्यापक गहन जांच अवश्य कराई जानी चाहिए। - राम आसरे

सम्पादक महोदय,
अखण्ड ज्योति संस्थान

17 मार्च 2012

## घातक है आवेश इससे बचें

मानसिक बुखार की तरह ही आवेश एक ऐसा छण है जो शरीर के द्वारा चिल्लाने, सिर पटकने या कुछ अपना अनिष्ट करने के उपरान्त ही शान्त होता है। जब आवेश आता है तो उस समय पूर्ण परिवेश को वह अपने अनुरूप एवं अनुकूल देखना चाहता है, जो कि संभव नहीं है। सभी की अपनी स्वतंत्र विचारधाराएँ है। इसी तरह परिस्थितियाँ अनेक झंझावतों से निकलती हुई अपना खाका खींचती हैं, उनपर इतना अधिकार किसी का नहीं कि इच्छामात्र से अनुकूलन को आमंत्रित कर सके और उसे सदा वशवर्ती बनाए रह सके। आतुर व्यक्ति में इतना धैर्य नहीं होता कि वह परिस्थितियों के अनुरूप वह विवेक का सदुपयोग कर सद्चिंतन कर सके। वह तो मन में उत्पन्न आवेश, आकांक्षा के अनुरूप प्रतिउत्तर में उसकी पूर्ति कैसे भी करना चाहता है ।

ऐसी स्थिति में व्यक्ति को धैर्य रखते हुए परिस्थिति से तालमेल स्थापित करना चाहिए। उत्तेजना में लिया गया निर्णय किसी सार्थक मुकाम तक नहीं पहुँचा सकता। आतुर होने पर व्यक्ति बहुत उतावला होता है, उसकी पूर्ति न होने पर किसी न किसी को दोषी ठहरा कर अपने को सही साबित करता है। हर चाहना के लिए व्यक्ति को उतावला न होना चाहिए, चाहना की प्राप्ति सही तरीके से ही करनी चाहिए। यदि समय उपयुक्त नहीं है तो सही मनःस्थिति अपनाकर अनुरूप परिस्थितियों का निर्माण किया जा सकता है। मात्र इच्छा करने से कोई भी वस्तु प्राप्त हो यह संभव नहीं, उस हेतु प्रबल पुरुषार्थ मनोयोग के साथ करना पड़ता है। सकारात्मक सोच से बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है परंतु नकारात्म सोच तन, मन, धन सभी का ह्रास ही करती है।

तानाशाही तरीके पूर्व में या अभी भी समाचार में सुनने को मिलते हैं तानाशाह अपनी तृष्णा को शांत करने के लिए, अहं को पोषित



करने के लिए बलात् कार्य करते आज भी समाज में सुनाई-दिखाई पड़ते हैं। शोषित की हिम्मत नहीं कि कुछ बोल सके, शासन व प्रशासन पूर्ण रूपेण उसका सहयोगी होता है। इस प्रकार के व्यक्ति जिसे एक बार अपराधी मान लेते हैं, उससे प्रतिशोध लिए बिना नहीं रहते। शत्रुता को देर तक जकड़े रहते हैं। दृष्टता अपनी चरमसीमा पर पहुँच जाती है जिसके दूरगामी परिणाम से ये अनभिग्य होते हैं क्योंकि इन कृत्यों से ये मानसिक विकृतचित्त रोगी हो जाते हैं।

आमतौर पर दुराचार या हत्याकांड आवेशग्रस्त स्थिति में ही होते हैं जो इसके आदी हो जाते हैं वे इसे सुनियोजित तरीके से परिणाम देते हैं, जिसके कारण उस पर किसी भी भावसंवेदना का प्रभाव नहीं पड़ता। दूसरा एक और कारण है- लालच। चाहे कैसे भी धन की प्राप्ति हो सही या गलत तरीके से उसे कर गुजरने में उसे गुरेज नहीं होता। आवेशग्रस्त या मनोविकृत लोग नृशंसता का रास्ता भी अपना लेते हैं। क्योंकि उन्हें किसी की पीड़ा से कोई सहानुभूति नहीं होती, वे ऐसे कुकृत्य करते जाते हैं कि उन्हें ध्यान ही नहीं रहता कि उनने जो कृत्य किया वह किस श्रेणी में आता है।

पीड़ित जो भी व्यक्ति है उसको कितनी पीड़ा सहनी पड़ी, उसकी तड़प से उसे कोई फरक नहीं पड़ता, यह एक अपराधी मानोविकार के लक्षण हैं। ऐसे लोगों के साथ रहने वाले लोगों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है, आदर्शों पर चलने वाला भी उस पाप का आंशिक भागी बन जाता है फिर धीरे-धीरे उस सहचरी या उसके अनुयायी में भी वही मनोविकृत घर कर जाती है। कभी-कभी तो इस मनोविकार के लोग एवं उनके अनुयायी पलायन या आत्मघात तक की कल्पना करने लगते हैं। लेकिन ऐसा करने वाले से उसके परिजन, स्वजन को कितना कष्ट एवं कठिनाई होगी इसके बारे में वे नहीं सोचते हैं।

मानव में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों होती हैं। देववृत्ति एवं राक्षसवृत्ति, श्रेष्ठता और दुष्टता विद्यमान रहते हैं। मनुष्य अपने कार्यों से उनको पोषित व पल्वित करता है। इसके लिए जन्म से कोई जरूरी नहीं कि श्रेष्ठ कुल का व्यक्ति श्रेष्ठ होगा। सद्कार्य, सज्जनता को अपनाकर देवत्व

को जाग्रत किया जा सकता है। इसके विपरीत दुश्चिंतन, कुक्रत्यों को अपना कर राक्षसवृत्ति हो सकती है। आवेशी असहाय पर अनीति करते-करते इतने कठोर हो जाते है जो दूसरों का अहित करने में कोई भी रास्ता अपना सकते हैं। यदि समय रहते इस रोग से पीड़ित हाथी पर अंकुश से नियंत्रण नहीं किया गया तो सारी बनी बनाई बगिया को तहस-नहस ही करेगा जिस हेतु वह स्वयं के साथ, उसके सहचर भी जिम्मेदार होंगे।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

गीत गाने की फुर्सत नहीं!
और नाचने की फुर्सत नहीं!
और उपद्रव करने की फुर्सत है!
हिन्दू-मुस्लिम दंगा करना हो
तो बिल्कुल फर्सत है!
ओ बलात्कार करना हो,
तो फुर्सत है!
दलितों, आदिवासियों के झोपड़े
जलानें हों तो फुर्सत है!
और चुनाव लड़ना हो तो फुर्सत है।

- ओशो



सम्पादक महोदय,
अखण्ड ज्योति संस्थान

07 अप्रैल 2012

## साधना बिना अत्मबल के संभव नहीं

भजन, चिंतन, मनन और समापन चार भागों में विभाजित है साधना। भजन का अर्थ है ईश्वर की समीपता। उसे अपने में और अपने को उसमें समाहित कर देना। चिंतन का अर्थ है अपने स्वरूप का, लक्ष्य के कर्तव्य का स्पष्ट चित्र मनोभूमि में प्रखर करना। मनन का अर्थ है जीवन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए आदर्शों को अपने जीवन में, गुण-कर्म -स्वभाव में समन्वय करना। समापन का अर्थ है हर समय अपने मानसिक चिंतन और शारीरिक कर्तव्य पर परिवीक्षा अधिकारी की तरह निरीक्षण, नियंत्रण तथा अव्यवस्था का तत्काल निराकरण करना।

गायत्री रूप में प्रतिबिम्बित पूज्यवर रूपेण परमात्मा मुझे इतनी शक्ति देना कि संकटों से घबराकर भागूं नहीं, उनका सामना करूँ। मैं आपके चरणों में अपने को अर्पित कर बस यही चाहता हूँ कि मुझे अपने दुखों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति दो, दुखों को थोड़ा बनाए रखो जिससे मैं आपको भूलूं नहीं। आपका विश्वास हमेशा मेरे मन मंदिर में दीपशिखा की तरह अखण्ड, अविराम प्रज्वलित रहे। मुझे इतना कमजोर न होने देना कि मैं आसन्न संकटों को देखकर हिम्मत हार बैठूँ। न ही अहंकारी बनूं, न ही अकर्मण्य। स्वयं को तुम्हारे चरणों में समर्पित कर श्रेष्ठता की ओर बढ़ सकूँ। साथ ही इतना साहस भर देना कि अकर्मण्य, ढोंगी, बनावटी, चापलूस व अराजक तत्व के सहारे मसीहा बनने की चाहना रखने वालों से लोहा ले सकूँ।

सभी जानते हैं कि सफलता हवाबाजों को नहीं कर्मठ, सदाचारी, सत्यनिष्ठ को ही मिलती है। गंध रहित पुष्प के पास भौंरे नहीं आते। अपने चारों ओर भ्रमरों को मधुर स्वर के साथ गूँजते फिरते देखने का सौभाग्य उन्हीं पुरुषों को प्राप्त होता है जो अपने अंदर मनमोहनी सुगंध छिपाये बैठे हैं। कमल के फूल पर यदि भौंरों के झुंड मंडराते रहते हैं तो

यह भौंरों की कृपा नहीं, वरन कमल की विशेषता है। सभी जानते हैं कि कभी-कभी किसी को अनायास ही बहुत सी सुविधा-संपदा प्राप्त हो जाती हैं, जिन्हें भाग्य की देन कहा जाता है। यह अपवाद है। अनायास मिलने के भी दो कारण होते हैं या तो पूर्व जन्म का संचित कर्मफल शेष होगा जो अब प्राप्त हुआ है या अब कर्ज लिया जा रहा है जो आगे चुकाना पड़ेगा। हमें उतनी ही सफलताएं प्राप्त होती हैं, जितनी हम चाहना करते हैं और प्रयास करते हैं।

परिवार रूपी संस्था में अहंकारियों का कोई स्थान नहीं है। कमियों को दूर कर अच्छाइयों में परिवर्तित करना होगा, योग्यता बढ़ानी होगी न कि वाचालता। पूर्ण समर्पण ही अभीष्ट का समीप्य दिला पाता है। समर्पण मात्र कहने से नहीं, अपने को समर्पित करना होगा। लोक प्रवाह पतन और नरक की ओर बह रहा है इसमें बहेंगे तो उबरना मुश्किल होगा। लोग प्रशंसा करें तो समझना, तुम किसी निंदनीय आधार को पकड़े खड़े हो। लोग उपहास उड़ाएँ तो समझना, तुमने विवेकशीलता का परिचय देना आरंभ कर दिया। मछली की तरह धारा चीरकर लोक प्रवाह से उल्टे बहकर परिजनों को अपने आदर्श का प्रमाण देना पड़ेगा। माया और भ्रांति का सबसे बड़ा लक्षण यह है कि मनुष्य लोगों का मुँह तके, अपनी प्रशंसा सुनने की आशा करें। किसी के स्वजन संबंधी कदाचित ही किसी को महान बनने का परामर्श देते हैं। उनको बड़प्पन पसंद है, भले ही वह कितने ही अवांछनीय तरीकों से उपार्जित किया क्यों न हो। यह आत्मबल के बिना संभव नहीं है।

आत्मबल का अर्थ है- दिव्य प्रयोजों के लिए बढ़ चलने के समस्त अवरोधों को कुचल सकने वाला प्रचंड शौर्य और अटूट साहस। हमें आत्मबल संग्रह करना चाहिए और देवमानव की भूमिका संपादित करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए। ईश्वर की झाँकी जीवसत्ता की संरचना और संभावनाओं में देखी जा सकती है। यदि सही तरह से उपासना की जाय तो वे सभी वरदान उपलब्ध हो सकते हैं जो ईश्वर के अनुग्रह से



किसी को कभी मिल सके हैं। जीवन का उद्देश्य है अपने अंतराल में छिपे दिव्य का, अद्भुत का, सुन्दर का दर्शन कराना। उसे ईश्वर के साथ जोड़ देना जो इस ब्रह्माण्ड की आत्मा है, पूर्ण है और वह सब है, जिसमें मानवी कल्पना से कहीं अधिक सुख है। ईश्वर को हमें समझना है तो हम जीवन को समझें। ईश्वर को पाना है तो जीवन को प्राप्त करें। अपने आपको निर्मल करें और उस महान अवतरण को प्रतिबिम्बित करें जो प्रेम के रूप में आत्मसत्ता के अन्तराल में आलोक की एक किरण जैसा जाज्वल्यमान हो रहा है।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

यदि
परिस्थितियों पर
आपकी मजबूत पकड़ है,
तो जहर उगलने वाले
भी आपका कुछ नहीं
बिगाड़ सकते।

# प्रज्ञा के तीन आधार

उस प्राणस्वरूप दुखनाशक सुख स्वरूप श्रेष्ठ तेजस्वी पापनाशक देवस्रूप परमात्मा को हम अपनी अंतरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

श्रद्धेय वीरेश्वर उपाध्याय जी,

सदर चरण वन्दन!

यह हमारे मदारी की बिना बैलों की गाड़ी में अगर थोड़ा सा धक्का आप मार दें तो मजा आ जाय, तो यह गाड़ी नहीं रुकेगी, स्वयं के वेदन से। वेदन को गुरुजी ने पुरानी भाषा में वेद कर दिया क्योंकि वेदन से शब्द बन नहीं पा रहा तो हुआ स्वयं वेदना, फिर देखा कि शब्द अभी अधूरा है तो संवेदना से मजा आ जाएगा। संवेदना अगर सम्पूर्ण होगी तो संग्रह शून्य पर ठहर जायगा। वंदनीया माताजी से हमने कभी अपने कानों सुना है कि मनुष्य में जब संवेदना जागने लगती है तो दिव्य आदान प्रदान होने लगता है।

गायत्री मंत्र भगवान की श्रेष्ठ प्रार्थना है, जिसके अन्तर्गत हम प्रार्थना करते हैं- हे तेजस्वी परमात्मा हम आपके श्रेष्ठ प्रकाश को अपने में धारण करते हैं। आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग से प्रेरित करें। आज भी इस मंत्र को ग्रहण करके कमजोर वर्ग के लोग भी महानता की ओर बढ़ रहे हैं। यह ठीक है कि इसके लाभ मिलने में कुछ समय लगता है। इस मंत्र के द्वारा हथेली पर पौधे नहीं उगाए जा सकते हैं। मनुष्य के जब कषाय-कल्मश धुल जाते हैं तथा उसकी पात्रता का विकास हो जाता है तब उसे लाभ मिलता है। गायत्री त्रिपदा है, श्रद्धा, चरित्र निष्ठा और उदारता। प्रज्ञा के तीन आधार हैं श्रुत प्रज्ञा, चिंतन प्रज्ञा और भावना प्रज्ञा। श्रुत प्रज्ञा का अर्थ है वह ज्ञान जो हमने सुन लिया अथवा शास्त्रों में पढ़ लिया। बड़ा उपयोगी है यह ज्ञान। इसका अपना लाभ है इससे प्रेरणा मिलती है, मार्गदर्शन मिलता है। लेकिन किसी बात को केवल श्रद्धापूर्वक मान लेना काफी नहीं है। इस ज्ञान से, मार्गदर्शन से प्रेरणा लेकर आगे कदम बढ़े तभी लाभ होता है अन्यथा केवल सुना या पढ़ा हुआ ज्ञान अंधश्रद्धा का रूप ले लेता है। जो गायत्री साधक के लिए हानिकारक होता है। गुरुजी ने अपने परिजनों को साधना की राह सुझाई है। दूसरी चिंतन प्रज्ञा का अपना महत्व है। चिंतन मनन



करना मनुष्य का स्वभाव है, उसका अपना प्राकृतिक धर्म है, वह हर बात अपनी बुद्धि की कसौटी पर कसकर देखेगा। जो कुछ देखा है, सुना है, पढ़ा है उस पर चिंतन मनन करके यह निश्चय करना कि कौन सी बात युक्तिसंगत है, न्यायसंगत है, धर्मसंगत है तभी उसे स्वीकार करना है, लेकिन इससे भी अगला कदम है, और यदि वह नहीं उठा तो यह स्थिति भी खतरनाक हो जायेगी। सिर पर एक भूत और सवार हो जायेगा कि मुझे ज्ञान प्राप्त हो गया- सारे शास्त्र पढ़ लिए, उन शास्त्रों को तर्क-वितर्क से समझ लिया। मैं बड़ा प्रज्ञावान हो गया। यह भी बड़ी भ्रांतिमय स्थिति है। जब तक अपनी अनुभूति के स्तर पर अपने ज्ञान की वृद्धि नहीं होगी, सही मायने में लाभ नहीं होगा, साधना के क्षेत्र में प्रवेश नहीं हो सकेगा। अतः सुनी हुई, पढ़ी हुई प्रज्ञा और चिंतन की हुई प्रज्ञा से लाभ लेकर अगला कदम उठाना है, भावना प्रज्ञा के क्षेत्र में प्रवेश करना है। अपनी अनुभूतियों के बल पर, अपने परिश्रम के बल पर, अपने सत्प्रयास के बल पर जो प्रज्ञा बढ़ रही है वह कल्याण-कारिणी प्रज्ञा है। उसी से मनोबल सधता है, उसी लेखन की कलम बहुत पैनी होती है क्योंकि पुरानी गांठें खुलती हैं और नई गांठें बंधती नहीं। गायत्री मंत्र लेखन की साधना का यही लक्ष्य है और भावनात्मक प्रज्ञा जाग्रत होने लगती है। महापुरुषों ने जो बात कही, अपने अनुभवों से कही। परन्तु वह हमारे काम की तभी होगी जबकि वह सारा अनुभव हमारे जीवन में उतरे। जो अनुभूति होती है उसे शब्दों में पूरी तरह नहीं उतारा जा सकता। कुछ तो अनुभूतियाँ ऐसी हैं जो इंद्रियातीत हैं, अंतिम सत्य की अनुभूति हैं, परम सत्य की अनुभूति हैं। इन अनुभूतियों को शब्दों में उतराना नितांत असंभव है, क्योंकि शब्दों की अपनी सीमा होती है। इसलिए सत्य की खोज में निकले साधक के लिए यह आवश्यक है कि सत्य को अपनी अनुभूति के स्तर पर जाने, यही भावना प्रज्ञा है। मित्रों गुरु है मदारी और शिष्य है जमूरा। मदारी अपने जमूरे को एक सेकेण्ड में पहचान लेता है परन्तु जमूरा मदारी को बिना साधना के नहीं पहचान सकता है। गायत्री मंत्र इसीलिए बनाया गया है कि भूले-भटके बच्चों की भूल सुधरे।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।.

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्।।

# पत्रोत्तर

## यूथ सेल शांतिकुंज, हरिद्वार से श्री आशीष जी का पत्र

सोमवार, 03 सितम्बर, 2012, पात: 9 : 24 बजे

श्री रामआसरे जी,

इतनी तत्परता आपने कभी गुरुदेव के विचार फैलाने में नहीं दिखाई होगी, जितनी इन झूठी बातों को फैला रहे हैं, शायद आप लोगों के लिए ऐसी बातों को फैलाना युग निर्माण हो सकता है, मगर ये हमारे समर्पण और निष्ठा को नहीं डिगा सकता। ये ओछी बातें जो केवल ओछे लोग ही फैला सकते हैं, हमारे पास पढ़ने और लोगों को पढ़ने के लिए गुरुदेव की 3000 पुस्तकें हैं। इसलिए ऐसी पुस्तकों की हमें आवश्यकता नहीं है।

अपने गंदे विचारों को आप युगऋषि की अंतर्वेदना कहते हैं आपको शर्म आनी चाहिए। हमारी दृष्टि में तो ये गुरुद्रोह है और ऐसा केवल आज नहीं जब गुरुदेव थे तब भी आप जैसे लोग मिशन को बदनाम करने का काम करते रहे हैं और उनकी क्या हालत है वह किसी से छिपी नहीं है।

ऐसा काम करने वालों को गुरुदेव ने भी अपना शत्रु कहा है उनका वीडियो भी आपको भेज रहा हूँ शायद इसे सुनकर आपको कुछ समझ में आये। गुरुदेव कहते हैं कि भीतर की गंदगी ही इस तरह बाहर आती है। अत: यही आप ऐसी बातें फैला रहे हैं ये आपके भीतर की गन्दगी है जो बाहर आ रही है अपनी समीक्षा करें। भगवान आपको तथा आपको गलत सलाह देने वालों को सद्बुद्धि दे।

आशीष कुमार सिंह जी,

इतनी तत्परता आपने पत्रानुसार गुरुदेव की दिनचर्या, गायत्री विधान और विचारों को जानने में दृष्टव्य नहीं हो रही, उनकी घुटन कभी महसूस हुई है क्या? क्या झूठे थोथे तर्क से कुछ भी सिद्ध किया जा सकता है? सत्य को कभी झुठलाया नहीं जा सकता है। युग परिवर्तन अवश्य होगा वाचालों से नहीं तपस्वियों के कंधे पर होगा। मगर आशीष जी आपने तो बच्चों सी बात लिखी, पहले तो आप समर्पण और निष्ठा का अर्थ समझें।



समर्पण का अर्थ है जैसे ईंधन आग में जलकर राख हो जाना। मनुष्य अपने अस्तित्व को मिटा देता है अपनी हस्ती को मिटा देता है और मन को टस से मस न होने देने का नाम निष्ठा है। यह वह खेल नहीं जिसे बच्चे खेला करते हैं। जबकि साधना है साधक का साध्य के मन में विसर्जन। लेकिन इस सरल सुगम सत्य की समझ बिरले को ही हो पाती है।

आशीष जी गायत्री त्रिपदा है- श्रद्धा, चरित्रनिष्ठा और उदारता। जिसे संकीर्णता का त्याग भी कहते हैं। गुरुदेव किसी के प्रारब्ध कर्मों को छेड़ते नहीं हैं बल्कि अपने शिष्य को साधना का बल देकर प्रारब्ध कर्मों का सामना करने की सामर्थ पैदा कर देते हैं। शिष्य कौन है? शिष्य बनने के लिए मन, वाणी, उदर, पेट, पेट की भूख, स्वाद, अस्वाद, चटोरापन और ब्रह्मचर्य इन कक्षाओं में पढ़ना पड़ता है शिष्य की श्रेणी में आयेगा तब। आप जैसे बढ़िया लोग मीठी वाणी से और डबडबाई हुई आँखों से आँसू दिखाकर परमपूज्य गुरुदेव कहकर काम चला रहे हैं। परन्तु यदि शिष्य है तो परमपूज्य गुरुदेव और 3000 पुस्तकों पर भी श्रद्धा, आस्था रखते हुए इनकी नये युग के अनुरूप स्वविवेक से नई व्याख्या वर्तमान परिवेश में करते हैं। नाहक का भोजन उद्विग्नता पैदा करता है हक का भोजन अपने गुरु की दौलत पर कब्जा करता है गुरु की दौलत है तप, त्याग, संयम, ज्ञान, उदारता, लोकहित जैसी प्रवत्तियों को कूट कूट कर भरना और मजबूत बाँध की तरह सुदृढ़ आधार पर खड़ा हो जाना। फिर एक वज्रशिला की तरह अपने को मोड़ने के लिए, दृढ़ता पूर्वक अड़ जाना। आप कहते तो हैं कि हम गायत्री मिशन के कार्यकर्ता हैं परन्तु गुरुदेव ने कहा था कार्यकर्ता पालतू होता है, परिवार की तरह परिजन होता है। लेकिन आप बंधुआ मजदूर है। बंधुआ मजदूर महाजन के अनुरूप कार्य करते हैं सिद्धांतों की अनदेखी करते हैं, कार्यकर्ता के सिद्धान्त होते हैं कार्यकर्ता बनने के लिए चार सिद्धान्त है-

1. शुद्ध आचार शुद्ध विचार,
2. कथनी करनी में एकता,
3. निष्कलंक जीवन,
4. अपमान सहने की क्षमता।

गायत्री और गुरु से तभी कुछ पाया जा सकता है।

आशीष कुमार जी यह सब कुछ आप तो आप रहे आपके वरिष्ठों के पास भी नहीं है।

इसलिए आपके वरिष्ठ कतराते ही हैं जबकि हम आपके गुरुभाई ही हैं। हम आप लोगों से निवेदन कर रहे हैं हम अभी साधक नहीं हैं प्रज्ञा योग का अभ्यास कर रहे हैं। आप भी मनोनिग्रह हेतु आगे बढ़ें इसके लिए तीन आधार हैं ये तीन कसौटियाँ है जिनके ऊपर कसा जा सकता है।

मनोनिग्रह- मन में व्याप्त विकारों, कामनाओं, रूढ़ियों को निकाल फेंकना, सादे कागज की तरह निर्मल जल सा साफ सुथरा होना। जिसकी कसौटियाँ हैं- 1. आप यह ब्रह्मविद्या प्राप्त करने के अधिकारी हैं भी कि नहीं और ब्रह्मविद्या आपको मिल सकती भी है कि नहीं। 2. ब्रह्मविद्या आप संभाल सकते भी हैं कि नहीं। 3. ब्रह्मविद्या की जिम्मेदारी वहन करने के लायक आपके भीतर कलेजा और हिम्मत है भी कि नहीं।

ये गुरुदेव की तीन परीक्षाएं हैं। चश्मा उन्हीं की आंखों में लगता है जिनकी आँखों में कुछ तो रोशनी होती है। चश्मा रोशनी बढ़ाने के लिए होता है नेत्रहीनों के लिए चश्मा अनुपयोगी ही है।उसी प्रकार ऊर्जा विहीन वाणी का कोई प्रभाव नहीं है। अहंकार बर्फ जैसा पहाड़ है जो दस मिनट में पानी-पानी हो जाता है। यह गुरुसत्ता का विधान है विज्ञान है। प्रकृति का यही नियम है।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं० : 09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

विचार
परिवर्तन हुये
बगैर
आचरण
में परिवर्तन
नहीं हो सकता



# पत्रोत्तर

## सौरभ जी का पत्र

दिनांक : 04 सितम्बर, 2012

Saurabh <saurabhkwe@gmail.com>

**Alert!**

ये न तो शांतिकुंज की कोई गलती है न ही रामआसरे जी जैसे भोले लोगों की यह ऐसे लोगों का षड़यंत्र है जो कि पकड़े नहीं जा सकते। वे हैं चेतना चोर, संगठन के दुश्मन और अच्छे लोगों को भरमा कर ऐसे कार्य करते हैं और संगठित नहीं होने देते। भगवान की वेदना ये ही है कि अच्छे लोग ऐसे एक दूसरे को देखते हैं और बिल्कुल ऐसी ही स्थिति उत्पन्न हो जाती है और दोनों अच्छे लोग अगल रहने में ही अपनी भलाई समझते हैं जबकि बुरे लोग अपने उद्देश्य को ऊपर रखकर आगे बढ़ते हैं और सफल होते जाते हैं। संगठन की शक्ति का भान उन्हें है इसलिए वे अच्छे लोगों को संगठित नहीं होने देते और उनकी भावनाओं को इसी प्रकार विकृत और कुंठित कर दोनो लोगों को अलग रखते हैं। इसलिए हमें संगठन की कमियों को देखने के स्थान पर उन लोगों से सावधान रहना है जो कि हमारी भावनाओं को विकृत करते हैं। इसी का नाम सद्बुद्धि है। श्रद्धा नाम है उस अभिव्यक्ति का कि गुरुजी ने डॉक्टर साहब को चुना और बनाया है तो कुछ खास कारण अवश्य होंगे। इसलिए अपनी भावनाओं को पोषित करें और अपने आसपास वालों की भावनाओं का भी खयाल रखें एवं उन्हें पोषण देते रहें।

-आपका अनुज एवं गुरुभाई

सौरभ जी-

'प्रभुता पाई काहि मद नाही' राम चरित मानस की पंक्ति युगों युगों तक अकाट्य सत्य उद्भासित करती आ रही है।

यदि एक निगाह, एक परीक्षा, एक बार में आंकलित किया हुआ व्यक्ति जीवन पर्यन्त उसी तरह बना रहता तो सम्भवत: तमाम आला

अफसर जो सेवा के प्रारम्भ के दिनों में चमत्कृत करने वाला आचरण, साहस, कर्तव्यनिष्ठा, देशप्रेम का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं परन्तु कालान्तर में वे ही बड़े बड़े स्कैन्डल, भ्रष्टाचार व्याभिचार में लिप्त हो जाते हैं। अनेकानेक शासक तानाशाह बन जाते हैं न जाने कितना परिवर्तन उनके चरित्र में आता है किसी से छिपा नहीं। खुफिया एजेन्सियाँ लगातार निगरानी रखती है फिर भी ऐसे लोगों में कमी नहीं आती।

आज का चरित्रवान कल तक चरित्रवान बना रह सकता है इसकी गारन्टी तो स्वयं भगवान नहीं दे सकते आप या हम क्या गारन्टी देंगे?

क्या संगठन पुस्तकों के मेले से, धन उगाहने से चलते हैं, नहीं। संगठन चलते हैं विचारों से, विचारों की क्रियाशीलता से, चरित्र में सद्विचारों को ढालने से। आज तक संगठन गुरुजी के निर्वाण के बीस सालों के बाद भी जनोपयोगी चिकित्सालय नहीं खोल पाया, गौशालायें जो हैं भी वे सब दिखावे के लिए, विश्वविद्यालय निर्धनों के लिए नहीं है। इतने बड़े संगठन से आशा थी जिला स्तर पर सनातन विद्या मन्दिर जैसे विद्यालयों को संचालित किया जाता, जहाँ से भावी चरित्रवान नागरिक बनाए जाते। मोहग्रस्त भावनाओं से कभी समाज लाभान्वित नहीं हुआ है। अन्धानुकरण मानसिक दिवालियापन है।

''हम हर बात को उचित-अनुचित की कसौटी पर कसना सीखें। जो उचित हो वही करें, जो ग्राह्य हो वही ग्रहण करें, जो करने लायक हो उसी को करें। लोग क्या कहते हैं, क्या कहेंगे, इस प्रश्न पर विचार करते समय हमें सोचना होगा कि लोग दो तरह के हैं। एक विचारशील दूसरे अविचारी।

विवेकशील पाँच व्यक्तियों की सम्मति, अविचारी पाँच लाख व्यक्तियों के समान वजन रखती हैं। विवेकशीलों की संख्या सदा ही कम रही है। वन में सिंह थोड़े और सियार बहुत होते हैं। एक सिंह की दहाड़, हजारों सियारों की हुआ-हुआ से अधिक महत्व रखती है। विचारशील वर्ग के थोड़े से व्यक्ति, विवेकसम्मत कदम बढ़ाने का दृढ़ निश्चय कर लें तो व्याप्त विकृतियाँ उसी प्रकार छिन्न-भिन्न हो जायेंगी जैसे प्रचण्ड सूर्य के उदय होते ही कोहरा। मनुष्य की शक्तियों, क्षमताओं को वांछित दिशा में लगाने



के लिए यह करना ही होगा।''(संदर्भ- युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम-66)

गुरुदेव ने तो वीरभद्रों की बात कही है, वे हैं कहाँ? क्या एक ही? चुना किसको किसने या प्रतिष्ठित कौन हुआ, किया किसने यह तो अंधकार में ही है.....। जिनको पता है वे या तो बाहर कर दिए गए या.....। खास कारण बने या बनाये गये यह भी गूढ़ता में गहराइयों में है.....। परिवर्तन की बात सब जगह लागू है तो यहां क्यों नहीं? ठहराव हर जगह बाधक ही होता है आध्यामिक विकास में तो ठहराव अर्थात शून्य!

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं.-09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

झूठा अपनापन
तो हर कोई जताता है।
यकीन मत करना
हर किसी पर,
क्योंकि
करीब है कितना
कोई
यह तो वक्त ही
बताता है।

# पत्रोत्तर

## आशीष जी का पत्र

05 सितम्बर, 2012

हम ये जानते हैं कि किस परिपेक्ष में ये बातें फैलाई जा रही हैं किन लोगों के द्वारा फैलाई जा रही हैं, राम आसरे जी तो केवल मोहरा हैं। ये उन लोगों के द्वारा पोषित हैं जो कल तक मिशन में अपनी बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षाओं को लेकर यहाँ आये और जब समूह में नहीं चल पाए, अपने अहम को नहीं पोषित कर पाए तो दूसरों के पास जाकर उनकी चाटुकारी करने लगे तथा उन्हें यहाँ की गन्दगी जाते ही दिखने लगी और इसका क्या भरोसा कि वे आज यहाँ हैं कल यदि वहाँ से निकाले जायें तो उनके विरुद्ध भी ऐसी ही किताबें न लिखें। नाम तो आपको पता ही होगा।

हम ये जानते हैं कि मिशन व्यक्ति नहीं होता मगर व्यक्तियों का संघ मिलकर मिशन बनता है। जिसमें हर व्यक्ति का मान उसकी इज्जत मिशन का मान और इज्जत बन जाती है। मिशन ही हमारा गुरु है गुरुदेव ने भी कहा आप की समन्वित शक्ति वो हैं। इसलिए मिशन के खिलाफ दुष्प्रचार करने वाले जान लें कि सूर्य पर कीचड़ उछालने का क्या परिणाम होता है। ऐसे लोगों के द्वारा व्यक्तिगत आक्षेप लगाकर बदनाम करना ओछा, घटिया और अक्षम्य कार्य है।

ऐसी बातें हमारी श्रद्धा तो कभी नहीं डिगा सकतीं मगर ये मैंने इसलिए लिखा है कि कोई और भाई या बहन इन झूठी बातों से अपनी श्रद्धा कम न करे और न ही साथ के भाई या बहनों की श्रद्धा घटने दे।

आशीष जी,

कहते हैं कि सच्चाई, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, व्यवहार में दिखाई पड़नी चाहिए, माना भाषण करने, लिखने या अपनी पीठ अपनों द्वारा थपथपाने को महिमामण्डित नहीं करना चाहिए। नींव के पत्थर की तरह मिशन का बोझ ढो सकने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। रंग रोगन साज सज्जा का दिखावा खोखले ही किया करते हैं। आलोचना सुनना और



उस पर व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाना ही पुरुषार्थ है। उद्विग्न होकर आलोचक की बुराई करना मात्र मेढकों सा टर्राना ही होता है।

धुँआ उठा है तो आग जरूर ही होगी यही प्रकृति का सनातन नियम है। यदि आलोचना झूठी होगी तो सच्चाई के सामने टिक नहीं पायेगी और यदि आलोचना सत्यतापूर्ण हुई तो उसे झूठा झूठा कह कर समाप्त नहीं किया जा सकता बल्कि उसे बढ़ाया ही जाता है। आशीष जी गुरुदेव ने जो कहा अपने अनुभव से कहा वह अनुभव हमारे जीवन में न उतरे हमारे किसी काम का नहीं जिस गुरु और गायत्री की बात आप करते हैं यह सब कुछ तपमूलक हैं। तप के द्वारा इस मूल्य को जो चुका पाता है वह इन सबका स्वामी होता है गुरु से आप देवता के रूप में काम ले सकते हो। देवता कभी बहकावे में नहीं आते देवता केवल तप और समर्पण चाहते हैं। माली बनिए मालिक नहीं प्रमाण दीजिए प्रवचन नहीं।

अनुभव के दो बोल, मनुष्य को जीवन के सफर में कई बार अनचाही ठोकरों से रूबरू होना पड़ता है पर बहुत कम ही लोग ऐसे होते हैं जो उन ठोकरों को महसूस करते हैं, वरना अधिकतर लोग तो कुछ ही पलों में फिर ठुकरा दिये जाते हैं। परन्तु जो ठोकर का एहसास करते हैं, वे ठुकराकर गिरते नहीं, बल्कि वे ऐसा संभलते हैं कि संसार उनको अपना आदर्श मानने लगता है, संसार उनके अनुभव के आइने में अपनी सफलता के चित्र देखने लगता है। विश्व के इतिहास में ऐसे विश्वामित्र के अनोखे अनुभव अनूठी अनुभूतियां और उनके संस्मरण सफलता के इस तथ्य के साक्ष्य रहे हैं कि उन्होंने जीवन की दौड़ में लगी हर ठोकर को मात्र अनजाने में लग जाने वाली चोट नहीं माना अपितु उन्होंने प्रत्येक ठोकर से लगने वाली चोट में चोटी तक पहुँचने का संकेत अनुभव किया। उन्होंने किसी भी लगने वाली चोट को क्षति नहीं वरन उन्नति को ओर बढ़ने का इशारा माना और यह सिद्ध कर दिया कि चाहे कितनी भी गहरी खाई में गिरने के बाद भी ऊँचाई पर पहुँचा जा सकता है। अर्थात किसी भी ठोकर से कभी भी सफलता की संभावनाएं समाप्त नहीं होतीं। जीवन की नदिया जिन दो किनारों के बीच होकर बहती है, उसका एक छोर असफलता है तो दूसरा सफलता भी है। जो लोग केवल असफलता के किनारे पर ही बैठकर कंकर फेंकते रहते हैं, उठती गिरती हुई लहरों के निरर्थक अनुभव में ही लगे रहते हैं, इसी

खेल तमाशे में उनके जीवन की सांझ हो जाती है और फिर अंधेरे तूफानों में गुम हो जाते हैं। किंतु जो असफलता को सफलता की निशानी मानते हैं, अभाव में प्रभाव की अनुभूति करते हैं, दबाव में अपने स्वभाव को संभाले रखते हैं, उन्हीं के लिए सफलता दोनों बाहें फैलाकर स्वागत करती है, और वे ही उस महासागर का महत्वपूर्ण हिस्सा बनते हैं। वेदमूर्ति पं०श्रीराम शर्मा जी का अवतरण हुआ जिन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि चाहे परिस्थितियां कितनी ही विपरीत क्यों न हों संघर्ष और साहस के बल पर उन्हें अनुकूल बनाया जा सकता है। तीव्र गति से बहते हुए जल की धार को तैरकर पार किया जा सकता है, आंधी और तूफानों के प्रबल कर्व को भी धैर्य तथा संयम के साथ मोड़ दिया जा सकता है। अंधेरा कितना भी घनघोर क्यों न हो दीप की लौ से उसे भगाया जा सकता है बस अगर जरूरत है तो जज्बे की। जज्बा भी ऐसा कि किसी भी अनहोनी को होनी में बनाने की हिम्मत रखता हो। गुरुदेव ने अपने अनुभव, अनुभूतियों के साथ हमें प्रसाद रूप में ज्ञान के अनमोल मोती प्रदान किए हैं। उनके हर वाक्य में सफलता की विधि छिपी हुई है। सफलता और महानता किसी की पैत्रिक नहीं है। इन्हें तो वे प्राप्त करते हैं जो प्रार्थना के अनुरूप पुरुषार्थ, प्रेरणा के अनुकूल परिश्रम करते हैं। खोज का रहस्य है वह देखना जिसे सबने देखा है और वह सोचना जो किसी ने भी नहीं सोचा। जीवन दूध के समुद्र की तरह है, आप इसे जितना मथेंगे, आपको इससे उतना ही मक्खन मिलेगा। अगर आप सफल होना चाहते हैं तो आपको सफलता के घिसे-पिटे रास्तों पर चलने के बजाय नये रास्ते बनाने चाहिए।

आदिशक्ति गायत्री के सामने बैठकर प्रतिदिन -आयु, प्राणम्, प्रजाम, पशुम, कीर्तिम, द्रविणम्, ब्रह्मवर्चसम सात वरदान मांगते रहते हैं। आपने आलस्य, प्रमाद, वासना, तृष्णा, लोभ, मोह, अहंकार इन सात महादैत्यों से छूटने की तड़पन महसूस की है क्या?

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्।।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं.-09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com



# पत्रोत्तर

## आशीष जी का पत्र

Youth Cell, Shantikunj, Haridwar
Sun, Sep 9, 2012

रामआसरे जी,

इतने शब्द यदि आपके जीवन में उतर जाते तो आपको इतना हल्ला नहीं मचाना पड़ता आपने कई पत्र लिखे जिसमें मुझे नसीहत ही देते नजर आये किन्तु मैं मेरे प्रश्न तो अब भी वहीं हैं जिनका उत्तर न देकर अपना ऊपरी ज्ञान (आपके ही शब्दों में गाल बजा रहे हैं) दे रहे हैं।

मैं जानता हूँ इसका उत्तर आपके पास नहीं, कोई बात नहीं अपने आकाओं और सलाहकारों से पूछकर लिख दीजिये और

आशीष जी,

सादर अभिवादन!

आपका ईमेल पूर्वाग्रह से ग्रस्त प्रतीत होता है। सतही ज्ञान में तेज नहीं होता, शायद इसे अभी आप महसूस नहीं कर सकेंगे। मेरे आका तो परमपूज्य गुरुदेव ही हैं और सलाहकार भी हैं उनके द्वारा दिया गया जो थोड़ा बहुत ज्ञान है उसे ही सम्हाल पाया हूँ। उत्तर देने योग्य प्रश्न ही उत्तर देने लायक होते हैं। कुतर्क और भेड़ का अन्धानुकरण मानसिक दिवालियेपन का प्रतीक है। अच्छा हो आप तथ्यों को पढ़ें, मनन करें और कुण्ठाओं को निकालें और फेंकें!

विदित हो हमने भी संसार का सुवास ढूढ़ा, एक नन्हा सा पुष्पबीज एक दृढ़ निश्चय कर अपने गुरु की गोद में अपने गुरुसंकल्प के साथ करवट बदल रहा था। धरती बोली-बावले! तू मेरा बोझ सहन कर पायेगा। पर मृत्तिका-कणों व जल की कुछ बूँदों के कुछ सहयोग से, वह ऊपर उठने लगा। उगी पौध पर, वायु देवता का प्रकोप बरसा- तेरी यह हिम्मत। मेरे वेग के समक्ष कैसे टिकेगा। फूल का वह नन्हा पौधा विनम्रतापूर्वक दायें-बायें झुककर आगे बढ़ता रहा। उपवन में उगी झाड़ियाँ उसका बढ़ना नहीं देख

पाई। चारो ओर से उस पुष्प-वृक्ष पर आघात जारी रहा, पर उसने हिम्मत नहीं हारी, बढ़ता ही रहा। माली उसकी धुन पर मुग्ध हो उठा। उसने सारी झाड़ियों को काट गिराया। सूर्यदेव ने पौधे को उगते देखा, तो बोले- मेरे प्रचंड ताप के समक्ष क्या टिक सकेगा। कर्मठ, कर्मयोगी पौधा कुछ नहीं बोला, निरंतर तपकर आगे बढ़ता रहा। प्रथम कलिका विकसित हुई और सारे संसार ने देखा कि बीज गला, वह वृक्ष बना, पुष्पों की सुवास उसने फैला दी। प्रतिकूलताओं से जो न घबराए, निरंतर बढ़ता ही रहे, उसे कोई रोक नहीं सकता।

गायत्री ब्रह्मविद्या का जादू है चमत्कार नहीं।

*''गुरु से है अगर शौक मिलने का,*
*तो कर खिदमत फकीरों की,*
*यह जौहर मिलते नहीं,*
*अमीरों के खजाने में।*
*वह कौन सा है उकदा,*
*जो हो नहीं सकता,*
*तेरा जी न चाहे तो हो नहीं सकता,*
*छोटा सा कीड़ा पत्थर में घर करे,*
*यह दिल दिलबर में घर न करे।''*

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्।।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं.-09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

ईमानदारी एक बहुत महंगा उपहार है।
इसकी उम्मीद घटिया लोगों से मत करें।



# प्रधानमंत्री, भारत सरकार को पत्र

सेवा में,

श्रीमान् मनमोहन सिंह जी
प्रधानमंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली।

विषय: गायत्री परिवार के संस्थापक पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के दामाद का वास्तविक स्वरूप

महोदय,

ब्रह्मलीन परमपूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा क्रान्तिकारी विचारों, व्यवहारों से पोषित एक आध्यात्मिक मिशन ''गायत्री परिवार मिशन'' का जन्म हुआ, जिससे प्रभावित व लाभान्वित हुये असंख्य जन इस मिशन से जुड़कर अपनी जीवन यात्रा में साधना, तप एवं संयम का समावेश कर समाज की सेवा में लगे हैं। अपनी आय का एक अंश इस मिशन की उन्नति एवं प्रसार हेतु समर्पित कर रहे हैं।

इस मिशन के प्रणेता पं. श्रीराम शर्मा के प्रयाण के बाद उनके दामाद डॉ.प्रणव पाण्ड्या ने इस मिशन की मूल भावना को तिरोहित कर इसे एक धन कमाने का साधन बना लिया है। इस लिप्सा ने इन महाशय को इतना गिरा दिया कि इन्होंने विभिन्न ट्रस्टों की स्थापना कर दी। जिसमें कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय भी सामाजिक अनुदानों से व गायत्री परिवार के परिजनों के सहयोग से स्थापना कर स्वयंभू कुलाधिपति बन बैठे व इस पर आजीवन कब्जा जमाये रखना चाह रहे हैं।

इनकी इस प्रकार की गतिविधियों से मिशन की पारदर्शिता बाधित होती है। इनकी चरित्रहीनता लम्पटता की स्थिति इनती भयावह एवं व्यापक है कि सब कुछ बता पाना सम्भव नहीं है। परन्तु कुछ एक उदाहरण हैं जिन्हें प्रमाण स्वरूप में आपको दिखाना चाहता हूँ जो आपके माध्यम से आम जन तक पहुँच सकें-

1. इनका प्रथम सफल प्रयास रहा है पूज्यनीय आचार्य जी की आसमयिक मृत्यु। गुरु जी की मृत्यु जिन परिस्थितियों में हुयी वह जाँच का

विषय/घटना है। गुरु जी कोमा में थे जबकि प्रचारित किया गया कि वे सूक्ष्मीकरण साधना में हैं। पूज्य गुरुदेव की स्थिति की जानकारी होने पर मिलने पहुंचे उनके अपने ही पुत्र श्री ओमप्रकाश को नहीं मिलने दिया गया, न ही बेटियों (दया व श्रद्धा) को कभी अपने पिता के पास आने दिया गया। जिसके साक्षी श्री बलराम सिंह, श्री रामजीवन चौबे, श्री लीलापति शर्मा सहित अन्यान्य वरिष्ठ परिजन हैं। स्थूल शरीर को त्यागने से पूर्व अंतिम समय के दिनों में किसी को भी नहीं मिलने दिया गया यह क्यों कर, क्योंकि यह यदि पूर्व घोषित था तो मिलने की न सही दर्शनार्थ की तो स्थिति हो सकती थी?

2. पूज्यनीया माताजी के इलाज में भी जिस प्रकार का छल प्रपंच किया गया है कि परिजनों को वस्तुस्थिति का सही ज्ञान नहीं हो पाया। अन्य महिला के नाम से माता जी का इलाज दिल्ली के बत्रा, मूलचन्द्र आदि कई अस्पतालों में लगभग 1 वर्ष तक कराया गया और घोषित किया गया कि वह हिमालय साधना पर गई हुई हैं। माता जी द्वारा भी अपने आखिरी दिनों के समय में कहा जाता रहा कि मुझे मथुरा ले चलो यहाँ मुझे मेरे पति के तरह ही स्थिति प्रदान की जायेगी परन्तु कोई भी वरिष्ठ डॉ० प्रणव के आगे कोई साहस नहीं कर सका, माता जी की मृत्यु पर भी एक रहस्यमय पर्दा डाल कर उनकी मत्यु को संदिग्ध बना दिया गया।

3. देव संस्कृति विश्वविद्यालय को अपना स्वयं का घर समझने वाली मूलतः राजस्थान की निवासी गायत्री परिजन की बेटी, विश्वविद्यालय की छात्रा का अपहरण चार पुरुषों के माध्यम से, जिसके प्रमाण साक्ष्य समस्त को उपलब्ध हैं और उससे अधिकाधिक वरिष्ठ परिजन भिग्य भी हैं।

4. डॉ० प्रणव की अनुज बहू जिसका पता नहीं चल पा रहा है। डॉ० प्रणव जैसे सुविधा सम्पन्न व्यक्ति द्वारा कोई प्रयास नहीं किया गया कि वह बहू कहाँ और किस स्थिति में है। कारण स्पष्ट है कि बहू को गायब कराने में इन्हीं की साजिश है।

5. अपने विश्वविद्यालय की छात्रा का पहले शोषण फिर पोषण आज भी देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में अनैतिक सम्बन्ध के कारण श्रेष्ठ पद पर पदस्थ कर रखा है जो कि आज सर्वविदित है।



आज गायत्री परिवार दूब की तरह धरती पर बहुत दूर-दूर तक फैला है। परन्तु बेल की तरह व्यक्तित्व एक भी आदमी नहीं ऊँचा कर सका। प्रणव जी गायत्री साधना एवं अध्यात्म की बातें तो करते हैं परन्तु हैं उससे शून्य व निरत। गायत्री का साधक आलस्य, प्रमाद, वासना, तृष्णा, लोभ, मोह और अहंकार इन सात महादैत्यों से दूर रहता है परन्तु आज तो डॉ. प्रणव सहित गायत्री परिवार के हृदयस्थल में पदस्थ वरिष्ठ एवं कनिष्ठ परिजन अपने सहचरों सहित इन सातों दैत्यों को धारण किए हुए परिलक्षित हो रहे हैं।

भवदीय

रामआसरे

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं.-09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

न हिन्दू बनो
न मुसलमान
न सिख
न ईसाई
बस
इंसान को इंसान
रहने दीजिये
फिर होंगे
सब
भाई-भाई

# पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुरूप क्रान्ति की पृष्ठभूमि: धर्मतंत्र से लोकशिक्षण

श्रद्धेय प्रणव जी,

विश्व में अपनी पहचान के लिए प्रसिद्ध हमारे देश का एक और कुंभ अब समापन की ओर है। धर्मतंत्र के माध्यम से लोकशिक्षण का बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य हम सबके आराध्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने प्रारम्भ किया। इसी उपक्रम में क्रान्तिधर्मी साहित्य का सृजन कर जनमानस को परस्पर जोड़कर वृहद परिवार का सृजन करने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किया। उनके अथक प्रयास से व्यापक रूप में आमजनमानस को नवनिर्माण हेतु आशान्वित किया। जिसके फलस्वरूप गायत्री परिवार रूपी पवित्र मिशन के प्रति लोकश्रद्धा सहज ही बनती चली गई और विभिन्न धर्म संस्थाओं से जुड़े धर्मपरायण लोगों को आशा बंधी कि गायत्री परिवार धर्मतंत्र का सफल नेतृत्व करने में सक्षम एवं समर्थ है।

उन्होंने अनुभव किया कि युग के प्रवाह को बदलने जैसे परिवर्तनों के लिए ऐसे प्रखर लोकशिक्षण की आवश्यकता पड़ेगी, जो आस्थाओं के मर्मस्थल तक पहुँचकर वहाँ अभीष्ट उथल-पुथल उत्पन्न कर सके। घिसी-पिटी वार्ताओं को चर्चा में लाकर अपने को सिद्धांतवादी सिद्ध करते हुए तोतारटंत की तरह वर्तमान में दोहराते रहना व्यर्थ है। तर्क और तथ्यों को आधार मानकर हमें युगचिंतन इस स्तर का देना होगा, जो आज की विकृत आस्थाओं को उखाड़ कर फेंक सके और उसकी जगह उत्कृष्ट एवं वर्तमान में उनकी मान्यताओं को सिद्ध कर प्रमाण प्रस्तुत कर सके। यह कठिन नहीं, वरन सरल व सहज है क्योंकि वास्तविकता यही है। यदि लोकशिक्षण की ऐसी पैनी व्यवस्था बन सके तो युग परिवर्तन दिखाई पड़ने लगेगा। इसके लिए प्रमाणिकता की ही आवश्यकता है जिसे आचार्य जी ने अपने जीवन में सिद्ध करके दिखा दिया है। जिन हाँथों में बागडोर सौंपी वह वर्तमान समय में उसको छूने के भी अधिकारी नहीं प्रतीत हो रहे हैं। अपने जीवन काल में जिन शरीर रूपी वीरभद्रों का निर्माण कर मिशन



की बागडोर थमा आरूढ़ किया वे आज खोखले साबित हो रहे हैं। पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अध्यात्म के वैज्ञानिक स्वरूप को धर्मतंत्र से जोड़कर मजबूत डोर में पिरोते हुए ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना की। आचार्य जी ने डॉ० प्रणव को संस्थान का निदेशक बना धर्म और अध्यात्म का समन्वय कैसे हो, की बागडोर दी। उनके द्वारा न केवल कार्य दिए गए वरन पूर्ण स्वरूप तैयार कर और उसकी व्यवस्था बनाते हुए सुनियोजित रूप से कार्य करने का मार्गदर्शन दिया गया। परन्तु डॉ० प्रणव गुरूजी एवं माता जी के महाप्रयाण के बाद रक्षक की जगह भक्षक की भूमिका में अपना स्वरूप दिखाने लगे। वर्तमान समय में न ही प्रमाणिक शोधकार्यों की ओर दुनिया को आकर्षित कर सके न ही ऐसे कार्यों में संलग्न हुए जिससे गायत्री परिवार की छवि अध्यात्म के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत कर सके। जिसके कारण समाज निर्माण में नेतृत्व करने लायक गायत्री परिवार की भूमिका जो अग्रणी होनी चाहिए नहीं हो पा रही है।

आश्चर्य की बात यह है कि जितने प्रश्न आज हमारे पास हैं, उससे कहीं ज्यादा उत्तर हमारे पास हैं। परन्तु हम उन प्रश्नों को स्वयं अपनी जीवनशैली से न जोड़कर दूसरों को मार्गदर्शन देने का दंभ भर रहे हैं। इन्हीं कारणों से नेतृत्व क्षमता का ह्रास होता जा रहा है। पूज्यवर के कथनानुसार- 'बेटा परिवर्तन तो होगा ही, मेरा काम तुम नहीं करोगे तो मैं ईंट पत्थरों से अपना कार्य करवा लूँगा। मेरा सच्चा कार्यकर्ता वही है जो हमारे विचारों एवं कार्यों से प्रेम करता है न कि मेरे शरीर से। मेरे शरीर की पूजा अर्चना न करो, मेरे बताये कार्यों को संपादित करो। वर्तमान में तो उन्हें भी पीछे छोड़ दिया जा रहा है स्वयं की पूजा करवाई जा रही है वह भी लाइन लगवाकर।

*''बुराई पर बुराई कर रहा है,*
*यही तो हमारा भाई कर रहा है।*
*हमारे स्वर्ग जैसे घर के टुकड़े-टुकड़े*
*हमारा घरजमाई कर रहा है।''*

सेवा में,
सम्पादक महोदय
अखण्ड ज्योति संस्थान

विषय: क्या इन दोगली बातों से सम्भव है नारी जागरण व नारी उत्थान?

वर्तमान परिदृश्य में नारी अस्मिता की रक्षा के लिए चिंतन, गोष्ठी व कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। देश के छोटे-छोटे संगठन एवं क्षेत्रीय स्तर पर संगठित होकर लोग, नारी की पूर्ण रक्षा के लिए अपनी माँग कर रहे हैं; प्रदर्शन, रैली, कैण्डिल मार्च द्वारा आन्दोलन कर अपना रोष प्रदर्शित कर रहे हैं। परन्तु दुर्भाग्य नारी जागरण पर बड़ी-बड़ी बातें करने वाले व भाषण देने में निपुण गायत्री परिवार प्रमुख डॉ० प्रणव पण्ड्या के नेतृत्व ने उनकी कारगुजारियों के कारण ही गायत्री परिवार अभी भी आन्दोलनों से दूर भाग रहा है। अपने आपको छिपा रहा है। हो भी क्यों न, कई महिलाओं का चीरहरण प्रणव जी ने ही किया है। किस मुँह से आन्दोलन व आन्दोलन की बात करेंगे। भगवान इन्द्रदेव ने गलती से इसी तरह का अपराध किया, परन्तु गलती से उत्पन्न प्रायश्चित भाव के कारण पार्वती माता ने इन्द्रदेव का श्राप मुक्त किया था। परन्तु डॉ० प्रणव के अन्दर प्रायश्चित का कोई भाव नहीं है। प्रायश्चित के भाव जिनके अन्दर होता है वह कठोर से कठोर साधना करता है। मौन साधना उन्होंने अब तक जो भी की है सब नाटक मात्र ही है। प्रदर्शन के अलावा उन्हें कुछ आता ही नहीं। अपनी समीक्षा मौन होकर की ही नहीं प्रणव जी ने। वर्तमान में परिजनों हेतु पाँच दिवसीय मौन साधना चलाई जा रही है जिसमें अब दो व्यक्ति एक कमरे में रहकर साधना करने का विधान बनाया गया है। आत्म-जागरण की साधना के लिए एकान्तवास की आवश्यकता पड़ती है पर यह क्या प्रदर्शन और नाटक नहीं तो क्या है? न तो ये साधना करना जानते हैं न साधना कराना। ध्यान कराते हैं अपने पास डायरी रखकर, डायरी से निर्देशन देकर, जो कोई दूसरा लिखकर देता है। ये तो भोगी हैं- विशुद्ध भोगी। जो दस बारह घंटा



सोते हैं। सभी तरह के पकवान युक्त भोजन करते हैं। साधक का एक लगावान- एक खावन गुरुजी ने बताया था। जिसका अनुपालन कभी भी जीवन में न इन्होंने न ही इनके साथ दृष्टव्य होने वाले वरिष्ठों व ट्रस्टियों ने किया।

साधना जो बुनियाद है इस पवित्र मिशन की उसे भी ये ठीक से चला नहीं पा रहे हैं, शांतिकुंज में वही घिसीपिटे ढंग से नौ दिवसीय साधना चल रही है। साधना आन्दोलन को जो ठीक से चला नहीं सकता उसे मौका बार-बार कई आन्दोलनों का मिलता रहेगा और सभी चूकते रहेंगे। इसके पूर्व भी एक शानदार मौका मिला गुरुजी और उनके विचारों को विश्वव्यापक बनाने का- अन्ना जी के आन्दोलन में। परन्तु नियत डॉ० प्रणव की इतनी खराब रही कि नियति का सहयोग ही नहीं मिला। नियति सहयोग करने को तट पर है पर शुद्ध नियत हो तो.....।

लगभग 60 वर्ष का यह युग निर्माण आन्दोलन आज डॉ० प्रणव पण्ड्या के नेतृत्व के कारण चरमरा सा गया है और लकीर की फकीर बस बनी हुई है, और वही पीटी जा रही है। गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने युग निर्माण हेतु एक मशाल के रूप को प्रतिष्ठापित कर गायत्री परिवार के परिजनों को ज्ञान का प्रकाश दिया। उसे संभालने में डॉ० प्रणव के शायद हांथ काँप गये और न ही उस शक्ति पर विश्वास हुआ। जिसे नए रूप मे दिआ (DIYA) के रूप में परिजनों को प्रकाश देने का प्रयास कर रहे हैं जो कि असम्भव ही है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युग के निर्माण की आवश्यकता, युग की माँग जिसे समझ में नहीं आ रही है वह युग निर्माण आन्दोलन का नेतृत्व कैसे कर सकता है? आत्मीय परिजनों आज गायत्री परिवार के वर्तमान नेतृत्व पर बहुत बड़ा सवाल आ खड़ा हुआ है। इसी कारणवश प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया का सहारा लेना ही पड़ेगा। परिजनों यह कहने से कि गुरु जी देख रहे हैं.....ये कायरों की भाषा है। अनीति का विरोध होना चाहिए.....। अतएव अब विरोध खुल कर ही किया जायेगा.....। और किया जा रहा है.....जो आपके सामने है।

# संगी-साथियों का महत्व

श्रद्धेय प्रणव जी,

बड़े से बड़ा बुद्धिमान, शक्तिशाली, ऐश्वर्यवान, रूपवान यदि अपने संगी साथियों का चुनाव सही ढंग से नहीं करता है और ऐसे लोगों के सम्पर्क में आ जाता है जो लोभी, धूर्त, चापलूस और मौकापरस्त हैं तो समझिये कि उस बुद्धिमान व्यक्ति की बुद्धि, रूप व ऐश्वर्य सभी का ह्रास हो जाता है साथ ही वह हँसी का पात्र बन जाता है। मदारी के बन्दर की तरह उन संगी साथियों के इशारे पर नाचता रहता है।

दुर्बल शरीर को नई-नई किस्म की बीमारियाँ दबोचती हैं। डरपोक को डराने के लिए जीवित ही नहीं मृतक भी भूत-पलीत बनकर ढूँढ़ते आ पहुँचते हैं। शंकाशील लोगों को बिल्ली भी रास्ता काटकर डरा देती है। योजनों दूर रहने वाले ग्रह-नक्षत्र भी अपनी प्रकोपमुद्रा उन्हीं को दिखाते हैं, जिन्हें अकारण भयभीत होने में मजा आता है। अन्यथा वे अपने निजी कार्यों में ही इतने व्यस्त है कि किसी व्यक्ति विशेष का बिगाड़ या उपकार करना उनके वश से सर्वथा बाहर की बात है। आपकी भी स्थिति कमोवेश ऐसी ही है तथा कथित चाटुकारों से घिरे से आप ब्लैकमेल किये जा रहे हैं। आपकी छोटी-मोटी गल्तियों व कमियों के जानकार आपको अपने इशारे पर चला रहे हैं। उनके चंगुल से आप साहसकर भी सम्भवतः निकलने का प्रयास भी नहीं कर पा रहे हैं।अपनी दुर्बलताओं को खोजें, उनसे घृणा करें और उन्हें उखाड़ फेंकने के लिए जुट जाएँ। मन में जमे हुए भीरुता के समस्त आधारों को निरस्त कर दें। प्रगति का आरंभ भीतर से करें ताकि आपके समुन्नत व्यक्तित्व एवं वैभव के रूप को सुविकसित देखा जा सके। युग निर्माण की इस बेला में अपने नवनिर्माण की साहसपूर्वक नीव खोदकर निर्मल मन से गुरुदेव को समर्पण करते हुए पुनः श्रद्धा की ईंटों से निर्माण को मूर्तरूप देना प्रारम्भ करें। जिस प्रेरणा से गुरुदेव के परिवार का मिशन अपने मिशन की ओर अग्रसर हो सके।



जब इस प्रक्रिया से अपने को गुजारेंगे तो स्वतः महसूस होगा आपको क्या इन्हीं सबके लिए आपने गुरुदेव को ससपथ समर्पण किया था? सम्भवतः नहीं। तोड़िए तमाम कमजोरी के बन्धनों को, छोड़िए ऐसे लोगों को! आप अकेले नहीं हैं। मिशन के शुभचिन्तक सबकुछ भूलकर आपके नेतृत्व की प्रतीक्षा कर रहे हैं। स्वामी विवेकानन्द के सूक्तिवाक्य को चरितार्थ करें- 'उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्यवरान्निवोधत्'

रहो आग के संग अगर आग बनके,
तो कसम है कि कोई जला न सकेगा।
रहो पानी के संग अगर पानी बनके,
तो कसम है कि कोई डुबा न सकेगा।
कभी वक्त ने पानी को पत्थर बनाया,
तो कभी वक्त ने पत्थर को पानी बनाया।
अगर दिल में लेकर के हिम्मत चलोगे,
तो कसम है कि कोई झुका न सकेगा।

आपका दुश्मन नहीं!
आपका ही हितू गुरुभाई!

-रामआसरे

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं.-09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

दान देने से पहले अपने कमजोर भाई को सहारा दो,
क्योंकि तुम्हारे दान की भगवान से ज्यादा
तुम्हारे भाई को जरूरत है।

# घरजमाई ने व्याधि बढ़ाई, सबकी अब तो जान पे आई

''बुराई पर बुराई कर रहा है, यही तो अपना भाई कर रहा है।
हमारे स्वर्ग जैसे घर के टुकड़े, हमारा घरजमाई कर रहा है।।''

**घरजमाई का अर्थ**- घरजमाई होने पर मनुष्य को अपना सम्मान खोना पड़ता है पर यह समझ बहुत कम ही लोगों को महसूस होती है। महत्वाकांक्षी, कर्मठ व स्वाभिमानी लोग ही इसे समझ सकते हैं, लोभी व लालची नहीं। वह दूसरों की दया पर निर्भर रहता है। अतः इससे मानसिक परतंत्रता प्रारंभ हो जाती है। यह सबसे बुरी गुलामी होती है। दूसरों की दया, कृपा, पक्ष पाने के लिए उसे अपनी आत्मा के विरुद्ध जाना पड़ता है, अपनी आत्मा को दबाना पड़ता है, अपनी आत्मा की हत्या करनी पड़ती है।

अतएव दान लेना शरम की बात होनी चाहिए। जो दूसरों से भिक्षा प्राप्त करके जीवन में सुख और सफलता चाहते हैं, उन्हें सिवाय कष्ट, निराशा, पश्चाताप और निरादर के अलावा कुछ नहीं मिलता।

अतः आप अपने पैरों पर स्वयं खड़े हों। दूसरों का मुँह न ताकें। तुम मनुष्य हो, कुत्ते नहीं कि किसी ने दया करके एक टुकड़ा फेंक दिया और तुम दुम हिलाने लगे, वैसी ही कुत्तों की फौज तुमने खड़ी कर रखी है। तुम ईश्वर के महान पुत्र हो, तुम सर्वसमर्थ हो, तुम क्षमतावान हो। तुम केवल अपने असीम बल को भूले हुए हो। अपने ऊपर भरोसा रखो, अपनी महानता को सोचो, अपने अज्ञान का परित्याग करो। शेर के पुत्र होकर तुम बकरियों की तरह क्यों मिमियाते हो? याद रखो, भगवान ने तुम्हें हाथ, पैर, बुद्धि सब कुछ दिया है। यदि परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हैं जो तुम्हें कभी दूसरे का आश्रय ग्रहण करने को बाध्य होना पड़े, तो उससे पहले ही कूच कर जाना चाहिए। अन्यथा महाकाल की लाठी में आवाज नहीं होती, घटनाक्रम ही घटनाक्रम होते हैं और सभी लाचार खड़े देखते रहते हैं श्रद्धांजलि के लिए। जहाँ अखण्ड जप, दीपक, अग्नि जल रही हो वहां के मुखिया के चेहरे पर तेज झलकना चाहिए न कि विकृतता। यह विकृत स्थिति सौभाग्य नहीं दुर्भाग्य का द्योतक है। दैनिक क्रियायों के लिए भी सहारा लेना पड़ता है। शांतिकुंज गुरुदेव का घोषला है उसकी मर्यादा का पालन नहीं करने के



परिणामों के विषय में चिंतन करें। बलात अपनी पूजा, लाइन लगवाकर दर्शन करवाना गुरुदेव को भी पसन्द नहीं था। इस महिमामण्डल से बाहर निकलें, अपनी स्वयं की ताकत आपको स्वयं पता चल जायेगी, गुरुदेव की लाठी का सहारा लेना बन्द कर दें क्योंकि वह अब चरमराने लगी है जिसकी आहटें सभी को सुनाई पड़ रही हैं। मिशन के लिए उपयोगी बने अपने लिए मिशन का उपयोग बन्द करें, दूसरों को जो प्रेरणा देते हैं स्वयं अपनायें आत्मनिर्भर बने! आत्मनिर्भर!

परमपूज्य गुरुदेव के पावन स्मरण के पश्चात हमें अपने गुरु भाई, बहन साधकों की पीड़ा का भान होता है कि कैसे कैसे विचारों, भावनाओं की दूधिया धवल प्रकाश की आशा लिए वे गुरुश्री द्वारा बताए गए साधना क्रम को पूरा करते हैं और गुरुश्री के भौतिक उत्तराधिकारी की ओर आशा भरी निगाहों से देखकर अपना जीवन धन्य करना चाहते हैं। समाज को आगे ले जाना चाहते हैं। गायत्री मिशन की परम्परा को बढ़ाना-फैलाना चाह रहे हैं आज वे सब हतप्रभ हैं कि कैसे इन उत्तराधिकारियों की मण्डली ने गायत्री मिशन को अपनी सुख सुविधा व सम्मान पाने का साधन बना लिया है। किन किन उपक्रमों से धन संग्रह-मूलक कार्यक्रम बनाये जा रहे हैं।

धनलोलुपता का मकड़जाल फैलाकर साधकों शुभचिन्तकों का दोहन किया जा रहा है। साधना-तप को भुलाकर मात्र और मात्र धन प्रेरित कार्य किये जा रहे हैं। कैसे धन आये, धर्मभीरु साधकों को कैसे मूर्ख बनाया जाय यही ध्येय रह गया है इन उत्तराधिकारियों का। अधिक चन्दा या अनुदान देने वाले असाधक या अपात्र आश्रम में सम्मान पा रहे हैं। त्यागी श्रेष्ठ तपस्वी साधकों को विगत वर्ष मनाये गये शताब्दी कार्यक्रम में उनके भरोसे खुले में छोड़ दिया गया कोई पूर्व नियोजित व्यवस्था आपात-कालीन व्यवस्था के नितान्त अभाव में प्रिय साधकों को अपने जीवन का दाँव पर लगाना पड़ा और सैकड़ों साधक मृत्यु को प्राप्त हुये, अनेक घायल हुये। जबकि विदेशी पर्यटकों या अप्रवासी भारतीयों को शांतिकुंज में घर जैसी सुविधा मुहैय्या करायी गयी क्योंकि उनसे अधिक धन की उगाही की गयी थी-

*जितना हेत हराम से, उतना गुरु से होय।*
*कह कबीरता दास की पला न पकड़े कोय।।*

जब यही सब क्रम चलाना है तो गुरुश्री के आदर्शों का बोर्ड क्यों लगाया जा रहा है। यदि इतनी ही क्षमता योग्यता थी, तपस्या साधना थी तो फिर

शारीरिक व मानसिक रुग्णता का बोझ कैसे आन पड़ा इन सब पर। वस्तुतः ये सब चण्डाल चौकड़ी का नर्तन है। पुस्तकों का मूल्य बढ़ाना, गायत्री मंत्र लेखन की पुस्तिका का मूल्य अप्रत्याशित रूप से बढ़ाना। सदस्यता व कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए लिया गया शुल्क। सामाजिक अनुदान आदि आदि न जाने कितने मदों से सिर्फ धन बटोरा गया है। एक मोटी मोटी गणना के अनुसार विगत दो वर्षों में अब तक कई हजार करोड़ का खेल किया गया है। सामूहिक मन्त्र दीक्षा दी जा रही है। ब्राह्मण बनाने का कारखाना लगाया गया है और मन्त्र दीक्षा देने वाला स्वयं ब्राह्मणत्व से वंचित है।

मात्र वेशभूषा तिलक दाढ़ी जटाजूट रखना भगवा या पीले वस्त्र पहन लेना ही क्या पर्याप्त है? वस्तुतः सारा ज्ञान व्यर्थ है, यदि कर्म न हो? ब्राह्मण का अर्थ है तप, त्याग, संयम, ज्ञान, उदारता, लोकहित जैसी प्रवत्तियों को कूट-कूट कर अपने अंदर भरना। फिर एक मजबूत बाँध की तरह सुदृढ़ आधार पर खड़ा होता है एवं एक बज्रशिला की तरह दृढ़तापूर्वक अपने को मोड़ने के लिए तैयार हो जाता है। तब वह ब्राह्मण की श्रेणी में आता है। जिसका धर्म बनता है स्वयं में सजाग्रता एवं दूसरे को जाग्रत रखने की क्षमता।

सफलता और महानता किसी की पैत्रिक नहीं है, इन्हें तो वे प्राप्त करते हैं जो प्रार्थना के अनुरूप पुरुषार्थ, प्रेरणा के अनुरूप परिश्रम करते हैं। खोज का रहस्य है वह देखना जिसे सबने देखा है और वह सोचना जो किसी ने भी नहीं सोचा। जीवन दूध के समुद्र की तरह है आप इसे जितना मथेंगे आपको इससे उतना ही मक्खन मिलेगा। अगर आप सफल होना चाहते हैं तो आपको सफलता के घिसे-पिटे रास्तों पर चलने के बजाए नये रास्ते बनाने चाहिए।

*सफलता जिस ताले में बन्द रहती है वह ताला दो चाभियों से खुलता है, एक है परिश्रम दूसरा है सत्प्रयास। बिना चाभी के यदि ताला खोला गया तो उपयोगी नहीं होगा। परिश्रम और प्रयास का माद्दा अपने अन्दर पैदा नहीं किया गया तो थोपी हुई सफलता टिकाऊ नहीं होगी।*

साधक के जीवन में एक चीज बड़े महत्व की है, वह है एकाग्रता। एकाग्रता ऐसी जैसी अर्जुन ने मछली की आँख को भेदते समय रखी। जैसी एकाग्रता स्वामी विवेकानन्द जी की थी एक बार पढ़ी हुई पुस्तक के न केवल पृष्ठ संख्या व उस पृष्ठ पर क्या क्या लिखा है याद हो जाती थी। एकाग्रता जब



गहरी होगी तो मस्तिष्क पटल कोरा कागज या स्लेट जैसा होगा उस पर जो अंकित होगा वह स्पष्ट और पठनीय होगा। जिस प्रकार गन्दे शीशे में चेहरा ठीक से नहीं दिखता उसी प्रकार निरर्थक व ऊल-जुलूल जानकारी या बकवास से भरा मानस पटल पर ज्ञान की परत नहीं चढ़ पाती। साधक को पढ़ने सुनने या बोलते समय सदैव सतर्क होना चाहिए जिससे वह जो पढ़ना चाहता है, बोलना चाहता है, सुनना चाहता है उसका प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

मानव मन-मस्तिष्क एक सुपर कम्प्यूटर की भाँति है जिसमें सही ढंग से फाइल बनाकर फीड किया गया कलेवर सदैव सुरक्षित होता है और तुरन्त याद आ जाता है। जितनी गहरी व स्पष्ट जानकारी मानस पटल पर अंकित होगी उतनी ही शीघ्रता से याद आयेगी। इसे ऐसे समझा जा सकता है जैसे शैशवावस्था से बाल्यावस्था की यात्रा में मनुष्य जो देख-सुनकर सीखता है वह उसे हमेशा याद रहती है उसे याद रखने के लिए उसे प्रयास नहीं करना पड़ता। कारण स्पष्ट है उस अवस्था में मस्तिष्क एकाग्र व कोरा होता है सारी चीजों व ज्ञान की छाप पड़ती जाती है। मनोवैज्ञानिकों व मनीशियों का मानना है कि हम मात्र 10 प्रतिशत उपयोगी जानकारी रखते है जबकि हमारी शेष जानकारी निरर्थक व निःप्रयोज्य होती है। मनुष्य के दिमाग में असंख्य न्यूरॉन सेल होते है इनमें प्रत्येक न्यूरानों की क्षमता कई-कई सुपर कम्प्यूटर से भी अधिक है। परिजनों, केवल कल्पना करो कि तुम्हारे मस्तिष्क की शक्ति कई सौ सुपर कम्प्यूटरों से भी अधिक है। फिर क्या कारण है कि तुम इनका सदुपयोग नहीं कर पाते। कारण यही है कि आज के युग में परिजन मात्र कर्मकाण्ड और प्रवचन में उलझे रहते हैं। जबकि साधना है साधक के मन का साध्य में विसर्जन, लेकिन इस सरल-सुगम सत्य की समझ सबकों नहीं हो पाती। वे मन की उलझनों में उलझे रहते हैं, मन की भटकनों में भटकते रहते हैं। मन के जाल को सुलझाने में वे खुद ही इतना उलझ जाते हैं कि उनका अपना अस्तित्व ही खोने लगता है। जो अनुभवी हैं, उन सभी का यही कहना है कि मन ही तो अवरोध है, अड़चन है। इसके हटने, मिटने पर ही सत्य का अनुभव हो पाता है।

गायत्री मंत्र में प्रज्वलित ज्ञान ज्योति ही हमारा पथ प्रदर्शन कर सकती है और उसी के पीछे अनुगमन करने से आज की विपन्न दशा से छुटकारा पाया जा सकता है। एक ऊँट सुई के छेद से निकल सकता है पर एक अहंकारी

व्यक्ति अध्यात्म के द्वार में प्रवेश नहीं कर सकता। माली बनिए मालिक नहीं, प्रमाण दीजिए प्रवचन नहीं।

गुरुजी ने जिसे प्रकाश पुत्र बनाना चाहा था वह तो माया की अन्धेरी काली कोठरी में जा चुका है। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय का कुलाधिपति, एक उपाधि-धारी चिकित्सक इतना शारीरिक और मानसिक स्तर पर रुग्ण होगा, गुरु जी ने कभी सोचा होगा क्या? यही हाल इनकी मण्डली के कार्यकर्ताओं और ढाई सौ बन्धुआ मजदूरों का भी है जो लगभग 98 प्रतिशत बीमार हैं। नाहक का भोजन उद्विग्नता पैदा करता है जबकि हक को भोजन अपने गुरु की दौलत पर कब्जा करता है। दशाधिक वरिष्ठ परिजन हृदय रोगी हैं।

जो कुलपति स्वयं अपनी सन्तान को विदेश में शिक्षा दिला रहा हो वह देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के छात्रों के समक्ष क्या आदर्श रखना चाहता है विचारणीय है। थोथे तर्क से सिद्ध तो कुछ भी किया जा सकता है पर सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में अध्ययन हेतु आई किसी भी *शक्तिस्वरूपा बहनों (छात्रा) पर कुदृष्टि रखना ये पिता-पुत्र अपना अधिकार समझते हैं।* विश्वविद्यालय के वातावरण में जहाँ महाकाल की प्रतिमा को विभूषित किया है अनाचारी व व्यभिचारियों सा आचरण किया जाता है। किसी भी प्रकार अपनी मनोकामना को पूरा करना नीतिसंगत दिखाकर परिजनों की आँखों में धूल नहीं मिर्च झोंकने का कार्य कर रहे हैं। अनेकानेक घटनाएँ विश्वविद्यालय परिसर में घटित हुईं जिससे अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रत्येक परिजन को अवगत होना चाहिए, जो कि नहीं किया जा रहा है। धर्म व अध्यात्म की प्रतिष्ठापना के रूप में 'अखण्ड ज्योति', उसके बाद क्रिया रूप में परिणित होने के रूप में 'युग निर्माण योजना' पत्रिका एवं उसके प्रसार को जन-जन तक पहुँचाने हेतु 'प्रज्ञा अभियान' पाक्षिक आज निश्तेज दृष्टव्य हो रहा है। पाक्षिक अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर रहा है। सभी प्रकाशन एक ही व्यक्ति के चारो तरफ घूमता प्रतीत हो रहा है, आज के राजनीतिक परिदृश्य की तरह।

गायत्रीरूपेण संध्या बहन जो कि अरुण पण्ड्या की पत्नी, प्रमुख ट्रस्टी शैल दीदी की देवरानी, सत्य नरायण पण्ड्या भू.पू. सीनियर जज की बहू, तन्मय पण्ड्या की माँ, प्रज्ञा बहन की सासू, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के



कुलाधिपति महोदय, अखण्ड ज्योति के संपादक, अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख घरजंवाई बाबू ने परमपूज्य गुरुदेव के सपनों के कारवाँ को आगे ले जाने वाले जीवनदानियों सर्वश्री *एच.पी.सिंह, रामसहाय शुक्ला, बलदाऊ, वेदप्रकाश, अर्जुन पाण्डेय, बाजपेई और दो चश्मे वाले व असहाय ड्राइवर* द्वारा कहाँ के अश्वमेघ यज्ञ या महाकुम्भ में भेज दिया। संध्या बहन दुनिया के किस छोर में गुरुदेव के सपनों व मिशन के कार्यों को बढ़ाने का कार्य कर रही हैं जो लगभग दो दशक से शांतिकुज में दिखाई ही नहीं पड़ीं। इसका जवाब तो देना ही होगा! परिजनों को भी और देश को भी। प्रज्ञा पाक्षिक, युग निर्माण योजना, अखण्ड ज्योति में किन कारणों से उसको प्रकाशित नहीं किया जा रहा है। वरिष्ठों को महती भूमिका अदा करनी होगी। महाभारत काल में गांधारी द्वारा पट्टी बांधने से भी उनके अंदर एक तेज उत्पन्न हुआ, जिससे युद्ध में जाने से पूर्व दुर्योधन पर दृष्टि डाली और उसका शरीर वज्र का हो गया। क्योंकि उस पट्टी को बांधने के पीछे तपऊर्जा थी, यहाँ तो गुरुदेव ने वीरभद्रों की परिकल्पना परिजनों से की परन्तु ये सभी भद्र भो नहीं बन सके तो वीरभद्र क्या हो सकेंगे, तपः तेज से पूर्णरूपेण निस्तेज व मृतःप्राय हैं। धृतराष्ट्र की भूमिका अदा कर रहे *सर्वश्री वीरेश्वर जी, कालीचरण जी, गौरीशंकर जी, नमोनारायण जी, शिवप्रसाद मिश्र जी* के साथ सभी ट्रस्टीगण वर्तमान में। महाभारत का ही एक और दृष्टांत है जब भीष्म पितामह अर्जुन द्वारा शवसैय्या पर लेटे थे तो सभी पांडव व कृष्ण को ज्ञानामृत दे रहे थे, तो द्रोपदी खड़ी मुस्करा रही थी और बोली ज्ञान होता तो जब भरी सभा में मेरा चीरहरण हो रहा था तब हे केशव इनका ज्ञान कहाँ गया था। पितामह बोले बेटी जब मैं दुर्योधन की सभा में था तो दुर्योधन का अन्न मेरे रक्त में दौड़ रहा था। अर्जुन की इस शैय्या से मेरा प्रदूषित दुर्योधन का अन्न निकल गया है। इसी उपक्रम में परमपूज्य ने प्राथमिक साधना अन्नमय कोश की कही है। वरिष्ठ परिजनों यदि गुरुदेव के सपने साकार करना चाहते हो तो दुर्योधन का नहीं पाण्डवों के साथ आओ और महाभारत के सच को पुनः दोहराना होगा।

*खिले फूल से रहो सदा ऐ साधक मस्ती में।*
*मोह द्वन्द्व का फर्क पड़े न अपनी हस्ती में।।*

प्रज्ञा योग का अभ्यास करने वाला ब्रह्म विद्या और गुरुसत्ता का साधक, बहुत प्रतिभाशाली होता है प्रतिभा का अर्थ है- जीवन के प्रश्नों का उत्तर देने की क्षमता! जीवन सर्वथा मौलिक है। यह बँधी बधाई राहों, घिसी-पिटी परंपराओं के अनुरूप नहीं चलता। इसमें घटने वाली सभी आंतरिक एवं बाहरी घटनाएँ पूर्णतया मौलिक व अनूठा नयापन लिए होती हैं। इसके हर मोड़ पर आने वाली चुनौतियाँ, उभरने वाले प्रश्न पूरी तरह से अपनी नवीनता का परिचय देते हैं। जो इन प्रश्नों का जितना अधिक सटीक, सकारात्मक, सक्षम व सृजनात्मक उत्तर दे पाता है, समझो वह उतना ही प्रतिभाशाली है, जीवन प्रवाह में प्रतिपल-प्रतिक्षण सजग व सचेष्ट रहने की जरूरत है। तभी यह जान पाना संभव हो पाता है कि जीवन हमसे क्या माँग रहा है? परिस्थिति की क्या चुनौती है, प्रतिभावान व्यक्ति परिस्थिति व प्रश्न के अनुरूप व्यवहार करता है जबकि मूढ़ व परंपरावादी व्यक्ति घिसे-पिटे उत्तरों को दोहराते रहते हैं! फिर ये पुरानी बातें किसी धार्मिक पुस्तक में लिखी हों अथवा परमपूज्य गुरुदेव द्वारा कही गई हों। स्वः- विवेक का त्याग कर इन्हें अपना लेना प्रकारांतर रूप से मूढ़ता ही है विवेकहीन व्यक्ति शास्त्रों धर्मग्रन्थों का पुरातन बोझ ढोते रहते हैं और वे अपने परमपूज्य गुरुदेव पर अपना सारा बोझ डालकर निश्चिंत हो जाना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें अपने ऊपर भरोसा करने पर भय लगता है, जबकि अंतरदृष्टिसंपन्न प्रतिभावान व्यक्ति स्वयं पर भरोसा करता है। वह अपने परमपूज्य गुरुदेव तथा धर्मग्रन्थों पर भी श्रद्धा-आस्था रखते हुए इनकी नए युग के अनुरूप नई व्याख्या करता है-

*कबिरा यह जग आय के बहुत से कीन्हें मीत।*
*जिन दिल बांधा एक से वो सोए निश्चिंत।।*

किसी तरह के सामाजिक-धार्मिक कारागृह उसे कैद नहीं कर पाते क्योंकि अपनी प्रतिभा के बल पर वह इन्हें तोड़ने में सक्षम होता है। इसीलिए तो कहते हैं- कि प्रतिभा का अर्थ है-अंतर्दृष्टिसंपन्न दूरदर्शी विवेकशीलता जो जीवन की सभी समस्याओं का सार्थक हल ढूढ़ने में सक्षम हैं। युग परिवर्तन अवश्य होगा पर वाचालों के हाथों नहीं तपस्वियों के कंधों से होगा-

*लक्ष्य न ओझल होने पाए कदम मिलाकर चल।*
*सफलता तेरे चरण चूमेगी आज नहीं तो कल।।*



गायत्री सनातन का आदिमंत्र है उसका साधन और तत्वज्ञान एक से बढ़कर एक है। बिखरे हुए संप्रदायों का केन्द्र वही है। माला जिस प्रकार मनकों को एक धागा अपने में बाँधे रहता है वही भूमिका गायत्री की है, गायत्री सचमुच एक महाशक्ति है। उसका आश्रय अपनाने से एक साधारण व्यक्ति भी ऐसे कार्य कर सकता है, जिसमें से प्रत्येक को अनुपम या अद्भुत कहा जा सके। फिर विशिष्ट व्यक्ति जिन्होंने ब्राह्मणत्व की साधना कर ली है- गुण कर्म- स्वभाव एवं चिंतन चरित्र व्यवहार की दृष्टि से अपने को उत्कृष्ट आदर्शवादों के साथ जोड़ने की आरंभिक जीवन-साधना संपन्न कर ली है वे ही सच्चे अर्थों में ब्राह्मण हैं उन्हें साधारण उपासना तक सीमित न रहकर गुप्त और रहस्यमयी साधना के क्षेत्र में प्रवेश करने का अधिकार मिलता है। ऐसे लोग योग और तप में संलग्न होकर उसका तत्वज्ञान हृदयंगम करने में सफल होते हैं। ऐसे ब्रह्मवेता के पास ब्रह्मविद्या गायत्री आकर कहती है। कि मैं तेरी धरोहर हूँ, तुझे मेरी भली भाँति रक्षा करनी चाहिए। मुझे किसी निंदक पुरुष अथवा कुपात्र को मत देना। तेरे ऐसा करने पर मैं अधिक वीर्य-पराक्रम वाली हो जाऊँगी। ब्राह्मणत्व की प्राप्ति के लिए शास्त्रकारों ने गायत्री की शरण में जाने के लिए कहा।

ब्राह्मणत्व की स्थापना के लिए गायत्री की उपासना करें। इसी से द्विजत्व अर्थात दूसरा देव जन्म भी प्राप्त होता है। गायत्री मंजरी में भगवान शिव कहते हैं कि हे पार्वती समस्त योग साधनाओं का मूलभूत आधार गायत्री ही है। गायत्री ही तप है, गायत्री ही योग है। गायत्री ही सबसे बड़ा ध्यान और साधन है। इससे बढ़कर सिद्धिदायक प्रयोग और कोई नहीं है।

आत्मीय परिजनों हमारी गायत्री अर्थात अदृश्य सत्ता ने हमें 8 नवम्बर 2011 को पाँच गायों की गौशाला में आकर दीक्षा दी। उस समय घड़ी में 11.30 बजे का समय था बत्ती थी नहीं और हम अंधेरे में गाय के गोबर से जौ के दाने बीन रहे थे। उन्होंने इशारा करके बताया कि बेटा तुम्हें मैं ऐसी गायत्री के दर्शन कराऊँगा जो पायलट भी होगी और बाडीगार्ड का भी काम करेगी। त्रिपदा रूपी गायत्री से धन की भी प्राप्ति होगी। अब बेटा तुम्हें क्या चाहिए, तो हमने कहा बाबा जी हमें कुछ नहीं चाहिए वरन आप हमें आदेश करें कि आपको हमसे क्या चाहिए ? उन्होंने कहा जो मेरा सो तेरा । हमने कहा जो मेरा वो आपका वही बात उन्होंने कही जो मेरा वह ही तेरा। गायत्री मंत्र का हमारे अंदर जो फलश्रुति स्वरूप

आपके सामने है। जो अंकुरण कभी हुआ था हमारे अंदर वट वृक्ष सा पोषित नई आभा से हमें अविभूत कर गया। जब वरिष्ठ परिजनों को पास से देखा तो पाया कि उन्हें शिकायत यही कि सारा जीवन बीता जा रहा है गायत्री मंत्र जपते-जपते परन्तु हमें ऐच्छिक सफलता नहीं मिली। ऋषि के सानिध्य में रहे, अखण्ड दीपक के दर्शन करते रहे, प्रज्ञा अभियान भी चलाते रहे फलस्वरूप सम्मान तो मिला जो कि गुरुदेव के कार्य का था न कि अपनी परिस्कृत प्रतिभा का। वैयक्तिक स्तर पर सभी हृदय रोगी हो गये जिसमे शैल दीदी, प्रणव जी, वीरेश्वर जी, कालीचरण जी, गौरीशंकर जी व अन्य ट्रस्टी। जिसका मुख्यत: कारण यही रहा कि दूसरों को अंजन बाटने वालों ने खुद ही अंजन का उपयोग नहीं किया। *जैसे आंखों का अंधा नाम नयन सुख रख ले और व्यभिचार फैलाए गली-गली अपने को बोले बजरंगबली। रंगी को नारंगी कहे नकद माल को खोया, चलती को गाड़ी कहे देख कबीरा रोया। साधना करे तो साधक है वरना कोरी-कोरी बात है, सूरज उगे तो प्रभात है वरना काली-काली रात है।* गायत्री मंत्र नकद खेती है रोपण करने पर ही बीजांकुरित होगी। बिना रोपे या बंजर जमीन पर यह पुष्पित, पल्पित नहीं हो सकती। गायत्री मंत्र में हथेली पर पौधे नहीं उगाये जा सकते हैं। अर्थात गायत्री की विधा बताने वालों ने ही उसके विधान का अनुपालन नहीं किया है।

महाभारत में कहा गया है कि परासिद्धि प्राप्त करने के लिए श्रेयस्कर गायत्री को जपना चाहिए। देवी भागवत में भी कहा गया है कि- जिसे ब्राह्मणत्व की प्राप्ति करनी हो वह गायत्री की उपासना करे। जिसे अन्य कामनाओं की ललक हो वह अन्य देवताओं को पूजे। देववर्णित सारी सिद्धियाँ द्विज को गायत्री उपासना से मिल जाती हैं, क्योंकि गायत्री से परे अन्य कुछ भी नहीं है। खुद कमाने और खाने का नाम है आकृति, दूसरे के हक का छीनकर खाने का नाम है विकृति, और जो अपने हिस्से का दूसरे को खिलाए वही ही है गुरुदेव अनुरूप देवसंस्कृति।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं.-09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com



# आत्मीय अनुरोध

प्रिय परिजन,

सादर नमन सहित!

परमपूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी को गुरुरूपेण/देवरूपेण वरण करने की बेला का स्मरण अंत: में स्फुरण पैदा करता है। आचार्य श्री के विचारों से गुरूभाई से अवगत होकर जो अनुभूति हुई उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है मात्र अनुभव ही किया जा सकता है, वह क्षण वही है जैसे गूंगे से गुड़ के बारे में पूंछना। गुरुवर के बताये रास्ते पर सीढ़ी दर सीढ़ी चलते हुए मिशन के वरिष्ठ परिजनों के अन्तर्मन की पीड़ा का अनुभव भी हुआ, वरिष्ठ एवं कनिष्ठ परिजनों के साथ कार्य का अनुभव भी अन्तर्मन को उद्वेलित करने लगा। वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता की साधना करने वाले परिजन और उनकी साधना प्रक्रिया से अवगत कराने वाले परिजनों का भी सानिध्य कभी-कभी पीड़ा देने लगा। क्योंकि युगऋषि के तप से सिंचित एवं गायत्री साधकों/परिजनों के खून-पसीने के श्रमसाध्य अंशदान एवं समयदान से निर्मित यह विशालकाय मिशन की जिम्मेदारी जिन कन्धों को दी गई या यों कहें उनके द्वारा ली गई ग्रहण काल सी प्रतीत हो रही थी। केन्द्र का मुख्य तन्त्र व्यक्ति विशेष के आसपास ही केन्द्रित होकर रह गया है, न तप है, न साधना है तो यह प्रबन्धतन्त्र परिवर्तनशील क्यों नहीं हो रहा है, सभी संस्थानों में परिवर्तन होता है पर गायत्री परिवार प्रबन्धतन्त्र स्थिर होकर मात्र कुछ चेहरों को ही सत्ताशीन किए हुए है। यह देखते हुए कई दशक बीत गए कार्यक्रम पर कार्यक्रम पर कोई ठोस योजना मूर्तरूप नहीं धारण कर दृष्टव्य हो रही है। यह स्थिति देखकर निष्ठा से जुड़े और इन कार्यक्रमों/दिशाहीन योजनाओं से आहत हो समर्पित साधकों/परिजनों की धड़कन का तेज होना स्वाभाविक है, क्योंकि जो सुनाई दे रहा है, दिखाई दे रहा है उसे चुपचाप सहना भी गुरुदेव के शब्दों में 'कायरता' है।

पूज्यवर स्वयं प्रत्यक्ष रूप से आज कुछ नहीं कर रहे, उन्हें भी हाथों की आवश्यकता है। जो लोग मिशन की आड़ में उनकी भावनाओं को आहत कर रहे हैं, उनका नाम लेकर परिजनों की भावनाओं से अपना हित साध रहे हैं या मूक रहकर कुछ नहीं बोल रहे और कह रहें हैं कि गुरुवर सब

देख रहे हैं वह ही समाधान करेंगे, वह भी उतने ही दोषी हैं जितना दोषी वह दुष्कृत्य/कुकृत्य करने वाला।

इसी अन्तर्वेदना के प्रतिफल रूप में 'मिशन का चीरहरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना' भाग-1 का प्रकाशन उन पत्रों के संकलन के रूप में प्रकाशित किया गया, जिनका जवाब न तो केन्द्र का प्रबन्धतन्त्र दे रहा था और न ही केन्द्र में पदस्थ किसी वरिष्ठ एवं कनिष्ठ साधक/परिजन/चिंतक/विवेचक/कर्मचारी अवैतनिक या अवैतनिक द्वारा मिल पाया था। पुस्तक प्रकाशन के बाद भी किसी प्रकार की सकारात्मक कोई भी प्रक्रिया साधना करने वाले परिजन के स्तर केन्द्र में पदस्थ द्वारा नहीं मिल सकी। जबकि प्रयास यह था कि मिशन के आधार को भूलकर दिशाहीन कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। उदाहरणार्थ-

- क्या आपने कभी केन्द्र में होली का पर्व देखा है? क्या वह पूज्यवर के कथनारूप मनाया जाता है?

- क्या आपने कभी केन्द्र में गुरुपूर्णिमा, गायत्री जयन्ती एवं रक्षाबन्धन आदि जो कि मुख्य पर्व हैं, उनमें सहभागिता की है? होता क्या है इन पर्वों में परिजन पूरे-पूरे दिन पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं परिजन किसलिए? दर्शन के लिए चरण स्पर्श के लिए किसके? मात्र एक गुरुभाई के। क्या केन्द्र में वरिष्ठ गुरुभाईयों की कमीं है जो पूज्यवर के सहोदर न रहे हों/अनुयायी न रहे हों/साधक न हों।

आज समय आ गया है यह चिंतन का ही नहीं बल्कि चिंता का विषय है। सभी को पूज्यवर ने दर्पण के सामने खड़े हो साधना करने की शैली का एक विवेकशील बिम्ब दिया है। महाकाल की अन्तर्वेदना को पहचानें। ऊपर से नीचे तक पारदर्शिता लानी होगी, जवाबदेही सुनिश्चित करनी होगी। 'नेकी कर दरिया में डाल' की कहावत को गुरुदेव ने नेकी करने को तो कहा है परन्तु दरिया में डाल नहीं वरन् जिसको नेकी में अपना अंशदान दिया है उसकी रसीद के साथ उसका हिसाब किस मद में लिया गया और क्यों कब और कैसे खर्च किया गया देना सुनिश्चित किया है।

क्षेत्रीय स्तर पर कार्य करने वाला कार्यकर्ता/परिजन शान्तिकुंज के कार्यक्रमों या केन्द्र के आवाहन पर तन-मन-धन से समर्पित होकर



कार्य करना शुरू कर देता है। परन्तु वही कार्यकर्ता जब केन्द्र के उस कार्यक्रम में सम्मिलित होने जाता है तो केन्द्र में पदस्थ वरिष्ठ परिजनों का व्यवहार कभी-कभी तो मर्यादा से भी परे हो जाता है। परिजन भावना से ओतप्रोत दर्शनार्थ, तीर्थाटन के उद्देश्य से जाता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि क्या वह गलत जगह आ गया। यह एक आरोपण नहीं वरन समीक्षा का विषय है कि स्वागत कक्ष में पहुंचा व्यक्ति अपने गुरुवर के घोषले में छांव की ललक से मन में शांति भाव से गया है न कि दुनियावी बवंडरों को खड़ा करने। क्षेत्रों से अंशदान के रूप में पहुंची सम्पत्ति वर्तमान में अपार है उसका सदुपयोग न होकर, वैशिष्टय: लोगों की सुख-सुविधाओं पर खर्च हो रही है। मंहगी गाड़ियां, मंहगे मोबाइल, रहन-सहन बिल्कुल बदल चुका है यदि बीस दशक पूर्व से तुलना की जाय तो, सबकुछ बदल चुका है, परन्तु विचार अभी भी वही 20 वर्ष पूर्व वाले दिए जा रहे हैं। हमें अपने मूल को नहीं भूलना है इतना विराट मिशन की वैशिष्ट शक्तियों की छांव में एवं गरिमामयी जीवन पद्धति को अपनाने वालों के सूक्ष्म संरक्षण का ही प्रतिफल है। क्षेत्र में परिजन मिशन की गौरव गाथा का गान विरदावली के रूप में करता आ रहा है, और सूक्ष्म सत्ता के अनुदान वरदान के रूप में मिशन दूब की तरह फैलता जा रहा है सम्पूर्ण देश ही नहीं वरन् विश्व में। जैसे दूब की जड़ लम्बे तक फैलती जाती है परन्तु कोई भी व्यक्तित्व केन्द्र पदस्थ शीर्षस्थ व्यक्तित्व वृक्षों का रूप क्यों नहीं धारण कर पा रहे हैं, क्योंकि आधार शून्य पर है।

कहीं गुरुदेव की बात सच तो नहीं हो रही कि मेरे अनुसार चलो तो श्रेय पाओगे नहीं तो "मैं अपना काम तो कांकर पाथर से भी करवालूँगा, जैसे मैं तो अपने गुरू के हांथ की कठपुतली हूँ, जो वह कहते हैं वही मैं करता चला आ रहा हूँ, मेरे जो लेख हैं उन्हें लिख तो मैं रहा हूँ परन्तु उसकी स्याही एवं विचार सूक्ष्म सत्ता के ही हैं।"

अत्यन्त विचारणीय विषय है पूज्यवर ने अपने को कभी जो कि साक्षात आदिशक्ति मां जगतजननी मां गायत्री की प्रतिमूर्ति थे अपने को प्रतिष्ठापित नहीं किया। परन्तु आज तो डॉ.प्रणव जी स्वयं को शांतिकुज का स्वामी मानकर प्रतिष्ठापित कर चुके हैं। जो कार्य सौपा गया था वह पीछे छूट गया है और आज तो मात्र दर्शनार्थ चहेते एवं सुविधासम्पन्न ही जा पाते हैं बाकी को तो समय का

आभाव बताकर आगे बढ़ा दिया जाता है। कोई भी पीड़ा सुनने वाला नहीं है तो निवारण कैसे होगा, कार्यकर्ताओं की जुबां पर भी ताले जड़ दिए गए है। वर्तमान समय को देखकर हृदय चीत्कार उठता है कि कहीं आज के कई सन्तों/सुधारकों की जो स्थिति हो रही है वही स्थिति गायत्री मिशन की भी न हो, क्षेत्रीय परिजन अभी जन्मशताब्दी के दृश्य को विस्मृत नहीं कर पाये हैं क्योंकि क्षेत्रों में जवाबदेही उन्हीं परिजनों की थी जो पाठकों/साधकों को लेकर कार्यक्रम तक गये थे।

पूर्व में प्रकाशित पुस्तक भाग-1 का अग्रिम चरण के रूप में अपने सुधि साधकों के समक्ष परिजनों के समक्ष उनकी पीड़ा के रूप में जिसका निवारण ऊपर वाले नहीं/सूक्ष्म सत्ता की इच्छा नहीं/साधना की धुरी से जुड़े निष्ठावान साधकों के हाथ में ही है के लिए *'मिशन का चीरहरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना' भाग-2* की सामग्री तैयार है एवं प्रकाशन प्रक्रिया में है। *जो भी परिजन अपने अनुभव, अपनी पीड़ा, अपने संस्मरण, अपनी अनुभूतियाँ भेजना चाहें पुस्तक में प्रकाशन हेतु प्रकाशनार्थ इंटरनेट के माध्यम से, डाक से, कोरियर से या स्वयं भेज सकते हैं।* यदि वह परिजन अपना नाम प्रकाशित करवाना चाहें तो यह अवश्य लिखें कि नाम के साथ प्रकाशित, यदि नाम नहीं प्रकाशित करवाना चाहते तो वह नाम गुप्त रखा जाएगा एवं भेजी गई प्रति को मुद्रण के बाद नष्ट कर दिया जाएगा।

भाग-2 पुस्तक का प्रकाशन प्रज्ञा परिजनों के हृदय की पीड़ा ही है जिसे भाग-1 में मात्र पत्रों का संकलन रूप दिया गया था, इसमें आपसे अपील है अपनी अनुभूतियों को भेज गुरुवर के प्रति अपनी वास्तविक श्रद्धांजलि जो कि अर्थ नहीं, सत्ता नहीं, नाम नहीं वरन साधनाहीन, प्रज्ञाशून्य, आचरण शून्य को मार्ग दिखाना मात्र ही है।

-विनीत

रामआसरे

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं.-09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com



# बंगलौर अश्वमेघ यज्ञ

आत्मीय परिजन,

सादर नमन!

जैसा कि आप लोग अवगत होंगे कि 17 जनवरी 2014 से 20 जनवरी 2014 को डॉ० प्रणव के निर्देशन में बंगलौर में अश्वमेघ यज्ञ होने जा रहा है। शांतिकुंज के द्वारा इस विशाल आयोजन की रूपरेखा तैयार हो चुकी है। वह रूपरेखा है अश्वमेघ यज्ञ जैसे कार्यक्रमों से अधिकाधिक धन की प्राप्ति का लक्ष्य जिसका हिसाब क्षेत्रीय जनता को नहीं देना होता है। क्षेत्रीय परिजनों का कार्य है दैवीय कार्यक्रम मानते हुए आम जनमानस से धन लेना व उसे एकत्रित कर केन्द्र को अग्रसारित कर देना। जिससे न क्षेत्रीय इकाई को किसी को हिसाब देना पड़ेगा न ही केन्द्र को किसी को हिसाब देना पड़ता है सबकुछ हज़म, कहाँ पता नहीं। जन समुदाय की धार्मिक भावना को उद्वेलित कर धन संग्रह किया जा रहा है। 5 करोड़ रुपया खर्च होने की बात कही जा रही है और उसी अनुरूप एकत्र हो रहा है जबकि खर्च एक करोड़ से भी कम का है। डॉ० प्रणव द्वारा नियुक्त सेवादारों की जिम्मेदारी ही है पूरा पैसा इकट्ठा करना और पूरा हिसाब अपने पास रखना। स्थानीय परिजनों को इससे इतर ही रखा जाता है। डॉ० प्रणव के रंग में रंगे च....म....चे.. बड़े-बड़े व्यापारियों से व्यक्तिगत रूप से हजारों रुपया ले रहे हैं और शेयर बाजार में लगा रहे हैं, ऐसी भी जानकारी मिली है। क्या गायत्री परिवार के नैष्ठिक कार्यकर्ता व बैंगलोर के जागरूक स्थानीय परिजन इसकी छानबीन करेंगे?

अभी गायत्री परिवार जन्म शताब्दी के सच को भुला नहीं पाया है। परिजनों द्वारा अरबों रुपया सीधे व बैंक के माध्यम से केन्द्र पहुँचा, परिजन भी उत्साहित होकर कार्यक्रम में गये परन्तु वहां हुआ क्या। देर सबेर/रात बिरात पहुंचने वाले परिजनों से सीधे मुंह कोई बात भी नहीं कर रहा था कि कहाँ रुकना है, कोई जिम्मेदार व्यक्ति जवाबदेह उपस्थित नहीं था, समूह में पहुंचे लोगों को निर्धारित स्थान पर पहुँचने पर जवाब मिल रहा था व्यवस्था हो रही है अभी जो निर्धारण किए जा रहे थे वहाँ पूर्व में ही परिजन थे, आपसी सामंजस्य ही अंतिम रास्ता दिखाई पड़ रहा था। वरिष्ठ परिजन नदारत थे।

गुरुदेव के नाम पर जन्मशताब्दी कार्यक्रम में लोगों को आवाहित किया गया था, तभी लोग आये थे और तभी बैंकों में सीधे परिजनों द्वारा पैसा भी। इसे केन्द्र व पदस्त परिजन भूल जाते हैं। जिसका प्रतिफल 07 नवम्बर सायं कार्यक्रम में गंगा की गोद व हिमालय की छाया में डॉ० प्रणव व उनके साथी दंभ में भरे मंच से गर्जना कर बैठे कि ''इतना बड़ा कार्यक्रम व तंत्र बिना किसी सरकारी सहायता के खड़ा कर लिया, जिसे आज तक कोई नहीं कर सका।'' संस्कारशाला एवं यज्ञशाला अलग-अलग व्यवस्थित थे। डॉ० प्रणव का भाषण ही कहा जाय तो बेहतर है कि ''कल यज्ञ और संस्कार यहीं होंगे।'' क्योंकि वह अपने को मुख्य बिंदु पर रखना चाहते थे। साथ ही यह भी कहा कि ''मैं 60 का युवा हूँ, गुरुदेव की लेखनी आज मेरे हाथ में है।'' जिसे सुन परिजन उठने लगे। यह उपक्रम न ही ऋषिसत्ता को भाया, न ही गुरुसत्ता को। 08 नवम्बर सभी परिजनों को भूले न भूलेगी जिन्होंने अपनों को खोया है। दुर्घटना के बाद भी तत्परता कितनी? कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आये अनगिनत परिजन हताहत हुए। डॉ० प्रणव जैसे चरित्र से पतित व्यक्ति द्वारा जब भी ऐसे कार्य किए जायेंगे सुपरिणाम कुपरिणाम में परिवर्तित होते जायेंगे।

साथ ही महत्वपूर्ण यह कि अश्वमेघ यज्ञ के पूज्यनीय मंच पर डॉ० प्रणव जैसे चरित्रहीन व्यक्ति का रहना यज्ञ की गरिमा के विपरीत होगा। उनके चरित्रहीनता के आचरण की चर्चा गायत्री परिवार में आज आम बात हो गई है। गुरुदेव के तप, स्नेह, वात्सल्य से निर्मित गायत्री परिवार द्वारा आयोजित इस विशाल कार्यक्रम को बैंगलोर के परिजन क्या डॉ.प्रणव जैसे व्यक्ति को देवमंच पर आसीन देख सकेंगे? बलात् आरूढ़ डॉ० प्रणव का विरोध नहीं करेंगे। समय से पूर्व ही सचेत हो क्षेत्रीय परिजनों को केन्द्र को प्रतिउत्तर देना ही मिशन के अनुरूप होगा।

भवदीय

रामआसरे

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं.-09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com



आत्मीय परिजनों,

नमन्!

**वर्तमान परिवेश को अनुभव/देखते हुए पीड़ा के रूप में रचित पुस्तक मिशन का चीरहरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना भाग-1 की प्रतिक्रिया एक परिजन द्वारा।**

हमें वर्ष 2010 में जब मिशन के वर्तमान मुखिया से मुखातिब होने का मौका मिला और उनके द्वारा दी जाने वाली प्रतिक्रिया बहुत ही विस्मतकारी/पीड़ादायी महसूस हुई तभी से सभी वरिष्ठ परिजनों को भी पास से देखने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। पहले भी बहुत परिजनों द्वारा टीका-टिप्पणी की गई परन्तु उसे पास से देखने के तदुपरान्त हृदय पीड़ा से से कराह उठा और अन्तःकरण से चीत्कार उठी कि गुरुदेव के सपनों को साकार करने का जो आज दम्भ भर रहे हैं यह तो बिल्कुल ही साधना से शून्य हैं जबकि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी के अनुरूप मिशन का आधार साधना ही है। अल्पज्ञ होने के बाद भी प्रेरणा जगी और कलम हाथ में उठा ली आदिशक्ति की शक्ति ने शक्ति प्रदान की तूलिका से वह शब्द निकलने लगे जिनके बारे हमारे जैसा व्यक्ति कल्पनातीत ही था। डॉ.प्रणव की गतिविधियों को लेकर, उनके द्वारा प्रदान किये जा रहे मिशन के स्वरूप को लेकर पत्राचार किया परन्तु उसका जवाब न मिला जिसे संकलित कर पुस्तक रूप में मिशन का चीरहरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना भाग-1 का प्रकाशन किया जिसके फलस्वरूप एक प्रतिक्रिया-

मिशन का चीरहरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना भाग-2 जिसका कलेवर तैयार हो चुका है एक परिजन द्वारा लिखा गया- लम्बे समय से मिशन के कार्यकर्ता के रूप में हम सब भी अपनी सेवायें दे रहे हैं। हम सबकी समाज में गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्ता के रूप में ही पहचान बन गई है। वर्षों से समाज से हम मिशन हेतु धन मांग रहे हैं और ईमानदारी से शांतिकुंज भेज रहे हैं। समाज भी हमसे व केन्द्र से बहुत अधिक अपेक्षा रखता है। परन्तु केन्द्र की ढुलमुल नीति के कारण आज हमारे जैसे कार्यकर्ता को समाज के प्रबुद्धजन से लेकर युवा पीढ़ी के द्वारा समय-समय

पर उपहास सहना अब तो लगता है नियती ही बन गई है। एक तरफ डॉ. साहब बड़ी-बड़ी घोषणा करने का कोई भी मौका नहीं चूक रहे हैं, वहीं जागरूक समाज हम सबसे अपेक्षा करता है कुछ ऐसा करेंगे जैसा डॉ. प्रणव जी कह रहे हैं। पर क्या केन्द्र के संगठित प्रयास-सहयोग के बिना कुछ सम्भव है? विशेषकर जब क्रांति व आन्दोलन की बात हो।

डॉ. प्रणव जी एक तरफ अगस्त 2013 के विदेश दौरे में एक परिजन के प्रश्न के उत्तर में कहा कि ''मैं (डॉ.प्रणव)अन्ना हजारे के साथ पूरे भारत में घूम रहा हूँ, भ्रष्टाचार के आन्दोलन को गति देने के लिए.....'' वहीं दूसरी ओर शांतिकुंज में वरिष्ठों की गोष्ठी में निर्णय लेते हैं कि ''अन्ना हजारे को सहयोग नहीं करना है नहीं तो कांग्रेस सरकार हमारे पीछे भी लग जायेगी रामदेव जी की तरह।''

आगे लिखा गया कि- ऐसी दोगली और झूठ बोलने में माहिर नेतृत्व के सहारे पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी का युग निर्माण आन्दोलन अब दिनोंदिन अवगति की ओर अग्रसर होता जा रहा है। 08.11.2011 को इस पर भगवान ने भी मुहर लगा दी। भावनावश हम सब इंतजार करने लगे कि डॉ.प्रणव एवं उनके तथाकथित वरिष्ठ कुछ न कुछ सुधार करेंगे जिससे मिशन को गौरव गरिमा प्राप्त हो सके, परन्तु केन्द्र(शांतिकुंज) सुधार करना नहीं चाहता यह दुःख का विषय है। इसका एक और उदाहरण डॉ.प्रणव ने निर्मल गंगा अभियान के लिए लम्बी-लम्बी भाषणबाजी की वह भी मृत्यप्राय होकर रह गया। जिससे फिर से स्पष्ट हो गया कि चेतना से, सूक्ष्म जगत से डॉ.प्रणव व उनके सहयोगियों का सम्पर्क अब नहीं रहा है, जिसके कारण सारा अभियान हाथों से निकलता जा रहा है। मिशन का चीरहरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना भाग-2 के प्रकाशन से डॉ.प्रणव की असलितयत सबके सामने लाना बहुत जरूरी है विश्वविद्यालय के उत्तीर्ण छात्र एवं परिव्राजक जो कि पीड़ित हुए हैं आपके सहयोगी बनने को तैयार हैं हम सभी को बेसब्री से इंतजार है अगले अंक का जिससे मिशन साफ सुथरा हो सके।

चढ़ती थीं उस मजार पर, चादरें बेशुमार।
बाहर बैठा कोई फकीर, सर्दी से मर गया।।



आत्मीय परिजनों,

नमन्!

पुस्तक मिशन का चीरहरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना भाग-1 की प्रतिक्रिया एक परिजन द्वारा -

मिशन के कार्यों को गति देने व उसे क्रांति का स्वरूप देने में डॉ० प्रणव एण्ड कम्पनी (डॉ० प्रणव एवं उनके चाटुकार केन्द्र में पदस्थ वरिष्ठ परिजन) असफल हो चुकी है। परिजनों यदि गुरुदेव के आन्दोलन को गति देने के प्रति शांतिकुंज की वर्तमान व्यवस्था तंत्र ईमानदारी से प्रयासरत होती हो शांतिकुंज में समयदानियों की संख्या घटने की बात नहीं होती। लगभग 4 वर्षों से यह देखा जा रहा है कि शांतिकुंज में समयदानियों की संख्या घट रही है वहीं दूसरी ओर कर्मचारी/पेड वर्कर की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। पेड वर्कर को मिशन और मिशन के कार्यकर्ता से कोई लेना-देना नहीं है। कुछ दिन पूर्व की बात है एक कार्यकर्ता गायत्रीनगर गेट पर उपस्थित कर्मचारी द्वारा अभद्र तरीके से बुलाकर कहा गया कि मुँह में जो गुटका है यहीं थूंकें-एकदम आदेशात्मक लहजा। वास्तव में वह कार्यकर्ता गेट के प्रवेश में ही समाधि स्थल को देखकर मानसिक जप करते हुए जा रहे थे। उन्होंने कभी भी कोई अखाद्य वस्तु नहीं खाई, उन्हें हम गुरुदेव का समर्पित सिपाही मानते हैं, पर उक्त कर्मचारी की अदूरदर्शिता से उपस्थित सभी कार्यकर्ता हैरान हो गए। स्वागत कक्ष में नियुक्त कर्मचारी का भी व्यवहार भी मिशन की गरिमा के अनुकूल नहीं प्रतीत होता है।

शांतिकुंज में समयदानियों की कमी का असर क्षेत्र में हम सब पर पड़ता है। पहले कोई भी भाई शांतिकुंज में 3 से 6 माह का समय देकर घर लौटने पर भी शाखा संचालन में बहुत बड़ा सहयोग मिलता था और उसका प्रभाव भी पड़ता था। हम सभी परिजनों का ध्यान उस विषय पर ले जाना चाहते हैं कि अनेकों स्थानों पर 2 लाख प्रज्ञापुत्र तैयार करने की बात को कहा गया युग निर्माण को गति देने के लिए। इस विशेष कार्य के प्रति वर्तमान केन्द्र का तंत्र बहुत उदासीन है। इसके कारण को अन्दर जाकर जानने का प्रयास किया तो पता चला कि आजकल डॉ० प्रणव के अलावा कोई भी किसी भी विषय पर निर्णय नहीं लेता है। संगठन केवल नाम का

है। डॉ० प्रणव ने इस मिशन के तंत्र को अपने कब्जे में कर लिया है। गुरूदेव के विचारों को फैलाने की उनकी मंशा नहीं है। गुरूदेव द्वारा रचित साहित्य को पीछे कर अपने नाम से नवीन साहित्य को परिजनों के ऊपर थोपा जा रहा है। क्षेत्रों के साहित्य विस्तार पटलों पर डॉ० प्रणव के नाम से लिखित साहित्य अवश्य दिखने लगा है, वांगमय का पूर्ण प्रकाशन हाशिए में डाल दिया गया है। बस गुरुदेव का नाम लेकर पैसा इकट्ठा करना और अपने परिवार के लिए भोग के साधन की व्यवस्था बनाने में पूर्ण शक्ति लगा रहे हैं। शांतिकुंज के प्रति समर्पित कार्यकर्ता के लिए उनके पास समय नहीं होता है। वहीं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में बिना काम के डॉ० प्रणव अधिकाधिक समय व्यतीत करते हैं। विश्वविद्यालय में समय इस लिए ज्यादा देते हैं जिससे कि डॉ०चिन्मय पूरी तरह से स्थापित हो जाय और शाम्भवी मिश्रा की इच्छापूर्ति होती रहे। पूरी तरह से राजपाट के भोग में जिसका समय लगे, वह समयदानी की चिन्ता, गुरुदेव की योजना को बढ़ानें की चिन्ता क्यों करे?

डॉ० प्रणव के क्रियाकलापों को देखकर युग निर्माण योजना एक दैवी योजना/ऋषि तंत्र द्वारा संचालित योजना की बातें अब भ्रामक लगने लगी हैं। युग निर्माण योजना एक दैवीय योजना है तो कम से कम अब वह वर्तमान शांतिकुंज तंत्र को छोड़ ही दी होगी और दूसरों से युग निर्माण का काम करा रही होगी। इस विषय पर गायत्री परिवार के साधकगण गंभीरता से विचार करें, ऐसा हमारा निवेदन है। हम सब युग ऋषि और उनके क्रांतिकारी विचारों से जुड़े हैं न कि डॉ० प्रणव से। हम सबकों अपनी शाखा व शक्तिपीठ को मजबूत बनाने में अपना समय-साधन लगाना चाहिए न कि वर्तमान शांतिकुंज को। क्षेत्रीय जनमानस गुरुदेव के विचारों और कार्यकर्ताओं से जुड़ा है न कि डॉ० प्रणव से जो कि अपने को जबरदस्ती थोप रहे हैं परिजनों पर।

जो बिना ठोकर खाये, मंजिल तक पहुँच जाते हैं,
उनके हाथ अनुभव से खाली रह जाते हैं।



सम्पादक महोदय,
अखण्ड ज्योति संस्थान

15 फरवरी 2012

## परिवार प्यार से बनता है : सहायक बने शासक नहीं

परिवार शब्द का जिक्र आते ही ऐसा चित्र साकार हो उठता है, जिसमें अनेक सदस्य व उनके साथ परस्पर विभिन्न रिश्तों से बना एक बड़ा परिकर। न केवल नाम के रिश्ते वरन् भावनात्मक सुदृढ़ संबंध, प्यार, सहकार की भावना से उसमें ऐसा प्रतीत हो कि यह एक संगम की त्रिवेणी हो। वह दिन मानव प्रगति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा होगा, जिस दिन परिवार संस्था का अभ्युदय हुआ होगा। पेट-प्रजनन की जरूरतें तो सभी पूरी कर लेते हैं परन्तु उस परिकर को परिवार नहीं कहा जा सकता।

पति-पत्नी, पिता-पुत्र, माँ-बेटी, भाई-बहन आदि जैसे सुमधुर संबंध ा तो मानव-परिवार में ही दिखाई पड़ सकते हैं। मनुष्येत्तर जीवों में कोई भी परिवार नहीं होता। वंदनीय माता जी व गुरुवर के परिवार में अहंकारियों का कोई स्थान नहीं है। सभी परिजन अच्छे हैं पर जब किसी का अहंकार टकराएगा तो परिवार संस्था का ह्रास होना शुरू हो जाएगा। स्वभाव में, आचरण में जहाँ भी कमियां हैं उन्हें खत्म कर सच्चाई के रास्ते को अपनाना होगा। अपनी योग्यताओं को बढ़ाना होगा। तप एवं समर्पण जितना प्रगाढ़ होगा गुरुदेव की उतनी ही बुलंद आवाज आप के मुंह से निकलेगी।

आज लोग निकम्मे हो रहे हैं। लोक प्रवाह पतन की दिशा में बह रहा है। यदि इनके साथ चलोगे, इनके प्रवाह में बहोगे, इनकी सलाह मानोगे तो उबर नहीं पाओगे। जब कोई प्रशंसा करे तो समझो कि किसी निंदनीय आध ार को पकड़े चल रहे हो, यदि कोई उपहास करे तो समझना तुमने विवेकशीलता का परिचय देना आरंभ कर दिया है। मछली जल की धारा को चीरकर उल्दी दिशा में चलने का साहस करती है। लोक के प्रवाह से उल्टे बहने पर ही आदर्श उपस्थित किए जा सकते हैं। माया और भ्रांति का

सबसे बड़ा लक्षण यह है कि मनुष्य लोगों का मुँह तके, उनसे प्रशंसा सुनने की आशा करे। क्या कोई किसी को अच्छी सलाह देता है? किसी के स्वजन शायद ही किसी को महान बनने का परामर्श देते हों। उनको तो बड़प्पन पसंद है, भले ही वह कितने ही गलत तरीकों से उपार्जित क्यों न किया गया हो। गुरुदेव का ही कथन है अनीति पूर्वक पाई सफलता की अपेक्षा नीति पूर्वक अर्जित असफलता को शिरोधार्य करो। उनके गुणगान न करो, जिन्होंने अनीति से सफलता प्राप्त की है। जिसे महान बनना हो उसे अपनी अंतरात्मा को, अपने भगवान को और आदर्शवादी परंपराओं के परामर्श को पर्याप्त माने। जहाँ तीनों मिल सकें, वहाँ फिर लोगों की सलाह को सर्वथा उपेक्षित करने का साहस करना होगा। वर्तमान परिस्थितियों में इससे कम में कोई सच्चा अध्यात्मवादी नहीं बन सकता। आत्मबल का अर्थ है- दिव्य प्रयोजनों के लिए बढ़ चलने के सभी अवरोधों को कुचल सकने वाला प्रचंड शौर्य और अटूट साहस। हमें आत्मबल संग्रह करना चाहिए और देवमानव की भूमिका संपादित करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

मानव शरीर भगवान का दिया हुआ सर्वोपरि उपहार है। इसकी गरिमा इतनी बड़ी है जितनी इस संसार में अन्य किसी सत्ता की नहीं। इसलिए उसे ईश्वर के समतुल्य माना जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। ईश्वर की झाँकी जीवसत्ता की संरचना और संभावनाओं में देखी जा सकती है। यदि उसकी ठीक तरह उपासना की जाए तो वे सभी वरदान उपलब्ध हो सकते हैं जो ईश्वर के अनुग्रह से किसी को कभी मिल सके हैं। यह प्रत्यक्ष देवता है। हमारे इतना समीप है कि मिलन से उत्पन्न असीम आनन्द की अनुभूति अहर्निशि की जा सके।

जीवन का उद्देश्य है, अपने अन्तराल में छिपे दिव्य का, अद्भुत का, सुन्दर का दर्शन कराना। उसे ईश्वर के साथ जोड़ देना जो इस ब्रह्माण्ड की आत्मा है, पूर्ण है और वह सब है, जिसमें मानवी कल्पना से कहीं अधिक सौंदर्य के सुख का सागर लहराता है। ईश्वर को हमें समझना है तो हमें जीवन को समझना होगा। ईश्वर को पाना है तो जीवन को प्राप्त करना होगा। जीवन रहित जिन्दगी से आगे बढ़ें, गहरे घुसें, अपने आपको



निर्मल करें और उस महान अवतरण को प्रतिबिम्बित करें जो प्रेम के रूप में आत्मसत्ता के अन्तराल में आलोक की एक किरण जैसा विद्यमान है। उसे प्रखरता, प्रचंडता से तपऊर्जा से स्वामी परिजन ही मशाल सा जाज्वल्यमान कर सकते हैं। नहीं तो वह दिया सा ही टिमटिमता रहेगा, स्वयं अपने को भी पूर्ण प्रकाश नहीं दे पायेगा। परिवार को बनाए रखना है तो प्यार को बांटना होगा। सहायक बने शासक नहीं।

संपर्क सूत्र-
रामआसरे, 47/7 बर्रा-5, कानपुर,
मोबाइल नं.-09369871959
ईमेल-shriramashram@rediffmail.com

रख हौसला
वो मंजर भी आयेगा,
प्यासे के पास
चलकर
समंदर भी आयेगा।
थक कर न बैठ
ये मंजिल के मुशाफिर
मंजिल भी मिलेगी,
और
मिलने का मजा भी आयेगा।

# समयदानी की सुविधा के प्रति गम्भीर नहीं है शांतिकुंज

युग ऋषि के तंत्र से जुड़े सभी दिव्यजन,

सादर प्रणाम,

जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती थी तो शांतिकुंज में युग शिल्पी सत्र माता-पिता के स्नेह प्रेम के साथ बड़ी ही निष्ठा से किया और उसके बाद से ही गुरूकार्यों को क्षेत्रों में पढ़ाई के साथ-साथ करती रही। सात साल पूर्व मेरी शादी भी समर्पित समयदानी भाई से हो गई। गुरुवर के साहित्यों को जितना पढ़कर समझ सकी उससे पूरी तरह से मन बना लिया था कि ऋषियों जैसा जीवन जीना है एवं एक आदर्श परिवार के रूप में अपने को सामज के सामने प्रस्तुत करना है। इसी कारण, अपनी तरफ से प्रमाणिकता की हर कसौटी पर खरा सिद्ध करते हुए हम दोनों काफी समय से शक्तिपीठों में समय दे रहें हैं।

2009/10 के बीच में डॉ० प्रणव पण्ड्या जी के द्वारा गायत्री विद्यापीठ शांतिकुंज के विस्तार के बारे में सुना, तो मन को तसल्ली मिली थी कि चलो मेरा भी एक मात्र बच्चा गायत्री विद्यापीठ में रहेगा और हम दोनों क्षेत्र में खुलकर काम करेंगे। प्रज्ञा अभियान पाक्षिक में भी उसी समय छपा कि - ''समर्पित परिव्राजक के बच्चे गायत्री विद्यापीठ में गुरुकुल परम्परा की तर्ज पर रहेंगे और उचित शिक्षा दी जाएगी।'' भवन के निर्माण के लिए सहयोग की बात भी कही गई, हम लोगों ने बढ़-चढ़कर अंशदान इकट्ठा कर भिजवाया। यहाँ भी लोगों के साथ धोखा हुआ। विशेषकर हमारे जैसे परिव्रज्या करने वालों के साथ। मैं एक नारी हूँ, अपने बच्चों के प्रति माँ के हृदय में क्या-क्या भावनायें रहती हैं वो तो एक माँ ही जानती है। शांतिकुंज के प्रतिनिधि बनकर हम यदि काम कर रहे हैं तो शांतिकुंज के व्यवस्था तंत्र को हमारी आवश्यकता पर ध्यान रखना ही होगा, नहीं तो लम्बे समय तक समयदान करना सम्भव नहीं है। यहाँ यह भी स्पष्ट हो रहा है कि डॉ० प्रणव पण्ड्या जी युग ऋषि द्वारा चलाई गई युग निर्माण योजना के प्रति गम्भीर नहीं हैं।



दूसरी बात जो मन में बहुत दिनों से थी कि 21 वीं सदी नारी सदी का उद्घोष करने वाले युग ऋषि सशरीर रहते हुए बहुत बड़े उद्देश्य के देवकन्या के रूप में बहुत सारी बहनों को रखा करते थें, जो पढ़ी-लिखी हुआ करती थी। पर आज भोली-भाली, गरीब, कम पढ़ी-लिखी कन्या को नौकरानी की तरह रखा जा रहा है जो गुरूजी के सिद्धान्तों के विपरीत है। अर्थात नारी को हर तरह से सक्षम, समर्थ बनाने की योजना वर्तमान शांतिकुंज तंत्र की नही है। या यूँ कहें कि अपना साम्राज्य स्थापित करने पर ज्यादा ध्यान है न कि संस्कृति की रक्षा का या अध्यात्म की रक्षा का। गायत्री परिवार के परिजन एक बहन की भावना को समझने का प्रयास करेंगे, ऐसी आशा है।

-आपकी बहन

---

# श्री राम आश्रम के संचालक पर किया गया हमला

(स्वतंत्र भारत, कानपुर, रविवार, 25 अगस्त 2013)

कानपुर (सं.)। श्रीराम आश्रम के संचालक राम आसरे पर एक दर्जन लोगों ने हमला किया और उनके आश्रम पर पथराव किया। घटना की सूचना पाकर मौके पर पुलिस पहुंची तो तब तक हमलावर भाग चुके थे।

बर्रा थाना क्षेत्र के शास्त्री चौक के पास राम आसरे का श्रीराम आश्रम के नाम से आश्रम है। वे गायत्री साधक हैं। राम आसरे काफी समय से गायत्री शक्तिपीठ के डॉ० प्रणव पण्डया के खिलाफ अभियान चला रहे थे। आज सुबह लखनऊ से शक्तिपीठ से जुड़े लोग उनके आश्रम में पहुँचे। अचानक लोगों ने उनसे मारपीट करने की कोशिश की तथा पथराव करना शुरू कर दिया। आनन फानन पुलिस को सूचना दी गयी। पुलिस जब तक पहुची लोग फरार हो चुके थे। राम आसरे ने दो लागों को नामजद कराते हुये तहरीर दो है। श्रीराम आश्रम के संचालक राम आसरे ने बताया कि उन्हें लखनऊ के अनिल श्रीवास्तव ने फोन नं० 9415465695 से काल की और कानपुर आने के लिए कहा। आज दिन में वे रामकेवल यादव समेत दर्जन भर लोगों के राज्य आये और हमला कर दिया। घटना की सूचना पुलिस को दी गयी है।

# न्यायालय जायेंगे श्रीराम आश्रम के संचालक

(स्वतंत्र भारत, कानपुर, मंगलवार, 17 सितम्बर 2013)

कानपुर (सं०)। श्रीराम आश्रम के संचालक गायत्री साधक रामआसरे ने आश्रम पर पथराव को गंभीरता से लिया है और घटना की शिकायत पुलिस से की है तथा इस मामले में अदालत का भी दरवाजा खटखटाने का एलान किया है। रामआसरे अपने गुरु भाई गायत्री परिवार मिशन के प्रमुख प्रणव पण्ड्या के खिलाफ अरसे से अभियान चला रहे हैं। उन्होंने डीएम, एसएसपी, राज्यपाल, मुख्यमंत्री समेत तमाम लोगों को अपनी शिकायत पहले की है और प्रणव पण्ड्या के खिलाफ एक किताब भी छपवाई थी। प्रधानमंत्री डा० मनमोहन सिंह को भेजे गये ज्ञापन में उन्होंने आरोप लगाया है कि श्रीराम शर्मा आचार्य की मृत्यु की रहस्यमयी थी। गुरु जी जब कोमा में थे तब प्रचारित किया गया कि वे सूक्ष्मीकरण साधना में हैं। उनके बेटे ओमप्रकाश को भी उनसे नहीं मिलने दिया गया। बेटियों को भी उनसे दूर रखा गया। इसी प्रकार माता जी के इलाज में भी छल प्रपंच किया गया। दूसरी महिला के नाम से उनका इलाज कई अस्पतालों में कराया गया और कहा गया कि वे हिमालय में साधना कर रही हैं। श्रीराम आश्रम के संचालक का आरोप है प्रणव पण्ड्या ने देव संस्कृति विद्यालय में तमाम गड़बड़ियां की हैं। इसमें राजस्थान की एक लड़की का अपहरण किया गया तथा डॉ० प्रणव पण्ड्या की अनुज बहू का भी अभी तक पता नहीं चल पाया है। इसके अलावा एक छात्रा को अपने मातहत की पत्नी बनाकर विदेश भी ले जाया गया। श्रीराम आश्रम के संचालक राम आसरे ने कई जिलों में प्रणव पण्ड्या के खिलाफ जन जागरण अभियान भी चलाया और इससे नाराज होकर प्रणव के समर्थकों ने उनके आश्रम पर हमला बोला तथा पथराव किया। उन्होंने घटना की शिकायत बर्रा थाने में की है तथा उच्चाधिकारियों को सूचना दी है। उन्होंने कहा कि इस मामले में अदालत के माध्यम से जांच करवाने के लिए याचिका डाल रहे हैं।



# एक और आसाराम यानि प्रणव पंड्या

भारत के संविधान ने अपने सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार अवश्य दिया है, किन्तु इसका यह मतलब कतई नहीं कि कोई भी व्यक्ति धर्म की आड़ में जुल्म, हत्या, बलात्कार, आर्थिक अपराध या अन्य गैर कानूनी कार्य करे। ऐसा करना अनैतिक तो है ही दण्डनीय अपराध भी है।

कुछ साहसी महिलाओं और जागरूक नागरिकों तथा मीडिया के सक्रिय सहयोग से ऐसे कई तथाकथित धर्माचार्यों तथा धर्म के मुखौटे वाले गुरूओं का भण्डाफोड़ हुआ है किन्तु सच्चाई यह है कि अभी बहुत बड़ी मात्रा में बगुला भगत छिपे हुये हैं तथा अपने कुकर्मों, अत्याचारों और शोषण द्वारा मानवता को शर्मशार कर रहे हैं।

इस कड़ी में एक और नाम है गायत्री परिवार के स्वघोषित प्रमुख डाक्टर प्रणव पंड्या का!

यह व्यक्ति समाज सुधार के आड़ में ढेरों कुकर्म कर रहा है। पैसा और अय्यासी इस आदमी की सबसे बड़ी कमजोरी है। इन दो कामों के लिये यह व्यक्ति कुछ भी कर सकता है तथा इस काम में बाधा डालने वाले को यह हर कीमत पर अपनी राह से हटा सकता है।

इस आदमी के कुकर्मों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

1. प्रणव पंड्या ने अपने छोटे भाई अरुण पंड्या की पत्नी संध्या पंड्या (श्रद्धा पंड्या) को घोर प्रताड़ित किया। स्वयं अरुण पंड्या इस पाप में सहभागी रहा है, संध्या पंड्या को अपने बच्चे तन्मय पंड्या तथा पति (शायद तब तक संध्या को अपने पति पर भरोसा बाकी था) मिलने नहीं दिया तथा अपने गुर्गों रामसहाय तथा बाजपेयी से घोर अपमानित करवाकर शांतिकुंज आश्रम (हरिद्वार में गायत्री परिवार का मुख्यालय) से बाहर निकलवा दिया।

इतना ही नहीं प्रणव पंड्या ने हरिद्वार से काफी दूर दुर्ग (मध्य प्रदेश) के कोर्ट से जबरन तलाक दिलवाने का कुचक्र रचा जिसमें अपने जज

पिता सत्यनारायण पंड्या के प्रभाव का पूरा दुरुपयोग किया। संध्या पंड्या ने दुर्ग की प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश श्रीमती अनुराधा खेर को एक पत्र 9.8.1996 को दिया था जिसकी प्रतिलिपि हम संलग्न कर रहे हैं।

मानव में देवत्व जगाने का पाखंड करने वाले प्रणव पंड्या ने उसे जबरन पागलखाने में भर्ती करवा दिया। आज संध्या पंड्या कहां है कोई नहीं जानता! इस देवी को अन्तिम बार 2004 के हरिद्वार अर्द्ध कुंभ जून जुलाई के महीने में ऋषिकेश के परमार्थ निकेतन आश्रम के आसपास फटेहाल तथा खाने के लिये तरसते देखा गया। शांतिकुंज आश्रम के लोग दबे छुपे शब्दों में यह स्वीकार करते हैं कि प्रणव पंड्या ने अपने गुर्गों द्वारा उसकी हत्या करवा दी।

संध्या पंड्या के पुत्र तन्मय पंड्या को यह कह दिया गया कि तुम्हारी माँ की हवन करते समय कपड़ों में आग लग जाने से मृत्यु हो गयी। यह बात जानने योग्य है कि तन्मय पंड्या की शादी प्रणव पंड्या के खास मातहत शांतिकुंज निवासी प्रमोद भटनागर की पुत्री प्रज्ञा से करवा दी गयी। तन्मय पंड्या से उसकी ननिहाल का पता चल सकता है तथा वहां से सारी सच्चाई का।

यह भी कहा जाता है कि अरुण पंड्या ने एक क्रिश्चियन लड़की से शादी कर ली।

परिवार निर्माण पर ताबड़ तोड़ भाषण देने वाली शैलबाला पंड्या (प्रणव पंड्या की पत्नी) से पूछा जाये कि तुम्हारी देवरानी कहां हैं? उसके पास कोई जवाब नहीं है। पूछने वाले को वह श्राप अवश्य दे सकती हैं। सावधान!

2. प्रणव पंड्या ने अपने आप को देवसंस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार का कुलाधिपति बना रखा है। वहां की छात्राओं का शारीरिक शोषण करने के लिये यह किसी भी स्तर तक चला जाता है। जो छात्रायें प्रणव पंडया के कुकर्मों में शामिल नहीं होती उन्हें बहुत प्रताड़ित किया जाता है। उन्हें बात-बात पर डांटा जाना, उनकी अटेन्डेन्स शार्ट कर दी जाती है, जानबूझ कर प्रैक्टिकल में तंग किया जाता है, परीक्षा में काफी कम मार्क्स दिये जाते हैं। अपने चमचे छात्र-छात्राओं द्वारा प्रताड़ित करवाया जाता है। एक सेमेस्टर



की परीक्षा नहीं दिलवाने का हथियार भी ये अजमाते रहते हैं इतना ही नहीं अपनी कुटिया में बुलाकर डराया जाता है तथा पुलिस से उठवा लेने की धमकी भी दी जाती है।

3. विश्वविद्यालय के लड़के और लड़कियों (छात्र छात्राओं) का आपस में बात करना भी दंडनीय अपराध माना जाता है। Dailybhaskar.com Apr 22,20123 ds vad esa 'Even speaking tp opposite sex can get you rusticated from university' के शीर्षक से छपे समाचार में सब कुछ विस्तार से बताया गया है।

4. प्रणव पंड्या के विरोध का एक ही अंजाम होता है हत्या या 'आत्महत्या'। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज आरम, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान (हरिद्वार) में हुई 'आत्महत्याओं' में से कितनो की FIR तक प्रणव पंड्या ने दर्ज नहीं होने दी है यह कोई भी आसानी से जान सकता है।

5. प्रणव पंड्या को ऐसा परम सिद्ध बताया जाता है जिसके आशीर्वाद मात्र से दुनियां के असाध्य रोग ठीक होने का दावा उसके अंध भक्त करते हैं। किन्तु इसका जवाब किसी के पास नहीं कि खुद प्रणव पंड्या को चेहरा इतना विकृत किस रोग की वजह से हुआ है।

6. गायत्री परिवार के संस्थापक श्रीराम शर्मा जी कहा ने कहा था-"हमारे द्वारा लिखित साहित्य का कोई कापीराइट नहीं है।" जाग रे युवा शक्ति जाग (पुस्तक) पृष्ठ 21 उन्हीं श्रीराम शर्माजी की सभी पुस्तकों को प्रणव पंड्या ने वाङमय के नाम से प्रकाशित करके उन सभी को कापीराइट करवा दिया है।

7. आश्रम के सभी बच्चे जहाँ भल्ला म्युनिसिपल इंटर कालेज हरिद्वार में पढ़ते थे वहीं चिन्मय पंड्या को BHELकालेज हरिद्वार में पढ़ाया गया। बाद में प्रणव पंड्या ने अपने लड़के चिन्मय पंड्या को अयोग्यता की वजह से Capitation Fees देकर Medical College में एडमिशन दिलवाया।

8. गायत्री परिवार के संस्थापक श्रीराम शर्मा हमेशा परिवारवाद-भाई भतीजावाद के खिलाफ थे। -जाग रे युवा शक्ति जाग (पुस्तक) पृष्ठ 23-24। किन्तु प्रणव पंड्या ने शांतिकुंज आश्रम हरिद्वार, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान हरिद्वार, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार आदि पर स्वयं कब्जा

कर रखा है। प्रणव पंड्या ने अपने अयोग्य लड़के चिन्मय पंड्या को देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में खपाने के लिये प्रति उपकुलपति (pro vice chancellor) पद का सृजन किया।

9. शांतिकुंज आश्रम के लगभग सभी पुराने लोग जानते हैं कि प्रणव पंडया के लड़के चिन्मय पंडया के जिस लड़की से अवैध सम्बन्ध हैं उससे एक लड़का हुआ था। वह लड़की देहरादून में रहती है उसे आज भी पैसा भेजा जाता है।

10. प्रणव पंड्या अपने ही लोगों से इतना आशंकित रहता है कि शांतिकुंज आश्रम हरिद्वार, ब्राह्मवर्चस शोध संस्थान हरिद्वार, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार आदि में आने वाली सभी डाक को सेंसर किया जाता है, यह बात वहां के सभी लोग जानते हैं।

11. 8 नवम्बर 2011 को गायत्री कुंभ के महायज्ञ में प्रणव पंड्या की अव्यवस्थाओं तथा VIP लोगों से मिलने की उसकी लिप्सा की वजह से 26 लोगों की जानें गयीं। अपनी राजनैतिक पहुंच की वजह से प्रणव पंडया का अभी तक बाल भी बांका नहीं हुआ।

यदि मीडिया एवं आप जैसे हिम्मत वाले लोग ईमानदार प्रयास करेंगे तो इस आदमी के अगणित पाप सामने आयेंगे।

प्रणव पांड्या के खिलाफ बोलने वाले की जान को खतरा बना रहता है अतः लोग सामने आते हुये भी डरते हैं। यदि TV पर इसके पाप सबके सामने आ जाते हैं तथा प्रणव पंड्या गिरफ्तार हो जाता है तो हमारी तरह अनेक लोग सामने आ जायेंगे।

धन्यवाद !

संलग्न-

1.संध्या पंड्या का दुर्ग की प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश श्रीमती अनुराधा खेर को पत्र 224 प्रश्नों का पेम्पलेट

कुछ भी कर गुजरने को, मौसम नहीं मन चाहिये।
साधन सभी जुट जायेंगे, बस संकल्पों का धन चाहिए।



डा०प्रणव पंड्या जी

सादर अभिवादन

आप का ध्यान गायत्री परिवार के 'देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा लगाया गया शिविर जो शुक्लागंज, उन्नाव में फरवरी 2009 में लगाया गया था की तरफ आकृष्ट करना चाहता हूँ।

इस शिविर में भाग लेने हेतु प्रति सदस्य रु० 3500/- शुल्क के रूप में लिया गया था। इस शिविर में 60 से 65 बच्चों ने भाग लिया था। इन बच्चों में धर्म के प्रति आस्था बढ़ाने हेतु योग साधन का कार्य रखा गया था। शिविर में सुश्री वन्दना एवं प्रदीप जी द्वारा योग की शिक्षा दी गयी थी।

सुश्री वंदना द्वारा नेति क्रिया का अभ्यास कराया गया इस अभ्यास के दौरान कु० सीमा अवस्थी, पुत्री-सुमन अवस्थी ने भी नेति क्रिया सीखी थी, परन्तु किन्हीं कारणों से शिविर में ही कु० सीमा दिनांक 15.2.2009 को नेति क्रिया के अभ्यास से दिनांक 16.2.2009 को प्रातः पैरालिसिस का अटैक हो गया और शरीर लकवाग्रस्त हो गया। इसकी सूचना शुक्लागंज शक्तिपीठ प्रमुख आर.सी. गुप्ता को दी गयी। श्री गुप्ता दो अन्य साधकों के साथ कु० सीमा के घर तो गये पर मात्र आश्वासन देकर चले गये कि बहनजी से पत्र लिखवाकर सहायता करेंगे, परन्तु न तो उसके बाद कोई मदद मिली, न पत्र लिखा गया, न ही हरिद्वार शक्तिपीठ या देवसंस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा कुछ सार्थक किया गया। इस घटना के बाद शिविर समाप्त कर दिया गया था।

प्रश्न है कि क्या मात्र धन उगाही धर्म भीरु जनता/साधकों को बहला फुसला कर अपना उल्लू सीधा करना ही आध्यात्म या धर्म का पालन कर रह गया है। क्या देव संस्कृति विश्वविद्यालय अपने उत्तरदायित्व से इस तरह मुकर सकता है? इस तरह की क्रिया कलाप से क्या सन्देश देना चाह रहे हैं ये मिशन?

# इस पुस्तक के पाठकों एवं अखिल विश्व गायत्री परिजनों से विनम्र निवेदन

परम पूज्य गुरुदेव ने इस देश को, दुनिया को एक सुन्दर, सौम्य आध्यात्मिक मिशन दिया, लोक सेवी कार्यकर्ता दिये और एक सपना दिया कि जमाना अवश्यमेव बदलेगा तथा इसके लिए उन्होंने 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' का सूत्र दिया। साधक और साधना की अतीव गहरी मनोभूमि वाला एक तपस्वी, एक अकेला व्यक्ति छोटे से गाँव से निकल पड़ा। सभी के दृष्टिकोण को बदल डालने की घोषणा करके चले उस महापुरुष के दृष्टिकोण को स्पष्टता और सभी को समान प्यार व स्नेह बाँटने की प्रवृत्ति के कारण लाखों लोग उनके पीछे चल पड़े और एक विशालकाय कारवां युग निर्माण योजना के बैनर तले खड़ा हो गया।

मानव जीवन धरकर प्रभु स्वयं धरती पर आते हैं तब भी उन्हें एक दिन जाना ही पड़ता है। परम पूज्य पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य जी को भी जाना ही था। वह स्थूल शरीर से गये, कई सपने लेकर, अपनों से, अपने दायित्वधारियों से बड़ी-बड़ी उम्मीदें करके, अनेकों आश्वासन लेकर। सारा गायत्री परिवार उनका ऋणी है, अनेकानेक लोगों ने उनका अपरिमित स्नेह पाकर जीवन को ऊँचा उठाया और तन-मन-धन लगाकर खूब काम किया। पूज्य गुरुदेव का मिशन आगे बढ़ा, इस बीच उनके नैष्ठिक कारवां के रहबगीरों में से कुछ ने मिशन के अगुवा लोगों में पूज्यवर की सौम्य व तपसी साधक की मनोवृत्ति का अभाव पाकर खुद ही गुरुसेवा की नई राहें तय कर लीं और कुछ को अपने अनुकूल नहीं पाकर नये नेतृत्व ने किनारे लगा दिया। इस श्रृंखला में वरिष्ठ-कनिष्ठ अनेकों लोगों की लम्बी फेहरिश्त बनाई जा सकती है।

जो भी लोग निकले या निकाले गये, उनके बारे में जो भी बातें मिशन के पाक्षिक में या अखण्ड ज्योति में छपती रहीं, उन्हें ब्रह्मवाक्य की तरह सारे के सारे गायत्री परिवार ने माना, स्वीकार कर लिया। स्वभावतः सभी पर कोई न कोई आरोप लगाये गये थे। जिन पर आरोप लगे थे, उनने अपनी नई दिशा तय की और वे कहीं न कहीं गुरुलाईन पर ही



देश-धर्म-संस्कृति की सेवा के कार्य में संलग्न रहे। साल 2011-12 में जब लम्बे समय तक लखनऊ के सक्रिय व जमींनी कार्यकर्ता रहे श्रीराम महेश मिश्र के साथ हरिद्वार बुलाकर वही सब हुआ और उन्हें देव संस्कृति विश्वविद्यालय छोड़ने का निर्णय स्वयं लेना पड़ा, तब परिजनों में एक बड़ा सवाल खड़ा हुआ। श्रद्धा, समर्पण एवं परिश्रम तथा भावना, श्रमशीलता एवं प्रमाणिकता की 'त्रिवेणी' बन चुके श्री मिश्र जी को, स्नेह की निर्बाध निर्झरिणी कहे जाने वाले और अपने आश्वासन के प्रति पूरी तरह ईमानदार हमारे गुरुदेव ने लेखन, वक्तृता और स्नेहादार वितरण की तीनों धारायें एक साथ देकर निहाल कर दिया था, सो देव संस्कृति विश्वविद्यालय से उनका जाना विद्यार्थियों से लेकर केन्द्र व क्षेत्र सभी के परिजनों को बहुत ज्यादा खला।

दीर्घकालीन सोच वाले तथा 'जीवन का एक नन्हा क्षण भी निरर्थक न जाने पाये' गुरुमंत्र को हर पल जीने वाले श्री मिश्र के द्वारा गुरुकार्य का मार्ग बदले जाने के समय तक चूँकि कम्प्यूटर युग चरम पर आ चुका था, सो उनके द्वारा अपने निज जीवन के पूरे सदुपयोग और अपने युग निर्माण मिशन को सफल बनाने के लिए मिशन प्रमुख को सौंपे गये सुझाव उनके गुरुभाईयों द्वारा माँगें जाने पर कुछ गायत्री परिजनों तक भी पहुँचे। श्री मिश्र भानैः पूरी तर संयत होकर नये सेवा अभियान में जुट गये और विरोध व छींटाकशी की नीति न अपनाकर सहयोग की, पुल बनाने की नीति अपनाई, ताकि विभिन्न लोगों व संस्थाओं के सलहकार व सहगमन से गुरुवर के युग निर्माण को जल्द से जल्द साकार किया जा सके।

श्री मिश्र जी से बिना कभी मिले ऊपर के यह शब्द हम इस कारण लिख पाये हैं क्योंकि उनके बारे में मैंने उत्तर प्रदेश और देश के कई गुरुभाइयों से सुन रखा था। फरवरी-2012 में हरिद्वार से ऋषिकेश जाते समय उनके द्वारा डॉ० प्रणव पण्ड्या को सौंपे दस्तावेजों में से कुछ पृष्ठ कम्प्यूटर कृपा से जब मुझे किसी अन्य परिजन से मिले, तो मैंने उन्हें मिशनहित में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'मिशन का चीरहरण एवं महाकाल की अन्तर्वेदना' में छापने को अपना सौभाग्य माना था। हालाँकि बाद में

उनका फोन नम्बर मिलने पर हमारे द्वारा बात करने पर वह मुझसे बहुत ज्यादा नाराज हुए थे और उन्होंने मुझे बताया था कि इस पुस्तक के प्रकाशन की जानकारी पाने के बाद वह इसके प्रकाशन के बारे में जानने की कोशिश करते रहे हैं, क्योंकि शान्तिकुञ्ज नेतृत्व एवं प्रज्ञा परिजन उस पुस्तक को उनकी पुस्तक मान रहे हैं। मेरा फोन पाकर मानों श्री मिश्र की तलाश पूरी हो गई थी और उन्होंने अपना सारा आक्रोश मुझ पर उतार दिया था। बाद में जब-जब भी उनसे बात हुई, वह मिशन की बातों को इस तरह सार्वजनिक नहीं करने का अनुरोध मुझसे करते रहे और मैं उनके सुझावों को पलायनवादी दृष्टिकोण कहता रहा तथा 'अनाचार बढ़ता है कब-सदाचार चुप रहता जब' जैसे गुरुमंत्रों का हवाला देकर श्री मिश्र को अनीति का समर्थन बताता रहा। मैं उनको यथार्थ भरे कटु शब्द भी बोलता रहा कि पूरा का पूरा शान्तिकुञ्ज ऐसे ही कथित भक्तों से भरा पड़ा है, क्या उनके बीच रहकर आने का असर आप पर भी हो गया है? बाद में इलाहाबाद कुम्भ से वापसी पर फरवरी-2013 के अन्तिम दिनों में कानपुर रेलवे स्टेशन पर उनसे 5 मिनट की मुलाकात पहली और अन्तिम बार हुई थी।

इस बीच अक्टूबर-2013 के मध्य में जब हम अपनी पुस्तक के द्वितीय अंक के सम्पादन को अन्तिम रूप दे रहे थे, तब लखनऊ महानगर के सभी क्षेत्रों में श्री राम महेश मिश्र पर पाँच आरोपों से युक्त एक पोस्टर रात के अंधेरे में चिपकाये जाने की सूचना मिली। पहली ही निगाह में मुझे लगा कि जैसा हमने उनके बारे में सुन रखा है, वह आरोप गलत ही होंगे और किन्हीं धूर्त लोगों के द्वारा कोई मकड़जाल उनके खिलाफ बुना गया होगा, अन्यथा लगभग दो वर्ष गुजर जाने पर ऐसे पोस्टर की याद क्यों आई? लखनऊ के परिजनों से पता चला कि श्री मिश्र ने उस पोस्टर पर अपने मन की भावनायें संस्था प्रमुख को और लखनऊ के गायत्री परिजनों को ई-मेल से भेजी हैं, लेकिन माँगने पर भी अपनी निष्ठा की दुहाई देकर उन्होंने वह पेपर मुझे नहीं दिये। मुझे पता चला है श्री राम मिश्र के चिन्तन व आचरण के बारे में परिचित लखनऊ के अनेकों परिजनों में उपरोक्त पोस्टर पर भारी गुस्सा है।



लखनऊ के एक परिजन श्री कर्मवीर त्रिपाठी ने तो बिना कोई देर लगाये गायत्री परिवार प्रमुख को इस पर 'कानूनी नोटिस' भेज दिया। श्री मिश्र के गृह जनपद हरदोई क एक समाजसेवी श्री सरोज कुमार दीक्षित न भी इस पर गहरा रोष व्यक्त करते हुए पोस्टर के तथ्यों पर, श्री मिश्र को लखनऊ से बुलाकर हरिद्वार में साथ नहीं रख पाने, तथा मेरी पुस्तक के पहले अंक में उठाई गई बातों पर डॉ० पण्ड्या से सफाई माँगी है और लिखित जवाब नहीं आने पर अपनी पार्टी की ओर से विरोध प्रदर्शन करने की चेतावनी दी है। इन दोनों ही व्यक्तियों ने पुस्तक के प्रकाशनकर्ता मुझ गायत्री परिजन को एक पत्र हाल में भेजा है और शान्तिकुञ्ज प्रमुख को भेजे नोटिस/पत्र की प्रतिलिपि मुझे इस आग्रह के साथ सौंपी है कि इन्हें मैं पुस्तक के द्वितीय अंक में विधिवत प्रकाशित करुँ। इसलिए हमने अपनी पुस्तक के इस अंक में श्री त्रिपाठी से प्राप्त हुए पोस्टर को तथा दोनों व्यक्तियों द्वारा मुझे भेजे उनके पत्र और गायत्री परिवार प्रमुख को प्रेषित नोटिस को अखिल विश्व गायत्री परिवार तथा जनसामान्य के संज्ञानार्थ प्रकाशित कर दिया है। मेरी इच्छा थी कि श्री राम महेश मिश्र द्वारा लिखे पत्र भी इस पुस्तक में छपते, क्योंकि मेरा मानना है कि यह मिशनहित में होता, लेकिन बहुत आग्रह करने पर भी उन्होंने वह पेपर मुझे देने से साफ मना कर दिया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कतिपय विद्यार्थियों से जानकारी मिली है कि पोस्टर घटना से आहत श्री मिश्र की बेटी ऋचा ने गायत्री परिवार के विश्वविद्यालय के भूतपूर्व विद्यार्थियों को पोस्टर की कॉपी अपने पत्र के साथ ई-मेल करके उनके समय में शिक्षारत लड़कियों व लड़कों के कमेंट इस पर माँगे, जिस पर अनेकों उच्च शिक्षित युवकों व युवतियों ने अपनी टिप्पणियाँ उस बिटिया को भेजीं। चूँकि देव संस्कृति विश्वविद्यालय के श्री मिश्र के कार्यकाल के बारे में छपे पोस्टर की बातें बच्चों को बड़ी नागवार लगीं, इसलिए स्वभावतः देव संस्कृति के इन बच्चों ने श्री मिश्र जी के खिलाफ हुए षड़यंत्र पर गहरा रोष व्यक्त किया है। विश्वविद्यालय के भूतपूर्व विद्यार्थियों के माध्यम से इस झूठे प्रचार की जानकारी भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों में सेवारत पूर्व छात्र-छात्राओं तक भी

पहुँची। सभी को लखनऊ से उठे इस प्रसंग पर गहरा आश्चर्य हुआ है। ऋचा मिश्रा ने अवगत कराया है कि उनके पिता को जानने वाले विभिन्न प्रदेशों के गायत्री परिजन भी बच्चों के माध्यम से जानकारी पाने के बाद इस मामले पर अपनी रोषपूर्ण अभिव्यक्ति कर रहे हैं।

युवा पीढ़ी के इन युग निर्माताओं ने लिखा है कि पूरे देव संस्कृति विश्वविद्यालय में एक 'आदर्श-पुरुष' माने जाने वाले श्री राम महेश मिश्र पर इतने समय बाद की गई घिनौनी टिप्पणियों को पढ़कर उनकी आँखें गीली हुई हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों व युवतियों ने अपने पत्र की पंक्तियों में श्री मिश्र के साथ गुजारे 5-6 वर्षों के बारे में जो मन्तव्य लिखे हैं, उन्हें पढ़कर मुझे लगा है कि बीसियों साल तक उनके साथ रहे लखनऊ के गायत्री परिजन भी इस घटना की जरूर निन्दा करेंगे और ऐसे कुत्सिग मानसिकता वाले कथित गायत्री परिजनों को तलाशेंगे, उन्हें सख्ती से आगाह करेंगे एवं शान्तिकुञ्ज को भी इसकी सूचना देंगे। यदि ऐसा नहीं होता है तो हम यही कहेंगे कि प्रभु हमारे गुरुभाइयों को सच्चाई का साथ देने की भक्ति प्रदान करें, क्योंकि स्पष्ट है कि श्री राम मिश्र के खिलाफ इस षड़यंत्र में कुछ ही लोग शामिल होंगे, सारे गायत्री परिवार ने परामर्श करके तो इसे बनाया नहीं होगा। जो मिशन सच को मानने व कहने के लिए खड़ा किया गया हो, उसके साधक यदि गलत होता देखकर चुप रहते हैं तो उनकी चुप्पी मिशन के मूल ध्येय को ही धूल धूसरित कर देगी। इसलिए, भूतपूर्व विद्यार्थियों की अभिव्यक्तियों को उद्धृत करते हुए सुश्री ऋचा मिश्रा द्वारा अपने मन की भेजी गई भावनाओं को भी, पूज्य गुरुदेव की संतुष्टि के लिए इस पुस्तक में जगह दी गई है।

गुरुवर से हम सबकी प्रार्थना है कि उनके युग निर्माण मिशन में आ रहे इस पतन-पराभव को जल्द रोकें और इसे वह दिशा दें जैसा युग निर्माण के लिए विश्व उद्धार के लिए अपेक्षित है। पूज्यवर, यही वह समय है जब आप 'युग देवता, युग परिवर्तक और युग ऋषि' का अपना विराट स्वरूप अपने गायत्री परिवार को, अपने निष्ठावान शिष्यों को, अपनी आध्यात्मिक संतानों को और इस पूरी दुनिया को दिखा दें। आपके कहलाने वाले, आपके वरिष्ठ बच्चों के कृत्यों से युग निर्माण के भविष्य की आशा,



आपके ही युवा कार्यकर्ता यदि रो पड़े हों तो समझना चाहिए कि आपके दैवीय मिशन पर आसुरी भक्तियों की काली छाया का साया मंडराने लगा है। पूज्यवर, यही वह सटीक समय है, जब आपको अपना महाकाल वाला स्वरूप दिखाना है और मिशन पर छा गये काले कुहासे को नष्ट करके, दुप्रवृत्तियों का समूल नाश कर, सत्प्रवृत्तियों की एक नये युग की स्थापना कर देनी है।

हमारा हार्दिक अनुरोध है कि प्रज्ञा परिजन पुस्तक के इन पृष्ठों को अवश्य पढ़ें और लोगों को इसकी जानकारी दें, ताकि यह मिशन सत्यता के धरातल पर मजबूती से खड़ा हो सके और सभी तरफ सत्यता का, गायत्री और यज्ञ का यथार्थ प्रकाश फैला सके। श्रीराम महेश मिश्र जी के विरुद्ध बुने गये इस सम्पूर्ण दुर्भाग्यपूर्ण प्रकरण पर अपनी इस सम्पादकीय टिप्पणी के अन्त में मैं एक सवाल शान्तिकुञ्ज के वर्तमान नेतृत्व तथा गायत्री परिवार लखनऊ के ऐसे वरिष्ठ परिजनों से अवश्य करना चाहूँगा कि हम सबके परम पूज्य गुरुदेव के ईश्वरीय युग निर्माण मिशन को तुम और कितना नीचे गिराओगे? काश! आप इस धरती से जाने के पहले ऐसे कुछ मापदण्ड स्थापित कर जाते, जिन पर भावी पीढ़ियों को गर्व होता! क्या अपने मस्तष्क पर 'झुट्ठे' और 'जालसाज' का तमगा लगाकर जाओगे और क्या तुम्हारी अन्तरात्मा शान्ति का अनुभव कर सकेगी? अपने गुरुवर से भी आज विवश होकर बड़े द्रवित मन से प्रश्न कर रहा हूँ कि क्या आपको अपने बेटों की गिरावट पर अब कत्तई चिन्ता नहीं होती? गायत्री परिवार इन्दिरानगर और लखनऊ की अन्य शाखाओं के प्रज्ञा परिजनों से मेरी एक जिज्ञासा यह भी है कि दशकों तक आपके साथ सेवारत रहे श्री राम मिश्र जी में ऐसी कमियाँ क्या आपने लखनऊ में भी पाई थी? मेरी प्रार्थना है कि आप हमें लिखें, हम आपकी टीका-टिप्पणियों को इस पुस्तक के तीसरे अंक में अवश्य स्थान देना चाहेंगे।

हम श्री राम महेश मिश्र जी की लखनऊ की सरकारी सेवाओं के स्थानों की भी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। उनके सेवायोजकों से भी हम उनके पिछले इतिहास तथा चरित्र व आर्थिक ईमानदारी के बारे में विवरण एकत्र करेंगे। हमारा प्रयास होगा कि श्री मिश्र के अधिकारियों द्वारा बीस से

अधिक वर्षों में मूल्यांकन स्वरूप उन पर लिखीं गई वार्षिक गोपनीय प्रविष्टियों की कॉपी भी प्राप्त कर सकें, ताकि उनके बारे में शासन व प्रशासन के उच्चाधिकारियों के अभिमत भी हम आगामी पुस्तक में प्रकाशित कर सकें। श्री मिश्र के लखनऊ निवास स्थान की क्षेत्रीय आवासीय समिति तथा नागरिक संगठनों और उनके कार्यकाल में लखनऊ गायत्री परिवार के साथ मिलकर काम करने वाली प्रदेश की विभिन्न लोकसेवी संस्थाओं के पदाधिकारियों से उनकी सामान्य ख्याति के बारे में लिखित जानकारी ली जायेगी। साथ ही ऋषिकेश की उनकी वर्तमान सेवास्थली पर उनके द्वारा दी गई सेवाओं की गुणवत्ता एवं उनके चिन्तन, चरित्र, आचरण व व्यवहार की जानकारी भी इकट्ठी की जाएगी। ऐसा करके पूरा सच सामने लाया जाएगा तथा प्राप्त सामग्री को संकलित कर पुस्तक के तीसरे खण्ड में छापा जाएगा, ताकि सारी सच्चाई दुनिया के सामने लाई जा सके। फिर भी यदि इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में लखनऊ गायत्री परिवार की बातें सच पाई जाती हैं तो मैं गायत्री परिवार को पूरा सहयोग प्रदान करुँगा, बशर्ते वह व्यक्ति अपना नाम उजागर करें।

इन पंक्तियों के माध्यम से मेरा देश भर के अन्य गायत्री परिजनों से आग्रह है कि श्री मिश्र की तरह यदि किसी अन्य कार्यकर्ता के विरुद्ध षड्यंत्र रचकर किसी के द्वारा उन्हें परेशान किया गया हो तो हमें सूचित कीजिए। 21वीं सदी में अब अपने मिशन से ऐसी प्रवृत्तियों का खात्मा होना ही चाहिए और सात्विकता बढ़नी ही चाहिए।

-सम्पादक व प्रकाशक

महान बनने की चाहत
तो हर एक में है,
पर पहले
इन्सान बनना
अक्सर
लोग भूल जाते हैं।